उन्नीसवां
अंक–2014

नियोजन संदेश

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन
शहरी विकास मंत्रालय

हिंदी में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए संगठन को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा उत्तरी क्षेत्र–I के लिए वर्ष 2013 के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। पंजाब के राज्यपाल श्री शिवराज पाटिल से पुरस्कार ग्रहण करते श्री के.के. जोद्दार, अपर मुख्य नियोजक

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप–समिति द्वारा 27.01.2014 को किए गए नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन, भारत सरकार, शहरी विकास मंत्रालय के राजभाषा संबंधी निरीक्षण की कुछ झलकियां

सत्यमेव जयते

नियोजन संदेश

2014

उन्नीसवां अंक

प्रधान संरक्षक

जय बी. क्षीरसागर

मुख्य नियोजक

परामर्शदाता

के.के. जोद्दार

अपर मुख्य नियोजक

संपादक

धनसिंह वर्मा

सहायक निदेशक (राजभाषा)

सहायक संपादक

ललित मेहता

हिन्दी अनुवादक

नेत्रपाल

आशुलिपिक–ग्रेड–II

संपादन सहयोग

मोख्तार राय

एमटीएस

'नियोजन संदेश' पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। उनके लिए संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नियोजन संदेश के अगले अंक के लिए नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से स्वरचित रचनाएं आमंत्रित हैं। रचना के साथ अपना पासपोर्ट आकार का फोटो अवश्य भेजें। फोटो के पीछे अपना नाम जरूर लिखें।

सम्पर्क सूत्रः	CONTACT:
राजभाषा अनुभाग	RAJBHASHA SECTION
नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन	Town & Country Planning Organisation
भारत सरकार	Government of India
शहरी विकास मंत्रालय	Ministry of Urban Development
ई–ब्लॉक, विकास भवन,	E-Block, Vikas Bhawan,
इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली–110002	Indraprastha Estate, New Delhi-110002
फोन : 011–23370898	Telephone : 011-23370898
फैक्सः 011–23379197	Fax : 011-23379197
ई–मेलः adoltcpo@gmail.com	E-mail : adoltcpo@gmail.com

मुद्रक

डॉल्फिन प्रिंटो–ग्राफिक्स

4ई/7, पहली मंजिल, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान विस्तार, नई दिल्ली–110055

फोन : 011–23593541–42 ई–मेलः dolphinprinto2011@gmail.com

नीरज मंडलोई
संयुक्त सचिव (श.वि.)

भारत सरकार
शहरी विकास मंत्रालय
निर्माण भवन, नई दिल्ली

संदेश

राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रभाषा किसी भी स्वतंत्र देश की विशिष्ट पहचान हैं। हिंदी हमारे राष्ट्र की अस्मिता और गौरव का प्रतीक है क्योंकि इसे भारत के संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है। हिंदी को हम वास्तविक सम्मान तभी दे सकते हैं जब हम अपने जीवन के हर क्षेत्र में तो इसे व्यवहार की भाषा बनाएं ही साथ ही अपना सरकारी कामकाज भी अधिक से अधिक हिंदी में ही करें।

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन एक तकनीकी संगठन है। इसके उपरांत भी अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों के माध्यम से संगठन में तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्य को हिंदी में करने का प्रयास करना इस बात का घोतक है कि संगठन में सच्चे अर्थ में सरकार की राजभाषा नीति को लागू किया जा रहा है।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन अपनी गृह पत्रिका ''नियोजन संदेश'' का उन्नीसवां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। यह गतिविधि संगठन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनकी लेखन प्रतिभा को निखारने का अवसर तो प्रदान करती ही है साथ ही उन्हें अपना सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए भी प्रेरित करती है।

वर्तमान में शहरों में नियोजन के महत्व को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। मंत्रालय की नई योजनाओं और कार्यक्रमों में भी नियोजित विकास एक अहम भूमिका निभाने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि संगठन की भूमिका में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन के इस दौर में मेरे सभी साथी अधिकारी व कर्मचारी अपना भरपूर योगदान देकर देश में नियोजित शहरी विकास की गति को नए आयाम देंगे।

मुझे विश्वास है कि ''नियोजन संदेश'' का यह अंक भी पिछले अंक की भांति रोचक एवं ज्ञानवर्धक होगा और सभी पाठकों को पसंद आएगा। नियोजन संदेश के प्रकाशन से जुड़े सभी संबंधितों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएं।

नीरज

(नीरज मंडलोई)

जय बी. क्षीरसागर
मुख्य नियोजक

भारत सरकार
नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन
शहरी विकास मंत्रालय
ई ब्लॉक, विकास भवन,
आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली

संदेश

भारत में विविधताओं में एकता का भाव विद्यमान है। यहां हर 10 मील पर लोगों के रहन–सहन, खान–पान व बोली बदल जाती है लेकिन इन सबके बावजूद राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान लोगों ने इन सभी विविधताओं को भूलकर देश की स्वतंत्रता में बढ़–चढ़कर भाग लिया।

राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रभाषा किसी भी स्वतंत्र देश की विशिष्ट पहचान होती है। भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। अतः यह हमारा सांविधिक दायित्व है कि हम कार्यालय के दैनिक कामों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें। एक तकनीकी संगठन होने के बावजूद हमने सरकार की राजभाषा नीति को बखूबी कार्यान्वित किया है। इसके फलस्वरूप ही संगठन को हिंदी में उल्लेखनीय काम करने के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2013 के लिए द्वितीय पुरस्कार व राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा उत्तर क्षेत्र–1 (दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, जम्मू एवं कश्मीर) में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में से वर्ष 2013 का तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया जो इस बात का परिचायक है कि संगठन के सभी अधिकारी व कर्मचारी अपना काम हिंदी में कर रहे हैं।

संगठन की हिंदी गृह–पत्रिका 'नियोजन संदेश' का 19वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। मुझे खुशी है कि संगठन की हिंदी गृह पत्रिका 'नियोजन संदेश' सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को उनके अंदर विद्यमान लेखन प्रतिभा को सामने लाने का अवसर प्रदान करती है। पत्रिका में प्रकाशित तकनीकी व अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर लिखे लेख इस बात का द्योतक है कि 'नियोजन संदेश' पत्रिका ने संगठन के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को निखारने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी सभी को पसंद आएगा। 'नियोजन संदेश' पत्रिका के संपादन कार्य से जुड़े सभी कार्मिकों को मेरी बधाई और शुभकामनाएं।

(जय बी. क्षीरसागर)

संपादकीय

राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रभाषा किसी भी स्वतंत्र देश की विशिष्ट पहचान होती है। देश के लाखों देशवासियों ने देश की आजादी की आहुति में अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। विभिन्न भाषा–भाषी होने के बावजूद उन्होंने अपनी संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को ही चुना। देश की आजादी के पश्चात् भारतीय संविधान में हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा दिया गया लेकिन अभी तक हिंदी को उसका उचित स्थान नहीं मिल पाया है।

कुछ लोगों की इस धारणा से देश को बहुत नुकसान पहुंचा है कि अंग्रेजी के बिना यह देश उन्नति नहीं कर सकता। अंग्रेजी को भाषा के रूप में सीखना कोई बुराई नहीं है लेकिन उसे शिक्षा का माध्यम बनाने, अंग्रेजी माध्यम के लाखों स्कूल खोले जाने, उनमें हिंदी बोलने पर प्रतिबंध लगाने और इस संबंध में दूरदृष्टि के अभाव के कारण इस देश की आजादी के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले देशभक्तों का बलिदान भी व्यर्थ हो गया है क्योंकि भारत विश्व में ऐसा अकेला देश है जहां आजादी के बाद भी उसकी अपनी राजभाषा हिंदी के बजाय अंग्रेजी में ही अधिकांश सरकारी काम होता है। इंसान को अधिक से अधिक भाषाएं सीखनी चाहिएं लेकिन उसे अपनी मातृभाषा और राजभाषा में बात करने पर गर्व होना चाहिए क्योंकि भाषा केवल भाषा नहीं होती अपितु किसी संस्कृति की वाहक होती है।

इस्राइल का उदाहरण उन लोगों के मुंह पर एक तमाचा है जो यह मानते हैं कि अंग्रेजी के बिना विकास संभव नहीं है। छोटा सा देश होते हुए भी इस्राइल आज भारत जैसे विशाल देश को हर क्षेत्र में सहयोग दे रहा है चाहे यह रक्षा उपकरण हों या कृषि क्षेत्र। इस्राइल की राजभाषा हिब्रू है जो एक समय मृतप्राय हो गई थी, लेकिन वहां की सरकार के अथक प्रयासों व लोगों की दिली ख्वाहिश से आज हिब्रू भाषा के माध्यम से सभी क्षेत्रों में अध्यापन व अनुसंधान किए जा रहे हैं। हिंदी एक समृद्ध व वैज्ञानिक भाषा है। इसे विदेशी विद्वानों ने भी माना है।

आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा विदेशों में हिंदी में वार्तालाप करने से हिंदी भाषा को कुछ सम्मान अवश्य हासिल हुआ है लेकिन इस दिशा में काफी प्रयास करने की आवश्यकता है।

हम सभी भारतीयों का दायित्व है कि हिंदी को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए अपना योगदान दें और हिंदी में वार्तालाप व काम करने में स्वयं को गौरवान्वित महसूस करें।

(धनसिंह वर्मा)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

ज़िंदगी के हर मोड़ पर काम आने वाली 15 अद्‌भुत बातें

1. गुण–न हो तो रूप व्यर्थ है।
2. विनम्रता–न हो तो विद्या व्यर्थ है।
3. उपयोग–न आए तो धन व्यर्थ है।
4. साहस–न हो तो हथियार व्यर्थ है।
5. भूख–न हो तो भोजन व्यर्थ है।
6. होश–न हो तो जोश व्यर्थ है।
7. परोपकार–न करने वालों का जीवन व्यर्थ है।
8. गुस्सा–अक्ल को खा जाता है।
9. अहंकार–मन को खा जाता है।
10. चिंता–आयु को खा जाती है।
11. रिश्वत–इंसाफ को खा जाती है।
12. लालच–ईमान को खा जाता है।
13. दान–करने से दरिद्रता का अंत हो जाता है।
14. सुंदरता–बगैर लज्जा के सुन्दरता व्यर्थ है।
15. सूरत–आदमी की कीमत उसकी सूरत से नहीं बल्कि सीरत यानी गुणों से लगानी चाहिए।

'लब्ज़ ही ऐसी चीज़ है
जिसकी वजह से इंसान
या तो दिल में उतर जाता है
या दिल से उतर जाता है'

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	सरस्वती वंदना		1
2.	टी.सी.पी.ओ. के शानदार 52 वर्ष		2–3
3.	स्मार्ट शहरः 'स्थायी और स्मार्ट शहरों को बढ़ावा देने की स्थानिक योजना'	जय बी. क्षीरसागर	4–10
4.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2014–15 के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य	राजभाषा अनुभाग	11
5.	राजभाषा नियम, 1976–प्रमुख नियम		12
6.	राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन		13
7.	राजभाषा संबंधी कुछ महत्वपूर्ण जानकारी		14
8.	सरकारी कामकाज (टिप्पण/प्रारूपण) मूल रूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना		15
9.	किसको दूं मैं दोष (कविता)	धनसिंह वर्मा	16
10.	भारत तुम कहां हो	रानी वधवा	17–18
11.	ओडिशा में जगन्नाथपुरी की रथयात्रा	डॉ. अशोक कुमार बंदूनी	19–21
12.	आनन्द रस	राम प्रकाश	22
13.	हरित किफ़ायती आवास	डॉ. अचला मेदिरत्ता	23–25
14.	बाल श्रम	विमल कुमार	26–27
15.	भ्रष्टाचार की रोकथाम (कविता)	विपिन कुमार	27
16.	प्रदूषण	उदयवीर सिंह प्रजापति	28
17.	रचनात्मकता और शहरीकरण	जैस्मिन बिम्रा मल्लिक	29–31
18.	सही आंकलन	ललित मेहता	32–33
19.	झूठा मोह (कविता)	रणसिंह सैनी	34
20.	जलः सबसे अनमोल सीमित संसाधन	आभा अग्रवाल	35–38
21.	पृथ्वी रहेगी तो जीवन बचेगा	सुबोध कुमार श्रीवास्तव	39–40
22.	जापान की इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली से सीख एवं सिफारिशें	उदित रत्न	41–46
23.	भ्रष्टाचार (कविता)	रेजीना टोप्पो	46
24.	मॉडर्न युवती (कविता)	लुकास रतन बरला	47

25.	स्मार्ट शहर	धर्मेंद्र शर्मा	48–49
26.	खुशियों की खोज (कविता)	मैत्रयी बैनर्जी	50–51
27.	प्यारी बेटी (कविता)	शशिरंजन कुमार सिन्हा	51
28.	संगीत का महत्व और प्रभाव	नेत्रपाल	52–53
29.	स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को सम्मान	तनवीर अहमद खान	54
30.	जिला आपदा प्रबंधन योजना	राम स्वरूप मीना	55–56
31.	विकास एवं मानव कल्याण	अनिल कांत मिश्रा	57–58
32.	इंसानियत का मूल्य (कविता)	कुमारी ज्योत्सना रानी	59
33.	तनावों से घिरा महानगरों का जीवन	तरसिसियुस टेटे	60–61
34.	रिटायरमेंट को बनाएं खुशहाल	अमीर सिंह	62–63
35.	अहसास (कविता)	अनिल कुमार वर्मा	63
36.	हिंदी सम्मेलन एवं भारत के स्विट्जरलैंड कौसानी का भ्रमण	राम दयाल मीना	64–65
37.	कड़वा सच (कविता)	जसबीर सिंह	65
38.	ग्लोबल वार्मिंग	आशा चन्द्रा	66–68
39.	असली खजाना (कविता)	नीता अरोड़ा	69
40.	अनियोजित शहरीकरण के खतरे	अजय कुमार	70
41.	दिल्ली मेट्रो–दिल्ली की धड़कन	प्राण कुमार	71–72
42.	माँ की ममता	हरविंदर कौर सेठी	73–74
43.	भ्रष्टाचार का रावण (कविता)	हरपाल सिंह	74
44.	जीवन जीने का ढंग	शशिकान्ता पुरी	75–76
45.	जाने कहां गए वो दिन (कविता)	शान्ता थॉमस	76
46.	मुस्कुराइए और तनाव मुक्त रहिए	नरेंद्र पाल	77–78
47.	भारत–भूमि एवं कृषि का संबंध	रमा देवी	79–80
48.	ज्ञान का प्रकाश	उदित रत्न	81
49.	प्यारा भारत देश हमारा (कविता)	डी.एम. नंदनवार	82
50.	आपका पत्र मिला		83–84

सरस्वती वंदना

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
अज्ञानता से हमें तार दे माँ ।
तू स्वर की देवी ये संगीत तुझसे
हर स्वर तेरा हर गीत तेरा
हम हैं अकेले हम हैं अधूरे
एक तू ही है पूर्ण, हे शारदे माँ ।
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
अज्ञानता से हमें तार दे माँ।

मुनियों ने समझी मुनियों ने जानी
वेदों की भाषा वेदों की वाणी।
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें
विद्या का हमको अधिकार दे माँ।
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
अज्ञानता से हमें तार दे माँ ।

तू श्वेतवर्णी कमल पर विराजे,
हाथों में वीणा मुकुट सिर पर साजे
मिटा दे तू हमारे अंधकार, हे माँ
उजालों का हमको संसार दे माँ ।
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
अज्ञानता से हमें तार दे माँ ।

टी.सी.पी.ओ. के शानदार 52 वर्ष (1962–2014) – एक परिचय

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन (टीसीपीओ) की स्थापना 1962 में नगर नियोजक संगठन (टीपीओ) तथा केंद्रीय क्षेत्रीय और शहरी नियोजन संगठन (सीआरयूपीओ) को मिलाकर की गई थी। नगर नियोजन संगठन की स्थापना पण्डित जवाहरलाल नेहरू द्वारा 1955 में दिल्ली का प्रथम मास्टर प्लान तैयार करने के लिए की गई थी जबकि केंद्रीय क्षेत्रीय एवं शहरी नियोजन संगठन को दिल्ली क्षेत्र की योजना तैयार करने और स्टील नगरों, नदी घाटी परियोजनाओं इत्यादि पर परामर्श देने के लिए की गई थी। टीसीपीओ 1962 से शहरी विकास मंत्रालय का एक तकनीकी अंग है जो शहरी एवं क्षेत्रीय नियोजन और विकास के क्षेत्र में शीर्ष तकनीकी सलाहकार एवं परामर्शदात्री संगठन के रूप में कार्य कर रहा है।

टीसीपीओ देश में शहरी एवं क्षेत्रीय नियोजन और विकास की नीतियों, कार्यक्रमों और कार्यनीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और विभिन्न राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में टीसीपीओ द्वारा तैयार किए गए मॉडल नियमों के आधार पर नगर एवं ग्राम नियोजन विभागों की स्थापना की गई है और राज्य नगर एवं ग्राम नियोजन अधिनियम तैयार किए गए हैं। यह संगठन देश में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, उपक्षेत्रीय और स्थानीय स्तरों पर स्थानिक नियोजन और विकास से संबंधित केंद्रीय सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों को पेश करने एवं बढ़ावा देने में मुख्य भूमिका निभाता है और इस क्षेत्र में एक विशेषज्ञ एजेंसी के रूप में उभरा है। यह संगठन शहरी विकास, शहरी डिजाइन, स्थानिक नियोजन, पर्यटन विकास परियोजनाओं इत्यादि पर परामर्श देने का कार्य करता है और शहरी नियोजन, जीआईएस प्रयोग इत्यादि के क्षेत्रों में सेवारत नियोजकों एवं शहरी प्रबंधकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संचालन के अलावा शहरी विकास मंत्रालय की विशिष्ट योजना/स्कीमों को भी मॉनीटर करता है। नियोजन के साथ–साथ संगठन में सरकार की राजभाषा नीति को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए भी हम कृतसंकल्प हैं। **वर्ष 2006 से श्री जय बी. क्षीरसागर संगठन के विभागाध्यक्ष हैं। वर्तमान में श्री नीरज मंडलोई, आई.ए.एस. संयुक्त सचिव (शहरी विकास) संगठन के पदेन अध्यक्ष हैं। हिंदी में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए संगठन को वर्ष 2013 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (मध्य), नई दिल्ली द्वारा द्वितीय पुरस्कार एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा उत्तर क्षेत्र–1 (दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश और जम्मू एवं कश्मीर) के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि हम संगठन में सरकार की राजभाषा नीति को प्रभावी रूप से लागू करने में सफल रहे हैं।**

संगठन देश में उत्तरदायी शहरी और क्षेत्रीय योजना और विकास को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। देश में एकीकृत और स्थाई शहरी और क्षेत्रीय योजना बनाने तथा विकास को प्रोत्साहन देने हेतु नवीन विचारों और रणनीतियों को सुविधाजनक बनाना, मजबूत बनाना और उपलब्ध कराना ही संगठन का मिशन है।

01.04.2013 से 31.03.2014 की अवधि के दौरान इस संगठन में निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की नियुक्ति हुईः–

क्र.सं.	नाम	पदनाम	नियुक्ति की तारीख
1	सुश्री ज्योत्सना रानी	आशुलिपिक, ग्रेड– ।।।	01.05.2013
2	सुश्री पिंकी	आशुलिपिक, ग्रेड– ।।।	03.05.2013
3	सुश्री कंचन चौधरी	आशुलिपिक, ग्रेड– ।।।	03.05.2013
4	श्री धर्मेन्द्र शर्मा	अन्वेषक	20.06.2013
5	श्री शशिरंजन कुमार सिन्हा	अ.श्रे.लि.	29.08.2013
6	श्री अजय कुमार	अनुसंधान सहायक	03.01.2014
7	श्रीमती मैत्रयी बैनर्जी	अनुसंधान सहायक	28.02.2014

01.04.2013 से 31.03.2014 की अवधि के दौरान इस संगठन के निम्नलिखित कर्मचारी सेवानिवृत्त हुएः–

क्र.सं.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तारीख
1	श्री ओम प्रकाश	बहुकार्य कर्मचारिवृंद (एमटीएस)	31.07.2013
2	श्री आत्मा राम	बहुकार्य कर्मचारिवृंद (एमटीएस)	31.08.2013
3	श्रीमती चन्द्रकांता	योजना सहायक	28.02.2014

01.04.2013 से 31.03.2014 की अवधि के दौरान इस संगठन के निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अन्य कार्यालयों में उच्च पद पर कार्यभार संभालने हेतु त्याग पत्र दियाः–

क्र.सं.	नाम	पदनाम	सेवाकाल की अंतिम तारीख
1	श्री नरेश कुमार बंसल	अ.श्रे.लि.	09.01.2014
2	श्री सूरज कुमार सिन्हा	अ.श्रे.लि.	06.02.2014
3	श्री पीयूष सिंह	सहायक नगर एवं ग्राम नियोजक	03.03.2014

जीवन–सूत्र

खिल सको तो फूल की तरह खिलो,
जल सको तो दीप की तरह जलो,
ढल सको तो धातु की तरह ढलो,
मिल सको तो दूध में पानी की तरह मिलो।

स्मार्ट शहर : "स्थायी और स्मार्ट शहरों को बढ़ावा देने की स्थानिक योजना"

जय बी. क्षीरसागर

भारत में बड़े पैमाने पर हुए शहरीकरण के कारण शहरी बुनियादी ढांचे पर बहुत दबाव पड़ा है जिसमें जलापूर्ति, सड़क और परिवहन, जल और स्वच्छता, जल निकासी और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन आदि शामिल हैं। यदि आर्थिक विकास की गति को बनाए रखना है तो शहरीकरण के कारण बड़े पैमाने पर आने वाली चुनौतियों पर प्राथमिकता के आधार पर ध्यान देना ही होगा। देश में शहरों की क्षमता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि उनकी योजना कितनी अच्छी तरह बनाई गई है, उनका विकास कितनी अच्छी तरह किया गया है और उनका प्रबंधन कितनी कुशलता से किया गया है।

12वीं योजना के फोकस (ध्यान केंद्रित करने) वाले महत्वपूर्ण क्षेत्रों में स्थायी विकास को बनाए रखना और स्थिरता और समावेशी विकास को बढ़ावा देना है, इसे देखते हुए कुशल और न्यायसंगत दृष्टिकोण की आवश्यकता है। अतः स्मार्ट शहर को वर्तमान संसाधनों के कुशल उपयोग और आबंटन पर ध्यान देना होगा जो शहरों की आर्थिक व्यवहार्यता और संसाधनों के समान वितरण (प्राप्ति और उपलब्धता) को सुनिश्चित करता है। इसे उत्तरदायी भू–उपयोग योजना, नीति परिप्रेक्ष्य और भौतिक योजना परिप्रेक्ष्य दोनों, के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। यह स्थिरता द्वारा नियंत्रित मुद्दा है जो किसी "स्मार्ट शहर" की मूल धारणा को निर्धारित करता है।

स्थायी स्मार्ट शहर को पुनरोद्धार और नवीनीकरण, कम ऊंचे बनाम बहुत ऊंचे, विरासत और निर्मित रूप, भू–उपयोग परिवहन संघटन, पर्यावरण संरक्षण, आपदा प्रबंधन को कारगर बनाने, जलवायु परिवर्तन के शमन और अनुकूलन, समावेशन इत्यादि से संबन्धित मुद्दों पर विचार करना है।

ऐसा नीतिगत माहौल बनाना सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है जहां समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधि भाग ले सकते हैं जो वास्तव में किसी स्मार्ट शहर की रीढ़ है। सत्ता लोगों के हाथों में ही होनी चाहिए क्योंकि वे शहर में रहते हैं और उन्हें सत्ता और नियंत्रण सहित 'शहर के शासन का अधिकार' होता है जो जवाबदेही, निष्पक्षता और पारदर्शिता के रूप में होता है।

इसे पहले शहरी स्थानीय निकाय केन्द्रित योजना निर्माण, कार्यान्वयन और प्रवर्तन (एन्फोर्समेंट) द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा, विशिष्ट उपाय और समाधान पूरी तरह विशिष्ट क्षेत्रों/प्रदेशों की आवश्यकताओं पर निर्भर करेगा।

जिन महत्वपूर्ण मुद्दों पर तेजी से ध्यान देने की आवश्यकता है, वे इस प्रकार हैं:–

- क्षेत्रीय योजना को अनिवार्य बना दिया जाए।
- बाढ़ के मैदानों या भूकंप संभावित क्षेत्रों में विकास का रोकना। इन क्षेत्रों का उपयोग पार्कों या खुले स्थानों के रूप में किया जा सकता है।
- परिवहन और प्रमुख बुनियादी ढांचे की योजना तैयार करना।

- क्षेत्र में बस्तियों की भूमिका को परिभाषित करना, जैसे कुछ प्रशासनिक हो सकते हैं, जबकि दूसरे निर्माण या परिवहन पर आधारित हैं।
- अपशिष्ट निपटान सहित आवश्यक न्यूसेन्स भूमि उपयोग के स्थानों को निर्दिष्ट करना।
- बस्तियों के मिलाव को रोकने और पर्यावरण की रक्षा करने के लिए ग्रीन बेल्ट भूमि या इसी तरह निर्दिष्ट करना।
- बिल्डिंग कोड, जोनिंग कानून और नीतियां जो भूमि के सर्वोत्तम उपयोग की तुलना में जोखिम उन्मुखता को प्रोत्साहित करती हैं।

क्या किया जाना आवश्यक है:–

- ❖ भौतिक और सामाजिक – आर्थिक संबंधों, संसाधनों, विकास क्षमताओं और समस्या की पहचान आदि के आधार पर क्षेत्र की रूपरेखा प्रस्तुत करना।
- ❖ विशिष्ट मुद्दों पर ध्यान देने के लिए डेटाबेस का विकास क्योंकि प्रत्येक क्षेत्र में ध्यान देने के लिए अलग मामले होंगे।
- ❖ यह आवश्यक है कि सभी कर्ताओं की नेटवर्किंग और क्लाउड सोर्सिंग अपनी जगह पर हों क्योंकि वे प्रमुख हितधारक हैं।
- ❖ कार्रवाई की वरीयता और चरणबद्ध योजना के माध्यम से स्थानीय स्तर पर कार्यान्वयन के लिए नीतिगत उपायों को व्यापक रूप देना राज्य सरकारों और स्थानीय निकायों का काम है।
- ❖ शहर के स्थानिक पैटर्न को पुनर्गठित करना जो व्यापक गतिशीलता योजना के माध्यम से है। भू–उपयोग कार्य और परिवहन के बीच समन्वय करना आवश्यक है क्योंकि शहर स्थानिक रूप में फैलते हैं।
- ❖ एमपीसी/डीपीसी के गठन और महानगरीय और जिला विकास योजनाओं को तैयार करने और शहरी स्थानीय निकायों के कार्य में नागरिक सहभागिता को संस्थागत बनाने के लिए एरिया सभा बनाने के संबंध में 74वें संविधान संशोधन के उपबंधों का अनुपालन करना।
- ❖ निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देना।
- ❖ स्थानिक योजना प्रस्तावों को निवेश योजनाओं के साथ एकीकृत करना, उन परियोजनाओं और योजनाओं की पहचान करना जिन्हें अकेले बजटीय समर्थन से कार्यान्वित किया जा सकता है और प्रभावी वसूली समाधान का प्रदर्शन करते हुए शहर सरकारों के साथ संस्थागत समर्थन पर जोड़ा जा सकता है। विशिष्ट उदाहरणों में गरीबों के लिए सेवा की व्यवस्था करना, गरीबों के लिए आवास, आजीविका की प्राप्ति, लागत प्रभावी सार्वजनिक परिवहन समाधान सुनिश्चित करना, ठोस अपशिष्ट को न्यूनतम करना और कचरे से धन, सामुदायिक भागीदारी कानून और सार्वजनिक प्रकटीकरण कानून के माध्यम से पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित करना, अच्छे प्रदर्शन को प्रोत्साहन देना, भूमंडलीकरण की जरूरतों और चुनौतियों का सामना करने के लिए

भौतिक और मानव के बुनियादी ढांचे में विकास और क्षमता निर्माण के लिए बेहतर और अधिक प्रभावी क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर एकीकरण के माध्यम से लंबी अवधि के मैक्रो नियोजन ढांचे शामिल हो सकते हैं। इससे समग्र दृष्टिकोण, आत्मनिर्भर शहरी स्थानीय निकायों, कुशल सार्वजनिक द्रुत ट्रांजिट प्रणाली और उभरते हरे–भरे, स्वच्छ और टिकाऊ शहरों को बढ़ावा मिलेगा।

स्थायी स्मार्ट सिटी को हासिल करने के कार्य बिन्दुः–

आवश्यक (स्तर 1)

1. विकास, दक्षता, इक्विटी, सुरक्षा और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए शहर/नगर और इसके भीतरी भाग की स्थिरता के मुद्दों के समाधान के लिए कानून को सक्षम करने के लिए क्षेत्रीय योजना के प्रावधानों को शामिल करना।
2. प्राकृतिक जोखिम संभावित क्षेत्रों का मानचित्र तैयार करने को ध्यान में रखते हुए भू–उपयोग उपयुक्तता का आंकलन।
3. प्रस्तावित घनत्व पैटर्न पर आधारित क्षितिज वर्ष के लिए आवश्यक विकसित भूमि की मात्रा का आंकलन।
4. घर से कार्यस्थल की यात्रा की दूरी को कम करने और आजीविका के विकल्पों को बढ़ावा देने के लिए पॉलीनोडल/मल्टीनोडल विकास को बढ़ावा देने, भू–उपयोग परिवहन एकीकरण और कार्य केन्द्रों के निकट शहरी गरीब पोकेटों को निर्दिष्ट करने के लिए भूमि का इष्टतम उपयोग।
5. प्रोत्साहन जोनिंग के माध्यम से भू–उपयोग की अधिक मात्रा प्राप्त करने के लिए नवीन तंत्र को बढ़ावा देना ।
6. सेवा प्रदान करने, परिवहन और ई–शासन के लिए राज्य स्तरीय निकायों का समर्थन करना।
7. वन बेल्ट, जल संसाधनों, कृषि बेल्ट आदि के संरक्षण और रक्षा के लिए पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील विकास को बढ़ावा देना।
8. निजी डवलपर के लिए आकर्षक प्रोत्साहन वाली सार्वजनिक निजी भागीदारी को बढ़ावा देना।

आवश्यक सूचक

1. स्थायी आवास को बढ़ावा देने के लिए सभी सक्षम विधानों में शहरी योजना रूपरेखा को शामिल करना।
2. प्रत्येक 5 वर्ष में विकास के लिए उपलब्ध कराए गए भूमि क्षेत्र की तुलना में आवश्यक भूमि क्षेत्र का आंकलन करना।
3. कार्यान्वयन की स्थिति के संबंध में हर 5 साल में योजना का पुनःनिरीक्षण/पुनरवलोकन करना।
4. प्राकृतिक जोखिमों को परिभाषित करना, प्राकृतिक जोखिम संभावित इलाकों का मानचित्रण करना और उसके विकास नियंत्रण को सूत्रबद्ध करना।
5. यात्रा दूरी को कम करने और आजीविका के विकल्पों को बढ़ावा देने के लिए कार्य केन्द्रों के पास शहरी गरीब

पोकेटों को निर्दिष्ट करना।

6. सेवा प्रदान करना, ई–शासन और शहरी परिवहन के लिए सेवा स्तर बेंचमार्क प्राप्त करना।

वांछनीय (स्तर 2)

1. विरासत संरक्षण पर बल देने के साथ शहरी नवीकरण।
2. गैर अनुरूप उपयोग क्षेत्रों को अनुरूप उपयोग क्षेत्रों में बदलना।
3. ऊर्जा कुशलता और हरे–भरे पर्यावास को प्रोत्साहित करने के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने और अनुकूलन के उपाय तैयार करना।
4. लागत प्रभाव और कार्यान्वयन के तौर–तरीकों सहित विशिष्ट परियोजनाओं की पहचान करना और प्राथमिकता देना।

औसत दर्जे के सूचक

- ❖ अंतरराज्यीय/राज्य क्षेत्र योजना अधिनियम के माध्यम से बनाई जाने वाली और हर 10 साल में संशोधित की जाने वाली क्षेत्रीय योजना को अंतरराज्यीय/राज्य क्षेत्र योजना बोर्ड के माध्यम से शामिल करना।
- ❖ 5 साल की समय अवधि में एमपीसी और डीपीसी के माध्यम से जिला एवं महानगर/शहर क्षेत्र के लिए विकास योजना।
- ❖ विकास प्राधिकरण/एसटीसीपीडी के माध्यम से 10 वर्ष में मास्टर प्लान तैयार करना जिसकी 5 साल में पुनः अवलोकन/समीक्षा करना।
- ❖ विकास प्राधिकरण/एसटीसीपीडी द्वारा मास्टर प्लान के हिस्से के रूप में 1 वर्ष में जोनल योजना तैयार करना।
- ❖ हितधारक भागीदारी के माध्यम से एक वार्ड स्तर योजना/स्थानीय क्षेत्र योजना तैयार करना।
- ❖ मास्टर प्लान के हिस्से के रूप में विकास प्राधिकरण/एसटीसीपीडी/यूएलबी के माध्यम से एक लेआउट योजना तैयार करना।
- ❖ शहरी स्थानीय निकाय द्वारा भवन उपनियम लागू करना और संपत्ति स्तर पर लागू करना।
- ❖ आपदा जोखिम आंकलन सहित भूमि उपयुक्तता का विश्लेषण।
- ❖ पर्यावरण/भूमि उपयोग जोन बनाने का पालन करना (योजना बनाने के भाग के रूप में पर्यावरण आंकलन को अपनाना)।
- ❖ भूमि उपयोग परिवहन एकीकरण, कॉम्पैक्ट शहर नियोजन, जोखिम न्यूनीकरण और आवास के लिए सार्वभौमिक पहुँच।

शासन के लिए शहरी योजना की रूपरेखा

योजना	कौन तैयार करेगा	किसके माध्यम से तैयार की गई	विधान	पैमाना	चुनौतियां	वे राज्य जिन्होंने कार्यान्वित की	मुख्य विशेषताएं
1. क्षेत्रीय योजना बड़ा स्तर (अंतरराज्य / राज्य क्षेत्र योजना)	अंतरराज्यीय / राज्य क्षेत्र नियोजन बोर्ड	अंतरराज्यीय / राज्य क्षेत्र योजना अधिनियम	केन्द्रीय / राज्य विधान	1:250,000 / 1:50,000	1. राज्य इस पहल को प्राथमिकता नहीं देते हैं। अतः इसे एक सुधार के रूप में लेने की जरूरत है।	दादर एवं नगर हवेली, महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब	
मध्य स्तर (जिला और महानगर / शहर क्षेत्र की विकास योजना)	जिला योजना समिति और महानगर / शहर क्षेत्र विकास प्राधिकरण / एसटीपीसीडी	डीपीसी और एमपीसी	डीपीसी अधिनियम (राज्य) विकास अधिनियम / एसटी एवं सी.पी. अधिनियम (राज्य)	1:50,000	जेएनएनयूआरएम सुधार को सख्ती से कार्यान्वित करने की आवश्यकता है।	20 राज्यों में डीपीसी और 6 राज्यों में एमपीसी का गठन कर दिया गया है।	
लघु स्तर (मास्टर प्लान) अंतरराज्यीय / राज्य क्षेत्र योजना बोर्ड	विकास प्राधिकरण / एसटीसीपीडी	विकास अधिनियम / राज्य नगर एवं ग्राम अधिनियम	राज्य अधिनियम	1:10,000	सीमित जनशक्ति, क्षमता की कमी, कोई प्राथमिकता नहीं कोई आधार मानचित्र नहीं, आवधिक आधार पर कोई डेटा संग्रह नहीं।	7937 नगरों और शहरों में से 1,800 नगरों का वैधानिक मास्टर प्लान है।	

योजना	कौन तैयार करेगा	किसके माध्यम से तैयार की गई	विधान	पैमाना	चुनौतियां	वे राज्य जिन्होंने कार्यान्वित की	मुख्य विशेषताएं
2. जोनल प्लान	विकास प्राधिकरण/ एसटीसीपीडी	मास्टर प्लान के हिस्से के रूप में विकास प्राधिकरण एसटी एवं /सीपीडी	विकास प्राधिकरण/एसटी एवं सीपीडी अधिनियम (राज्य)	1:5000	सीमित जनशक्ति, क्षमता की कमी, कोई प्राथमिकता नहीं, कोई आधार मानचित्र नहीं, आवधिक आधार पर कोई डेटा संग्रह नहीं	तैयार जोनल योजनाओं की संख्या संबंधी कोई इनवेंटरी उपलब्ध नहीं है।	
3. स्थानीय क्षेत्र योजना (वार्ड योजना)	शहरी स्थानीय निकाय	हितधारक भागीदारी	सांविधिक योजना नहीं	1:2000	दिल्ली ने इस संकल्पना को बढ़ावा दिया है। दिल्ली के मास्टर प्लान 2021 की सिफारिश की गई।	कोई इनवेंटरी नहीं।	
4. लेआउट योजना	विकास प्राधिकरण/एसटी एवं सीपीडी/ शहरी स्थानीय निकाय	मास्टर प्लान के भाग के रूप में विकास प्राधिकरण /एसटी एवं सीपीडी/शहरी स्थानीय निकाय	कोई विधान नहीं क्योंकि यह मास्टर प्लान का भाग है।	1:1000/ 1:5000	सीमित जनशक्ति, क्षमता की कमी, कोई प्राथमिकता नहीं, कोई आधार मानचित्र नहीं, आवधिक आधार पर कोई डेटा संग्रह नहीं।	कोई इनवेंटरी नहीं।	

योजना	कौन तैयार करेगा	किसके माध्यम से तैयार की गई	विधान	पैमाना	चुनौतियां	वे राज्य जिन्होंने कार्यान्वित की	मुख्य विशेषताएं
5. मॉडल भवन उपनियम	शहरी स्थानीय निकाय द्वारा संपत्ति स्तर पर। सभी राज्यों को अपनाने के लिए केंद्रीय मॉडल बीबीएल परिचालित किया गया है।	शहरी स्थानीय निकाय	राज्य विधान	लागू नहीं	राज्यों को सौंपी गई, कुछ राज्यों ने समर्थन करने के बाद भी नहीं की है क्योंकि कोई प्राथमिकता नहीं है।	लगभग 22 राज्यों ने स्थानीय परिस्थितियों के लिए उपयुक्त विभिन्न उपबंधों को अपना लिया है।	
6. यूडीपीएफआई दिशानिर्देश	शहरी स्थानीय निकाय द्वारा सभी स्तरों पर अपनाए जाने हैं	शहरी स्थानीय निकाय	विधान की आवश्यकता नहीं	लागू नहीं	राज्यों द्वारा प्राथमिकता पर विचार नहीं किया गया।	कोई इनवेंटरी नहीं।	यूडीपीएफआई अंतर्संबंधित 4 योजनाओं, 20–25 वर्ष की परिप्रेक्षय योजना, के समूह का समर्थन किया: विकास योजना परियोजनाओं और स्कीमों के लिए योजना

कार्रवाई की कार्यसूची:–

1. राज्य नगर एवं ग्राम योजना विभागों को सुदृढ़ बनाना।
2. शहर नियोजकों और नगर नियोजन कार्मिकों की क्षमता का निर्माण।
3. जिन राज्यों में अंडरग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री कार्यक्रम का कोई स्कूल नहीं है, उन राज्यों में कम से कम एक योजना स्कूल की स्थापना करना।
4. एनएमएसएच के तहत, मास्टर प्लान तैयार करने के लिए 300 करोड़ रुपए के बराबर वित्त पोषण के लिए एक विंडो उपलब्ध है।
5. समावेशी मास्टर प्लान के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सामाजिक–आर्थिक विषयों / विभागों के साथ नेटवर्क बनाना।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2014–2015 के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य

क्रम संख्या	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (तार, बेतार, टेलेक्स, फैक्स, आरेख, ई–मेल आदि सहित)	1. 'क' क्षेत्र (उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह) से 'क' क्षेत्र को 100 प्रतिशत 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100 प्रतिशत 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65 प्रतिशत 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 'क' से 'क' 100 प्रतिशत एवं 'क' से 'ख' 100 प्रतिशत	1. 'ख' क्षेत्र (गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़) से 'क' क्षेत्र को 90 प्रतिशत 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90 प्रतिशत 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 'ख' से 'क' 100 प्रतिशत एवं 'ख' से 'ख' 100 प्रतिशत	1. 'ग' क्षेत्र ('क' एवं 'ख' में आने वाले राज्यों एवं द्वीप समूह को छोड़कर अन्य सभी राज्य व केंद्रशासित प्रदेश) से 'क' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 85 प्रतिशत
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
3.	हिंदी में टिप्पण	75 प्रतिशत	50 प्रतिशत	30 प्रतिशत
4	हिंदी में डिक्टेशन	65 प्रतिशत	55 प्रतिशत	30 प्रतिशत
5.	हिंदी में प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
राजभाषा संबंधी बैठकें				
6.	(क) हिंदी कार्यशाला	वर्ष में 4 कार्यशालाएं (प्रति तिमाही एक कार्यशाला)		
	(ख) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		

राजभाषा नियम, 1976 – प्रमुख नियम

नियम संख्या	नियम
5	हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाएं।
6	धारा 3(3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेज द्विभाषी रूप में तैयार और जारी किए जाएं।
7	हिंदी में हस्ताक्षरित या हिंदी में प्राप्त आवेदन, अपील या अभ्यावेदन का उत्तर हिंदी में दिया जाए।
8(4)	अधिसूचित कार्यालयों में हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने संबंधी आदेश जारी करना।
9	हिंदी में प्रवीणता प्राप्त।
10(1)	हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त।
10(4)	जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत से अधिक कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है उनके नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे।
11	सभी मैनुअल व अन्य साहित्य हिंदी और अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित किए जाएंगे। सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष आदि हिंदी और अंग्रेजी में लिखें /प्रदर्शित होंगे।
12	केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का उत्तरदायित्व है कि वहः राजभाषा अधिनियम और नियमों तथा इनके तहत जारी आदेशों तथा निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित करे तथा इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त तथा प्रभावकारी जाँच बिंदु बनाए।

जीवन –सूत्र

जिंदगी जीना आसान नहीं होता,
बिना संघर्ष कोई महान नहीं होता,
जब तक न पड़े हथोड़ों की चोट,
तब तक पत्थर भी .....
भगवान नहीं होता।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत आने वाले कागजात

सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार भारत के सभी मंत्रालयों / विभागों और अधीनस्थ कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले सभी कागजातों को द्विभाषी रूप यानी हिंदी और अंग्रेजी में साथ–साथ जारी करें। नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन में राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) का पूर्णतया पालन किया जा रहा है। धारा 3(3) के अंतर्गत निम्नलिखित कागजात आते हैं:–

1.	सामान्य आदेश	General Orders
2.	संकल्प	Resolution
3.	नियम	Rule
4.	अधिसूचनाएं	Notifications
5.	प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट	Administrative and other Reports
6.	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Communiques
7.	संविदाएं	Contracts
8.	करार	Agreements
9.	अनुज्ञप्तियां	Licences
10.	अनुज्ञा पत्र	Permits
11.	सूचनाएं	Information
12.	निविदा प्रपत्र	Tender Form
13.	निविदा सूचना	Tender Notice
14.	संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले कागजात	Papers to be placed before both the Houses of Parliament

सामान्य आदेश की परिभाषा

स्थाई किस्म के सभी आदेश, निर्णय, अनुदेश, परिपत्र आदि जो विभागीय प्रयोग के लिए हों तथा ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, सूचनाएँ, परिपत्र आदि, जो सरकारी कर्मचारियों के संबंध में या उनके लिए हों, राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अधीन 'सामान्य आदेश' कहलाते हैं।

राजभाषा संबंधी कुछ महत्वपूर्ण जानकारी

राजभाषा क्षेत्र

क क्षेत्र : उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह

ख क्षेत्र : गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़

ग क्षेत्र : उपर्युक्त क्षेत्रों को छोड़कर अन्य सभी राज्य व केन्द्रशासित प्रदेश

हिंदी में प्रवीणता

यदि केन्द्र सरकार के किसी कर्मचारी ने –

(1) मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे ऊँची कोई परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है, या

(2) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के बराबर या उससे ऊँची किसी परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था, या

(3) वह राजभाषा नियम में संलग्न प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है तो यह समझा जाएगा कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है।

(राजभाषा नियम,1976 का नियम–9)

हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान

यदि किसी कर्मचारी ने –

(1) मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या ऊँची परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है, या

(2) केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या

(3) केन्द्रीय सरकार द्वारा इस बारे में विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या

(4) वह राजभाषा नियम में संलग्न प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो यह समझा जाएगा कि ऐसे कर्मचारी को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है।

(राजभाषा नियम, 1976 का नियम–10)

जीवन–सूत्र

करोड़ों लोगों को अंग्रेजी में शिक्षा देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है। मैकाले ने शिक्षा की जो बुनियाद डाली है वह सचमुच गुलामी की बुनियाद है। – महात्मा गांधी

सरकारी कामकाज (टिप्पण/प्रारूपण) मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निदेशानुसार केंद्रीय सरकार के सभी कार्यालयों में सरकारी कामकाज (टिप्पण/प्रारूपण) मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत उन अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जाता है जो अपने सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी में टिप्पण / प्रारूपण का कार्य करते हैं। इस संगठन में दिनांक 01.04.2013 से 31.03.2014 की अवधि के दौरान सरकारी कामकाज (टिप्पण / प्रारूपण) मूल रूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना चलाई गई। उक्त प्रतियोगिता में भाग लेने वाले 10 अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची नीचे दी गई है:–

क्रम सख्या	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	स्थान	पुरस्कार राशि (रूपये में)
1.	श्री रणसिंह सैनी, प्र.श्रे.लि.	प्रथम पुरस्कार	1600
2.	श्री विमल कुमार, प्र.श्रे.लि.	प्रथम पुरस्कार	1600
3.	श्री प्राण कुमार, अ.श्रे.लि.	द्वितीय पुरस्कार	800
4.	श्री अनिल कुमार वर्मा, एमटीएस	द्वितीय पुरस्कार	800
5.	श्री राम प्रवेश मिश्रा, अ.श्रे.लि.	द्वितीय पुरस्कार	800
6.	श्री सुबोध कुमार, अ.श्रे.लि.	तृतीय पुरस्कार	600
7.	श्रीमती एच.के. सेठी, सहायक	तृतीय पुरस्कार	600
8.	श्री आर. श्रीनिवास, न.ग्रा.नि.	तृतीय पुरस्कार	600
9.	श्रीमती रेजीना टोप्पो, प्र.श्रे.लि.	तृतीय पुरस्कार	600
10.	श्री राम प्रकाश, कार्यालय अधीक्षक	तृतीय पुरस्कार	600
	(आठ हजार छः सौ रुपये मात्र)	**कुल राशि**	**8,600**

किसको दूँ मैं दोष

धनसिंह वर्मा

जहां,
कन्या को देवी रूप में
है पूजा जाता,
माँ और मातृभूमि को
स्वर्ग से श्रेष्ठ है माना जाता।
उसी देवभूमि पर
भ्रूण में ही कन्या हत्या
क्या है दर्शाता।

जहां रक्षा बंधन पर्व
बहन रूप में नारी–महत्व
है दर्शाता,
कन्यादान,
श्रेष्ठ दान है माना जाता,
उसी देवभूमि पर
भ्रूण में ही कन्या हत्या
हमारे पतन को ही
है दर्शाता।

जहां,
पत्नी के बिना
किसी धार्मिक कार्य को
पूरा नहीं माना जाता।
जहां,
नारी पूजा होती है,
वहीं देवता बसते हैं,
यही था हमारा उद्घोष,
उसी धरा पर
भ्रूण में ही कन्या हत्या,
किसको दूँ मैं दोष।

सोचता हूँ,
कन्या को भ्रूण हत्या से बचाना है,
तो दहेज के दानव को हराना है,
फिर से कन्यादान
की प्रथा को लाना है।
अशिक्षा के अंधकार
को मिटाना है,
भारत भूमि से
गरीबी को हटाना है।

साथ ही,
सभी को बताना है,
कि सृष्टि चक्र को
यदि चलाना है,
तो कन्या को भ्रूण हत्या से
बचाना है।
चिड़िया चुग गई खेत
तो फिर पीछे पछताना है।

कह 'धनसिंह भारतीय'
पुनः वही धर्म–ध्वज फहराना है,
नारी का हो सम्मान जहां,
ऐसा भारत पुनः बनाना है।

भारत तुम कहां हो

रानी वधवा

भारत विश्व के एशिया महाद्वीप में स्थित है जो अपने में हजारों–करोड़ों वर्षों की संस्कृति को समेटे हुए है। यहां कभी राम जैसे प्रसिद्ध राजा हुए हैं जो अपनी सुविधाओं को अपनी प्रजा के लिए न्यौछावर कर देते थे तो कभी राजा हरीश्चन्द्र जैसे प्रसिद्ध सत्यवादी राजा हुए है जिन्होंने सच्चाई के लिए अपने पुत्र को भी न्यौछावर कर दिया। यहां वाल्मीकि, वेदव्यास जैसे महान विद्वान लेखक हुए जिन्होंने श्रीमद्भागवत गीता तथा महाभारत जैसी पुस्तकें लिखीं। यह वही भारत है जिसने संसार को शून्य दिया तथा संसार का विकास किया। परन्तु आज मैं पूछती हूं कि –

''भारत तुम कहां हो?
नित दिन खोजूं तुमको,
ऐ प्यारे तुम कहां हो?
भारत तुम कहां हो?''

भारत जो सदैव से सभ्यता व संस्कृति का प्रतीक रहा, वह भारत आज कुछ खो सा गया है। यहां कभी नारी को पूजा जाता था और कहा जाता था –

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''

पर आज यहाँ नारी का अपमान होता है। कहीं उसे दहेज की बलिबेदी पर चढ़ा दिया जाता है, तो कहीं लोग उसी नारी को बेइज्जत करते हैं जिसकी वो घरों में पूजा करते हैं। इसलिए पूछती हूं कि वह भारत कहां है?

''भारत तुम कहां हो?
जो नारी को पूजता था,
लक्ष्मी, दुर्गा के रूप में।
आज उसी के प्रांगण में,
नारी को कुचला जाता है।
आग लगाई जाती है उनके सपनों में
भारत तुम कहां हो?''

यह वही भारत है जिसने अंतरराष्ट्रीय सद्भावना को बढ़ाने के लिए सबसे पहले कदम बढ़ाया। राजाओं ने शांति यज्ञ किए। अशोक, सिद्धार्थ जैसे महात्माओं को जन्म दिया जिन्होंने राष्ट्रों के मध्य सद्भावना बढ़ाने में मदद की। यही नहीं दुश्मनों को भी माफ किया, पर फिर पूछती हूं कि भारत तुम कहां हो ?

आज चारों तरफ आतंक फैला है, क्यों नहीं आते इस आतंक को रोकने को, फिर पैदा करो सिद्धार्थ को, फिर लाओ अशोक को, जो करे इस देश का उद्धार ताकि बढ़े, फूले–फले यह भारत जिसकी है चाह हमें।

वह भारत कहां है? जो समानता की भावना को रखता था, सबको समान समझता था न कोई ऊँचा, न कोई नीचा, न जात–पात को रखता था, चारों तरफ खुशहाली थी क्योंकि वह सबको समान समझता था।

आज भारत टूट रहा है क्योंकि भारत में बसे परिवार टूट रहे हैं। आज सभी अकेले रहना चाहते हैं। मैं पूछती हूं कि भारत तुम कहां हो? तुमने ही तो पुत्र को पिता की आज्ञा को मानने वाला बनाया था, दिखाया था कि राम ने अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए राजसिंहासन छोड़ दिया था तथा 14 वर्ष का वनवास लिया था।

लेकिन आज का भारतवासी अपने माता–पिता और भाईयों–बहनों को बोझ समझता है तथा अपने माता–पिता को वृद्धावस्था में वृद्धाश्रम में डाल आता है। मैं पूछती हूं कि वह भारत कहां है? जिसमें राम ने अपने भाईयों, माताओं को अपना समझा, उनकी आज्ञा का पालन किया। साथ ही, ''श्रवण'' नामक बेटे ने अपने अंधे माता–पिता को अपने कंधे पर कांवड़ में बैठाकर तीर्थों के दर्शन कराए।

आज मैं पूछती हूं कि भारत तुम कहां हो? वह भारत जहां राम जैसे राजा हुए जिन्होंने प्रजा के लिए अपनी पतिव्रता सीता को त्याग दिया और राजधर्म का पालन किया। आज के नेता देश को खोखला कर रहे हैं। क्यों नहीं वे राम की तरह भारत को अपनी प्रजा समझते हैं क्यों नहीं भारत का पालन करते हैं। आज चारों तरफ द्वेष फैला है, प्रेम भाव का पता नहीं। आज मैं पूछती हूं, भारत, तुम कहां हो ?

लौट आ, अरे! बिछड़े जमाने,
साथ ला, प्रेम भाव के फसाने।
फिर जगा उस भारत को,
जिसकी तमन्ना है हमको।।

जीवन–सूत्र

बेटा वारिस है, बेटी पारस है।

बेटा वंश है, बेटी अंश है।

बेटा आन है, बेटी शान है।

बेटा तन है, बेटी मन है।

बेटा दवा है, बेटी दुआ है।

बेटा भाग्य है, बेटी भाग्य विधाता है।

बेटा शब्द है, बेटी अर्थ है।

बेटा गीत है, बेटी संगीत है।

ओडिशा में जगन्नाथपुरी की रथयात्रा

डॉ0 अशोक कुमार बंदूनी

अहं ब्रह्मास्मि का उद्घोष करने वाले अद्वैत वेदांत का मत है कि ईश्वर और आत्मा (जीव) दो नहीं, बल्कि एक ही हैं। इस दर्शन का निदर्शन हमें पुरी की रथयात्रा में मिलता है जिसमें रथ जीवन है तो भगवान जगन्नाथ आत्मा का रूपक हैं। आत्मा ही जीवन–रथ को सही दिशा में ले जाती है, अतः वही ईश्वर है। आत्मा और परमात्मा के इस अद्वैत को समझ लें तो हम सद्प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख हो जाते हैं और कर्म को अपने जीवन में उतार लेते हैं। शायद इसी दर्शन को पुष्ट करती हुई कहावत बनी है– अपना हाथ जगन्नाथ।

ओडिशा में पुरी के जगन्नाथ धाम को नीलांचल धाम, श्रीक्षेत्र, पुरूषोत्तम क्षेत्र, शंख क्षेत्र आदि नाम से भी जाना जाता है। जनश्रुति है कि सतयुग में अवंती नगरी के राजा इंद्रद्युम्न विष्णु के परम भक्त थे। वे अपने राज्य में विष्णु का विशाल मंदिर बनाकर विष्णु के नए रूप को प्रतिष्ठापित करना चाहते थे। नीलमाधव विग्रह न मिलने पर काष्ठ के विग्रह मंदिर के लिए बनवाते हैं। लेकिन वे विग्रह अधूरे ही रह जाते हैं और अंततः अधूरे विग्रहों की ही प्रतिष्ठा करनी पड़ती है। यद्यपि जनश्रुति में वर्णित मंदिर का आज कहीं अस्तित्व नहीं मिलता है, लेकिन जो मंदिर आज जगन्नाथ धाम से विख्यात है, उसका निर्माण कार्य 12वीं सदी में गंग साम्राज्य के शक्तिशाली नरेश अनंतवर्मन के द्वारा आरंभ करवाया गया था। वे पुरूषोत्तम क्षेत्र यानी पुरी में ऐसा मंदिर बनवाना चाहते थे जो न केवल भव्य हो, बल्कि दीर्घकालिक भी हो। यह मंदिर 1147 ई. में बनना आरंभ हुआ और 1178 में अनंतवर्मन के पौत्र अनंग भीमवर्मन के काल में पूरा हुआ। जगन्नाथ मंदिर परिसर लगभग 10 एकड़ भूमि पर फैला है जो एक ऊंचे चबूतरे पर बना है। यह चारों ओर से सात मीटर ऊंची दीवार से घिरा है। मंदिर में चारों ओर चार प्रवेश द्वार हैं, किंतु सिंह द्वार ही मुख्य प्रवेश द्वार है। इसके भीतर प्रवेश करने पर मुख्य मंदिर तक जाने की सीढ़ियां हैं।

जगन्नाथ की मूर्ति लकड़ी के टुकड़ों से बनाई और सजाई–संवारी जाती है, जिसमें भगवान की आंखें गोलाकार में काफी बड़ी–बड़ी होती हैं और स्पष्ट रूप से लगता है कि इनके पैर नहीं हैं। भगवान जगन्नाथ की पूजा–अर्चना की विधि पुरानी हिंदू परंपरा से मेल नहीं खाती। मूर्ति लकड़ी से बनाई जाती है जो आमतौर पर हिंदू देवी–देवताओं की मूर्ति निर्माण में अपवाद है। भगवान जगन्नाथ तीन देवताओं में से एक हैं, जिसमें बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा शामिल हैं। मूर्ति को इस तरह से डिजाइन नहीं किया जाता है कि इसमें मानव की छवि नजर आए। इसकी छवि में एक व्यापक वर्गाकार सिर है जो एक ही लकड़ी के साथ सीने से मिला हुआ है और इसमें गले को अलग से प्रकट करने के लिए कोई सीमा नहीं है। बांहों को एक रेखा में ऊपरी होंठ के साथ मिलाया गया है। कमर शरीर की सीमा है।

जब हम मुख्य द्वार से 22 सीढ़िया चढ़कर मंदिर में प्रवेश करते हैं तो हमें बाईं ओर मंदिर का विशाल रसोई क्षेत्र दिखाई पड़ता है। वहीं दाईं ओर आनंद बाजार है जो मंदिर परिसर के भीतर खाने–पीने की चीज़ों के लिए लोकप्रिय बाजार है। मुख्य मंदिर के भीतर करीब 30 मंदिर हैं। वहां एक पुराना बरगद का पेड़ है जिसे कल्पवट के नाम से जाना जाता है और मान्यता है कि यह पेड़ भगवान जगन्नाथ की स्थापना के समय से ही अस्तित्व में है। हिंदू पौराणिक कथाओं में एक दिव्य वृक्ष (कल्पवट) का वर्णन है और ऐसी मान्यता है कि यह वृक्ष कृपा की याचना करने वाले लोगों की इच्छा पूरी करता है। उस दिव्य वृक्ष के नाम को ध्यान में रखते हुए इस बरगद का यह नाम

रखा गया है। इसलिए इसके नाम का अर्थ है कि यह वृक्ष मानव की अतृप्त इच्छाओं को पूरा करने में समर्थ है। तीर्थयात्री को कल्पवट से मौन अवस्था में अपनी इच्छा व्यक्त करने के लिए पेड़ के पास एक या दो मिनट खड़ा रहना होता है। मंदिर परिसर में कुछ और महत्वपूर्ण स्थान हैं, जिसमें से दो स्थानों का खास तौर पर जिक्र करना जरूरी है। पहला कोइली बैकुंठ, जोकि उत्तर–पश्चिम किनारे के अंदर और बाहरी अहाते की दीवार के बीच स्थित है। परंपरागत तौर पर माना जाता है कि यह वह स्थान है जहां जरा सबर द्वारा मारे जाने के बाद भगवान कृष्ण का अंतिम संस्कार किया गया था। इसलिए जब नवकलेवर उत्सव होता है तो नई कृतियां लगाई जाती हैं और पुरानी कृतियों को यहीं भूमि में दबा दिया जाता है। दूसरा स्थान निलाद्रि विहार है जो एक छोटा संग्राहलय है, जहां हम रंग–बिरंगे पेंट किए गए मॉडलों की मदद से मंदिर के पीठासीन देवता जगन्नाथ का उद्भव देख सकते हैं।

विभिन्न पुराणों में इस मंदिर की उत्पत्ति के संबंध में कई कहानियां देखने को मिलती हैं। किसी समय यह स्थान मोटी लकड़ियों से बना पहाड़ी क्षेत्र था, जहां सबर नाम की जनजाति रहा करती थी। उनका सरदार जंगल के बीच में गुप्त रूप से नील माधव या नीले विष्णु के रूप में भगवान की पूजा करता था। उस समय, इंद्रद्युम्न नाम का एक राजा था जो विष्णु का एक महान भक्त था। उसे सपने में बताया गया कि उसके भगवान को ओडिशा राज्य में सबसे बढ़िया रूप में देखा जा सकता है। राज पुरोहित के भाई विद्यापति को भगवान की खोज करने और अगर संभव हो तो उन्हें वापस लाने के लिए ओडिशा भेजा गया। विद्यापति सपने में बनाए स्थान पर गए और पाया कि नील माधव वहां की एक स्थानीय जनजाति सवरास के सरदार के पारिवारिक देवता थे। कबीले के सरदार ने विद्यापति को पूजा के गुप्त स्थान की जानकारी देने से मना कर दिया।

विद्यापति ने इतनी आसानी से हार नहीं मानी और वह उस जगह रहता रहा और अंततः सरदार की बेटी ललिता से शादी कर ली। उसने अपनी पत्नी ललिता से अपने पिता से चिरौरी करने को कहा। सरादार अपनी बेटी की बात टाल नहीं सका और अपने दामाद की आंखों पर पट्टी बांधकर उसे घने जंगल के बीच स्थित एक गुफा में ले गया। विद्यापति ने बड़ी चालाकी से रास्ते में सरसों के दाने डाल दिए थे। ये दाने कुछ ही दिनों में अंकुरित हो गए और उसने उन रास्तों को पकड़ कर गुप्त गुफा का रास्ता खोज लिया। अंदर उसने गहरे नीले रंग के नीलम से बनी एक असाधारण आभा वाली छवि पाई और वह तुरंत समझ गया कि यही नील माधव की प्रतिमा है जिसकी सरदार पूजा करते रहे हैं। वह तत्काल लौटा और इंद्रद्युम्न को सारी बातें बताई। राजा ओडिशा की तीर्थ–यात्रा पर निकला, लेकिन जब वह गुफा में गया तो उसने पाया कि नील माधव की मूर्ति गायब थी। राजा बहुत दुखी हो गया, लेकिन फिर उसे स्वप्न आया जिसमें उसे बताया गया कि जब वह अश्वमेघ यज्ञ करेगा, तभी उसे समुद्र तट पर लकड़ी का एक कुंडा मिलेगा, जिससे वह एक छवि बनाएगा। उसने वैसा ही किया जैसा उसे सपने में बताया गया था और उसे समुद्र पर तैरती लकड़ी का एक कुंदा मिला। राजा ने मूर्ति बनाने के लिए सबसे उत्तम व्यक्ति तलाशने के लिए मुनादी कराई। हालांकि जो लोग आए, उनमें से एक भी व्यक्ति कुछ करने लायक नहीं था। जैसे ही वे लकड़ी पर छेनी चलाते, छेनी की धार स्थूल हो जाती। अंत में देवों के वास्तुकार विश्वकर्मा एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में प्रकट हुए और यह काम करने की पेशकश की। लेकिन उन्होंने शर्त रखी कि उन्हें एक कमरे में केवल लकड़ी दी जानी चाहिए और इस दौरान किसी को भी इस काम में खलल नहीं डालना चाहिए। पहले दो सप्ताह तक छेनी और हथौड़ी की आवाजें सुनाई देती रहीं, लेकिन इसके बाद सभी आवाजें रूक गईं और रानी के इशारे पर राजा इंद्रद्युम्न ने द्वार खोल दिया और यह देखकर दंग रह गए कि वहां मूर्तिकार का कोई अता–पता नहीं था। हालांकि उन्हें वहां तीन मूर्तियां मिलीं जो अधूरी बनी थीं। वे केवल कमर से ऊपर

गढ़ी गई थीं। जगन्नाथ और बलभद्र के हाथ पूरे नहीं बने थे और सुभद्रा के तो हाथ ही नहीं थे। इन अपूर्ण मूर्तियों को देखकर राजा फूट–फूट कर रो पड़ा, लेकिन एक दिव्य वाणी ने उसे इन भगवानों के लिए एक मंदिर बनाने की सलाह दी और वे जैसे हैं, उसी रूप में उनकी पूजा करने को कहा। लेकिन राजा इंद्रद्युम्न द्वारा बनवाया गया मंदिर आज अस्तित्व में नहीं है।

भगवान जगन्नाथ को संपूर्ण जगत का स्वामी माना जाता है। उनके उत्सव प्रायः रथयात्रा के रूप में होते हैं। श्रीजगन्नाथपुरी के मंदिर में 12 मासों में अनेक यात्राएं मनाई जाती हैं, जिनमें श्रीगुंडीचा जगन्नाथ रथयात्रा सर्वाधिक चर्चित एवं विख्यात है। प्रतिवर्ष आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष की द्वितीया के दिन भगवान जगन्नाथ को उनकी बहन सुभद्रा तथा भाई बलभद्र (बलराम) के साथ मंदिर से बाहर निकालकर पृथक रथों पर विराजमान कराकर गुंडीचा मंदिर के लिए प्रस्थान कराया जाता है। जगन्नाथ जी के रथ का नाम 'नंदीघोष' है जो 45 फीट ऊंचा होता है और इसमें 16 पहिये लगे होते हैं। बलभद्र जी के रथ का नाम 'तालध्वज' है जो 44 फीट ऊंचा होता है और इसमें 12 पहिये लगे होते हैं। ये रथ प्रतिवर्ष चुनी हुई नई लकड़ियों से बनाए जाते हैं। इनमें कहीं भी लोहे की कील का प्रयोग नहीं होता। इनका निर्माण वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तृतीया (अक्षय तृतीया) के दिन से प्रारंभ हो जाता है। इन रथों को बनाने वाले कारीगर वंश परंपरा से इस निर्माण कार्य में दक्ष होते हैं।

आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन तीनों विग्रहों को मंदिर के सिंहद्वार के बाहर बड़े अनूठे ढंग से लाया जाता है। इस कार्य में स्थानीय पारंपरिक रीति–रिवाजों को बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ निभाया जाता है। तीनों श्रीविग्रहों को मंदिर की रत्नवेदी से रथों पर अलग–अलग लाते हैं। सबसे पहले सुदर्शन–चक्र को सुभद्रा जी के रथ पर पहुंचाया जाता है। घंटे–घड़ियाल और नगाड़ों की ध्वनि तथा भजन–कीर्तन के बीच एक खास लय में रथ चलते हैं। विग्रहों को इस लय में लाने की प्रक्रिया 'पहंडी' कहलाती है। रथयात्रा के समय सबसे आगे बलराम जी का और सबसे पीछे भगवान जगन्नाथ का रथ होता है। बहिन सुभद्रा का रथ दोनों भाइयों के रथों के मध्य रहता है। जब तीनों श्रीविग्रह अपने–अपने रथ पर बैठ जाते हैं, तब पुरी के राजा को प्राचीन परंपरा का अनुसरण करते हुए उनके पुरोहित निमंत्रण देने जाते हैं। राजा पालकी में आते हैं और वे तीनों रथों को सोने की झाड़ू से बुहारते हैं। यह प्रथा 'छेरा–पोहरा' कहलाती है।

समय ने अनेक बार करवट बदली है किंतु रथयात्रा का उत्सव आज भी पुरानी शान के साथ होता है। यहां परंपराएं आधुनिकता की आंधी में लुप्त नहीं हुई हैं। बड़दांड से होकर रथों को गुंडीचा मंदिर तक खींच कर ले जाते हैं। तीन मील के बड़दांड से धीरे–धीरे गुजरते हुए रथ यहां पहुंच पाते हैं। गुंडीचा मंदिर वही स्थान है जहां पूर्वकाल में देवताओं के शिल्पी विश्वकर्मा जी ने भगवान जगन्नाथ, बलभद्र तथा सुभद्रा जी के दारू (लकड़ी) के विग्रहों का निर्माण किया था। स्कंद पुराण के 'उत्कल खंड' में वर्णित है कि अपने प्रिय भक्त राजा इंद्रद्युम्न को भगवान जगन्नाथ ने यह वरदान दिया था कि वे वर्ष में एक बार वहां अवश्य आएंगे। रथयात्रा के संदर्भ में एक अन्य आख्यान यह भी है कि एक बार बहिन सुभद्रा की नगर–भ्रमण की इच्छा पूर्ण करने के लिए दोनों भाई श्रीजगन्नाथ और बलभद्र जी ने रथों पर विराजमान होकर यात्रा की थी।

जगन्नाथ जी की यह रथयात्रा साम्य और एकता का प्रतीक है। रथयात्रा के दिन हर तरह के भेद–भाव को भुलाकर समाज के सभी वर्गों के लोग रथ को खींचते हैं। ये रथ दशमी के दिन वापस लाए जाते हैं। वापसी की यह यात्रा 'बहुडायात्रा' कहलाती है। एकादशी के दिन सभी विग्रहों का स्वर्ण वेश सर्वसाधरण को वशीभूत कर लेता है। इसे 'सुनाभेस' कहते हैं। मंदिर के बाहर नौ दिनों के दर्शन को 'आड़पदर्शन' भी कहा जाता है। द्वादशी के दिन मंदिर में विग्रहों का प्रवेश होता है।

आनन्द रस

राम प्रकाश

शास्त्रों में रस तो कई प्रकार के हैं लेकिन आनन्द रस में जो आनन्द है वह किसी और रस में नहीं। आनन्द रस के बारे में जब मैंने गहराई से चिंतन किया तो दंग रह गया। कुछ बातें ऐसी मालूम हुईं जो चौंकाने वाली थीं।

जहाँ बच्चों को खेल–खेल में लड़ने और थोड़ी देर बाद उसी बच्चे के साथ खेलने में आनन्द आता है। वहीं बड़ों की यदि किसी से लड़ाई हो जाती है तो जिंदगी भर उसको याद रखने और विरोध के लिए नए–नए षड्यंत्र रचने में ही आनन्द आता है। भ्रष्टाचारियों को भ्रष्टाचार में डूबे रहने में ही आनन्द आता है तो आज की दुनिया में गिने–चुने कुछ ईमानदार लोगों को अपनी ईमानदारी से जीवन व्यतीत करने में ही बड़ा आनन्द आता है।

नेताओं को जहां जनता के साथ झूठे वायदे करने में आनन्द आता है, वहीं जनता को भी चुनाव के समय ऐसे झूठे नेताओं को सबक सिखाने में आनन्द आता है।

मधुमक्खी को फूलों का रस चूसने एवं शहद बनाने में आनन्द आता है तो मक्खी को गंदगी पर बैठने में ही आनन्द की अनुभूति होती है। कार्यालयों में भी कुछ गिने–चुने अधिकारियों/कर्मचारियों को जहां मेहनत से अपनी ड्यूटी करने में आनन्द आता है, वहीं दूसरी ओर कुछ अधिकारियों/कर्मचारियों को सारा दिन गप्पे मारने में ही आनन्द आता है।

महिलाओं को एक–दूसरे की निन्दा करने में ही आनन्द आता है। कई बार तो निंदा में महिलाएं इतनी डूब जाती हैं कि चूल्हे पर रखी सब्जी भी जल जाती है। कुछ सास अपनी बहुओं की बुराई करने में आनन्द लेती हैं तो कुछ बहुएं अपनी सास की निंदा करने में आनन्द लेती हैं।

इस प्रकार आनन्द रस का क्षेत्र बहुत विशाल है। इस आनन्द रस की जितनी भी हम व्याख्या करते जाएं, उतनी ही कम है। कार्यालय में कई लोग चापलूस किस्म के होते हैं जो अपनी मीठी–मीठी बातों से अपने वरिष्ठ अधिकारियों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। इससे बचने हेतु अधिकारी को काफी संतुलन बनाना पड़ता है जो एक प्रकार का तप ही है। जैसे मधुमेह (डायबिटीज) के रोगी को शुगर से नुकसान का पता काफी देर से चलता है उसी प्रकार चापलूस व्यक्ति की मीठी–मीठी बातों का जहर भी अपना असर काफी बाद में दिखाता है। लोगों के बीच में मेल बैठाकर चलना भी एक तपस्या ही है।

इस प्रकार हम देखते हैं गृहस्थ जीवन एक तपस्या ही है। अतः घर से न भागकर इसी तपस्थली में तप करना चाहिए।

हरित किफ़ायती आवास

डॉ0 अचला मेदिरत्ता

आवास क्षेत्र के संबंध में शहरी परिदृश्य बहुत भयावह है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) और निम्न आय वर्ग (एलआईजी) श्रेणियों में आवास की सबसे अधिक कमी है। प्रायः किफ़ायती आवास और कम लागत के आवास को समान अर्थ के रूप में प्रयोग किया जाता है यद्यपि इनमें बहुत अंतर है। इस बात में बहुत भ्रम है कि सामर्थ्य को कैसे परिभाषित किया जाए। सामर्थ्य के अर्थ में लक्ष्यार्थ है। इसी प्रकार इस संकल्पना का बिल्डरों, सरकारों, वित्त एजेंसियों, वास्तुकारों आदि के लिए अलग–अलग अर्थ है।

कई विशेषज्ञों ने सामर्थ्य की परिभाषा पर ही सवाल उठाया है। क्या इसका तात्पर्य अपनी मनचाही जगह पर घर खरीदना है या इसे वहन योग्य कीमत पर खरीदने की क्षमता है या दोनों? किफ़ायती आवास वह है जिसमें रिहायशी एकक की लागत घरेलू आय के चार गुना से अधिक नहीं हो। किफ़ायती आवास के विकल्पों को बढ़ावा देने के साथ–साथ पुनरोद्धार योजनाओं और परियोजनाओं को शुरू करने की आवश्यकता है ताकि आजीविका के विकल्पों को बढ़ावा दिया जा सके।

प्रमुख पहल

भारत सरकार ने वर्ष 2007 में राष्ट्रीय आवास और पर्यावास नीति की घोषणा की। यह वास्तव में एक मार्गदर्शक दस्तावेज है जो किफ़ायती आवास के लिए आगामी आवासीय परियोजनाओं में 10–15 प्रतिशत भूमि और 20–25 प्रतिशत एफएआर आरक्षित करने जैसे उपायों को बढ़ावा देता है। यह नीति भूमि संयोजन के माध्यम से इस तरह के मकानों के निर्माण के लिए निजी क्षेत्र को भी अवसर प्रदान करती है। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह नीति स्वस्थाने विकास का प्रयास करती है और स्पष्ट करती है कि शहरी क्षेत्रों में रहने वाले गरीबों के आवास उनके वर्तमान स्थानों के अंदर और कार्यस्थलों के समीप होने चाहिएं। किफ़ायती आवास के क्षेत्र में व्यापक रूप से प्रचारित दूसरा कार्यक्रम राजीव आवास योजना है जिसका उद्देश्य वर्ष 2014 तक भारत को झुग्गी मुक्त बनाना है। इसका उद्देश्य स्लम वासियों को भूमि अधिकार प्रदान करके मौजूदा स्लमों को औपचारिक प्रणालियों के अंदर लाना है। वर्ष 2011–12 में घोषित बंधक गारंटी फंड (Mortgage Guarantee Fund) को राजीव आवास योजना के साथ शामिल किया गया है। मकानों को बनाने के लिए 10 अरब रुपये का अतिविशाल कोष बनाया गया जिसका प्रबंध राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त शहरी गरीबों के आवास के लिए ब्याज सब्सिडी योजना है जो ईडब्ल्यूएस और एलआईजी से संबन्धित लोगों को घर खरीद और निर्माण दोनों के लिए एक लाख रुपए तक के आवास ऋण के ब्याज पर 5 प्रतिशत सब्सिडी प्रदान करती है।

किफ़ायती आवास अनिवार्य रूप से ईडब्ल्यूएस–एलआईजी आवास नहीं है

हरित निर्माण पिछले एक दशक में उच्च निष्पादन, ऊर्जा दक्ष गृहों का निर्माण करने के लिए एक मजबूत आंदोलन के रूप में उभरा है जो पर्यावरण के प्रभावों को कम करते हुए निवासी के आराम और कल्याण में सुधार लाता है। अमेरिकी ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल जैसे संगठनों और ऊर्जा एवं पर्यावरण डिजाइन (एलईईडी) मानकों में इसके नेतृत्व द्वारा समर्थित भारत में गृह और बीईई सार्वजनिक और निजी संस्थाएं दोनों संस्थागत, वाणिज्यिक

और आवासीय क्षेत्रों में हरित भवनों के काम में तेजी से लगी हुई हैं। जबकि प्रगति कारगर है, कई कारणों से किफ़ायती आवास परियोजनाओं की बड़ी संख्या को इसमें शामिल नहीं किया गया है। इन कारणों, जिनमें से कई किफ़ायती आवास के लिए अनूठे हैं, में 'पहली लागत' पर विशिष्ट फोकस, प्रति इकाई लागत कैप्स की मौजूदगी, विनियामक कठोरता शामिल हैं, जो हरित नवीनता को सीमित करती है और वित्त प्रणाली जो हरित निवेश के दीर्घकालिक महत्व की पहचान करने में विफल रहती हैं।

आम धारणा यह रही है कि हरित आवास में लागत अधिक आती है और इसलिए यह किफायती आवास के लिए उपयुक्त नहीं है। हाल के अध्ययनों में वाणिज्यिक और संस्थागत क्षेत्रों में हरित भवन की लागत और लाभ को प्रलेखित किया गया है जिसमें रिपोर्ट दी गई है कि हरित भवन में मामूली प्रारंभिक लागत प्रीमियम है लेकिन लंबी अवधि के लाभ वृद्धिशील पूंजी लागत से काफी अधिक हैं। इन निष्कर्षों से इन क्षेत्रों में हरित भवन गतिविधि को बल मिला है लेकिन किफ़ायती आवास विकास के लिए उनकी प्रयोज्यता को काफी संदेह से देखा गया है।

महत्वपूर्ण डेटा एकत्र करने और कार्यप्रणाली संबंधी चुनौतियों के होते हुए भी कुछ अध्ययनों के विश्लेषण से कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकले हैं, इनमें निम्न शामिल हैंः–

- ❖ समुदाय आधारित पहल और औरोविल्ले जैसे अन्य मिशन संचालित संगठन हरित आवास निर्माण के प्रयास में वास्तविक लीडर हैं।
- ❖ प्रारंभिक पूंजी लागत पर ध्यान केंद्रित करते हुए हरित आवास की वित्तीय व्यवहार्यता का आकलन करने की मौजूदा प्रणाली अत्यंत त्रुटिपूर्ण है। किसी भवन की प्रत्याशित–अवधि से अधिक जीवन–चक्र लागत, जिसमें पूंजीगत और परिचालन दोनों लागत का ध्यान रखा जाता है, परियोजना अर्थशास्त्र की बेहतर समझ प्रदान करती है।
- ❖ जीवन–चक्र दृष्टिकोण के प्रयोग से हरित आवास नेट वर्तमान मूल्य (एनपीवी) शब्दावली में पारंपरिक किफ़ायती आवास की अपेक्षा अधिक लागत प्रभावी है।
- ❖ किफ़ायती आवास के लिए मौजूदा वित्तपोषण प्रणाली जटिल और कठोर है और आम तौर पर हरित निवेश की लंबी अवधि के मूल्य को स्वीकार नहीं करती है। यह हरित किफायती आवास के व्यापक विकास में बाधा के रूप में कार्य करती है।

कार्रवाई सार

हरित किफ़ायती आवास बनाने और कार्यान्वित करने के लिए कुछ कार्रवाई सार इस प्रकार हैंः–

शिक्षा और समर्थन

- ❍ समुदाय को दीर्घकालिक लागत बचत के साथ ही पर्यावरण और व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लाभ के बारे में शिक्षित करें।
- ❍ साधारण लागत–बचत के हरियाली संबंधी विचार उपलब्ध कराएं जिनका उपयोग निवासी अपने वर्तमान आवास वातावरण में कर सकते हैं।

नियोजन

- ❖ किफ़ायती आवास परियोजनाओं के साथ उपयोग के लिए हरित भवन दिशानिर्देश, जाँच सूची और रेटिंग प्रणाली का एकसमान सेट बनाएं।
- ❖ नीतियों और प्रक्रियाओं की समीक्षा करें ताकि अधिक 'हरित अनुकूल' विकल्पों को कार्यान्वित किया जा सके। इसमें सामान्य योजना, भू–उपयोग अध्यादेश, जोन विनियमन, पार्किंग विनियमन और बिल्डिंग कोड शामिल हैं।
- ❖ स्थानीय भवन निर्माताओं को हरित भवन नीतियां अपनाने के लिए प्रोत्साहित करें। भवन निर्माताओं को अपने भवन के डिजाइन और निर्माण प्रक्रिया एवं विशिष्टताओं की समीक्षा करनी चाहिए और इसकी जाँच करनी चाहिए कि 'हरित' सुधार करना कहाँ संभव है।
- ❖ हरित भवन का निर्माण करने वाले भवन निर्माताओं के लिए शुल्क छूट और अन्य प्रोत्साहन सहित विभिन्न नीतिगत विकल्पों को अपनाएं।
- ❖ क्षेत्र में सम्पत्तियों का मूल्यांकन करें और हरित संरचनाओं के तरीके खोजें जो स्थिरता के कारक बन सकते हैं।
- ❖ उन डवलपरों के साथ सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) करें जिनका स्मार्ट और हरित विकास का इतिहास है।

बिल्डिंग डिजाइन एवं पर्यावरण

- ♦ हरियाली रणनीतियों का उपयोग करके स्थानीय सरकारी इमारतों को रेट्रोफिट करना ताकि सभी निर्माण परियोजनाओं के लिए मानक स्थापित किए जा सकें।
- ♦ सार्वजनिक परिवहन, साइकिल पथ और अन्य वैकल्पिक परिवहन विकल्पों को मिलाकर नौकरियों और सेवाओं तक पहुँच पर विचार करें।
- ♦ ऐसा समुदाय बनाएं जो पैदल चलने में समर्थ हो और जिन्हें कम ड्राइविंग और अच्छे स्वास्थ्य की जानकारी हों।
- ♦ कम पानी की आवश्यकता वाले क्षेत्र के मूल कड़े पौधों और झाड़ियों के उपयोग द्वारा भू–दृश्य बनाना।

अंत में, हरित किफ़ायती आवास डवलपरों और नीति–निर्माताओं के लिए सिफारिशों में डवलपरों को अनुभवी हरित टीम जुटाने, एकीकृत डिजाइन दृष्टिकोण को काम में लाने और किसी परियोजना के अर्थशास्त्र का मूल्यांकन करने में जीवन चक्र लागत का उपयोग करने का सुझाव देना है। उन नीति–निर्माताओं को नवीन वित्त पोषण तंत्र बनाने का सुझाव दिया जाता है जो बिल्डिंग कोड में ऊर्जा दक्षता के लिए अधिक अनिवार्य मानकों को स्थापित करके और किफ़ायती आवास के लिए न्यूनतम हरित मानकों को अपनाकर हरित परियोजनाओं की लंबी अवधि के मूल्य को पहचानते हैं।

बाल श्रम

विमल कुमार

बचपन, इंसान की जिंदगी का सबसे हसीन पल होता है। न किसी बात की चिंता और न ही कोई जिम्मेदारी। बस हर समय अपनी मस्ती में खोए रहना, खेलना–कूदना और पढ़ना। लेकिन सभी का बचपन ऐसा हो यह जरूरी नहीं।

बाल मजदूरी की समस्या से आप अच्छी तरह वाकिफ होंगे। कोई भी ऐसा बच्चा जिसकी उम्र 14 वर्ष से कम हो और वह जीविका के लिए काम करे, बाल मजदूर कहलाता है। गरीबी, लाचारी और माता–पिता की प्रताड़ना के चलते ये बच्चे बाल मजदूरी के इस दलदल में धंसते चले जाते हैं।

आज दुनिया भर में 215 मिलियन ऐसे बच्चे हैं जिनकी उम्र 14 वर्ष से कम है और इन बच्चों का समय स्कूल में कॉपी–किताबों और दोस्तों के बीच नहीं, बल्कि होटलों, घरों, उद्योगों में बर्तनों, झाड़ू–पोंछे और औजारों के बीच बीतता है।

भारत में यह स्थिति बहुत ही भयावह हो चली है। दुनिया में सबसे ज्यादा बाल मजदूर भारत में ही हैं। 1991 की जनगणना के हिसाब से बाल मजदूरों का आंकड़ा 11.13 मिलियन था। 2001 में यह आंकड़ा बढ़कर 12. 7 मिलियन पहुंच गया।

बड़े शहरों के साथ–साथ आपको छोटे शहरों में भी हर गली नुक्कड़ पर कई राजू–मुन्नी–छोटू–चवन्नी मिल जाएंगे जो हालातों के चलते बाल मजदूरी की गिरफ्त में आ चुके हैं। यह बात सिर्फ बाल मजदूरी तक ही सीमित नहीं है इसके साथ ही बच्चों को कई घिनौने कुकृत्यों का भी सामना करना पड़ता है जिनका बच्चों के मासूम मन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है।

कई एनजीओ समाज में फैली इस कुरीति को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं। इन एनजीओ के अनुसार 50.2 प्रतिशत ऐसे बच्चे हैं जो सप्ताह के सातों दिन काम करते हैं। 53.22 प्रतिशत यौन प्रताड़ना के शिकार हो रहे हैं। इनमें से हर दूसरे बच्चे को किसी न किसी तरह भावनात्मक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है। 50 प्रतिशत बच्चे शारीरिक प्रताड़ना के शिकार हो रहे हैं।

बाल मजदूर की इस स्थिति में सुधार के लिए सरकार ने 1986 में चाइल्ड लेबर एक्ट बनाया जिसके तहत बाल मजदूरी को एक अपराध माना गया तथा रोजगार पाने की न्यूनतम आयु 14 वर्ष कर दी। इसी के साथ सरकार नेशनल चाइल्ड लेबर प्रोजेक्ट के रूप में बाल मजदूरी को जड़ से खत्म करने के लिए कदम बढ़ा चुकी है। इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य बच्चों को इस संकट से बचाना है। जनवरी, 2005 में नेशनल चाइल्ड लेबर प्रोजेक्ट स्कीम को 21 विभिन्न भारतीय प्रदेशों के 250 जिलों तक बढ़ाया गया।

आज सरकार ने आठवीं तक की शिक्षा को अनिवार्य और निशुल्क कर दिया है लेकिन लोगों की गरीबी और बेबसी के आगे यह योजना भी निष्फल साबित होती दिखाई दे रही है। बच्चों के माता–पिता सिर्फ इस वजह से उन्हें स्कूल नहीं भेजते क्योंकि उनके स्कूल जाने से परिवार की आमदनी कम हो जाएगी।

माना जा रहा है कि आज 60 मिलियन बच्चे बाल मजदूरी के शिकार हैं, अगर ये आंकड़े सच हैं तब सरकार को अपनी आंखें खोलनी होंगी। आंकड़ों की यह भयावहता हमारे भविष्य का कलंक बन सकती है।

भारत में बाल मजदूरों की इतनी अधिक संख्या होने का मुख्य कारण सिर्फ और सिर्फ गरीबी है। यहां एक तरफ तो ऐसे बच्चों का समूह है जो बड़े–बड़े मंहगे होटलों में 56 भोग का आनंद उठाता है और दूसरी तरफ ऐसे बच्चों का समूह है जो गरीब हैं, अनाथ हैं, जिन्हें पेटभर खाना भी नसीब नहीं होता। दूसरों की जूठनों के सहारे वे अपना जीवनयापन करते हैं।

जब यही बच्चे दो वक्त की रोटी कमाना चाहते हैं तब इन्हें बाल मजदूर का हवाला देकर कई जगह काम ही नहीं दिया जाता। आखिर ये बच्चे क्या करें, कहां जाएं ताकि इनकी समस्या का समाधान हो सके। सरकार ने बाल मजदूरी के खिलाफ कानून तो बना दिए, इसे एक अपराध भी घोषित कर दिया लेकिन क्या सरकार ने इन बच्चों की कभी गंभीरता से सुध ली है?

बाल मजदूरी को जड़ से खत्म करने के लिए जरूरी है गरीबी को खत्म करना। इन बच्चों के लिए दो वक्त का खाना मुहैया कराना। इसके लिए सरकार को कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। सिर्फ सरकार ही नहीं आम जनता की भी इसमें सहभागिता जरूरी है। हर एक व्यक्ति जो आर्थिक रूप से सक्षम हो अगर ऐसे एक बच्चे की भी जिम्मेदारी लेने लगे तो सारा परिदृश्य ही बदल जाएगा।

क्या आपको नहीं लगता कि कोमल बचपन को इस तरह गर्त में जाने से आप रोक सकते हैं? देश के सुरक्षित भविष्य के लिए आपको यह जिम्मेदारी अब लेनी ही होगी। क्या आप लेंगे ऐसे किसी एक मासूम की जिम्मेदारी?

भ्रष्टाचार की रोकथाम

विपिन कुमार

इंतजार है हमें उस पल का, आजादी के अहसास का।
ईमानदारी के उस पल का, भ्रष्टाचार विहीन समाज का।
अच्छाई की बुराई पर विजय हो, समाज के प्रति जवाबदेही तय हो।
इंतजार है हमें उस पल का, आजादी के अहसास का।

भय और रिश्वतखोरी इतिहास बने, अच्छे समाज के निर्माण का हम गवाह बनें।
एक अच्छे भविष्य निर्माण की सीढ़ी बनें, इंतजार है हमें उस पल का,
आजादी के अहसास का।

आओ पहल करें नई राह बनाने में, भ्रष्टाचार को दूर करेंगे इस जमाने में,
ईमानदारी का बीज जब वृक्ष बनेगा, सभी को आएगा मजा इसके फल खाने में।
इंतजार है हमें उस पल का, आजादी के अहसास का।
गर्व के उस पल का।

प्रदूषण

उदयवीर सिंह प्रजापति

प्रदूषण की परिभाषा :– जब किसी भी प्रकार से वातावरण दूषित होने लगे तो उसको प्रदूषण कहते हैं। आज आप देख रहे हैं कि हमारा जीवन बहुत ही अस्त–व्यत हो रहा है। वर्तमान में कोई भी जीव अथवा मनुष्य स्वस्थ नहीं है। चारों तरफ इतना प्रदूषण फैल रहा है कि हर किसी को श्वांस लेने में भी परेशानी हो रही है। प्रदूषण फैलने के कुछ मुख्य कारण हैं जिन्हें रोका तो नहीं जा सकता परन्तु कम जरूर किया जा सकता है।

बढ़ती आबादी:– आज हमारी आबादी इतनी बढ़ चुकी है कि शहर की बात तो अलग है गांवो में भी इतनी भीड़ दिखती है कि कई बार गांवो में भी निकलने के लिए रास्ते नहीं मिलते। आज संभवतः हर दूसरा व्यक्ति किसी न किसी रोग से पीड़ित है। किसी एक व्यक्ति के श्वांस से निकले कीटाणु श्वांस के माध्यम से दूसरे व्यक्ति के अंदर पहुंच जाते हैं जिससे उस व्यक्ति को बीमारी लग जाती है।

शौचालय:– शहरों की तरह गांवो में भी अधिकांश लोगों ने अपने घरों के अंदर शौचालय बनवा दिए हैं लेकिन शौचालय बनवाते समय लोगों ने कुछ गलतियां की हैं। जहां शौचालय के हौज के तले को कंकरीट से पक्का कराना चाहिए था वहां लोगों ने उनको कच्चा छोड़ दिया है जिसकी वजह से मल–मूत्र आदि के प्रदूषण से पेय जल भी दूषित हो रहा है। कुछ लोगों ने शौचालयों की गंदगी को सीधा नालियों में डाल दिया है जिसकी वजह से वातावरण दूषित होता है और अनेकों बीमारियां फैलती हैं। आपने ये भी देखा होगा कि सीवर लाइन के साथ ही पेयजल की लाइनें भी होती हैं जिनमें रिसाव हो जाने के कारण पेयजल भी दूषित हो जाता है। इन दोनों लाइनों के बीच एक विशेष दूरी होनी चाहिए ताकि पेयजल दूषित होने के कारण बीमारी न फैले।

कारखाने:– मूल रूप से ऐसे कारखानों की वजह से वातावरण दूषित होता है जिनसे धुआं और विषैले तत्व निकलते हैं। ऐसे कारखानो से विषैले जल को सीधे पवित्र नदियों में डाला जा रहा है जिसके कारण नदियों के साथ–साथ जमीनी जल भी दूषित हो रहा है जिसको पीने से बीमारियां भी बढ़ रही हैं। प्रदूषण से बचने के लिए ऐसे कारखानो को धुआं रहित किया जाए और पानी को साफ करने के लिए शोधन यंत्र लगाए जाएं।

पक्की सड़कें और पक्के रास्ते:– पक्की सड़कों और रास्तों से पब्लिक को काफी फायदा हुआ है लेकिन इसके साथ–साथ प्रदूषण भी बढ़ा है। जब रास्ते कच्चे हुआ करते थे तो बरसात का पानी आसानी से भूगर्भ में पहुंच जाता था जिससे न तो मच्छर पैदा होते थे और न ही जल स्तर घटता था। हमारे घरों से निकलने वाले पानी को भी जमीन आसानी से सोख लेती थी लेकिन जमीन को पक्का कर देने से पानी जहां–तहां इकट्ठा हो जाता है और कुछ समय बाद वह पानी सड़ जाता है और उसमें मच्छर पैदा हो जाते हैं जिसकी वजह से प्रदूषण और बीमारी दोनों फैलते हैं।

रचनात्मकता और शहरीकरण

जैस्मिन बिम्रा मल्लिक

इंसान था, खानाबदोश था।
इंसान था, रचनात्मक था
गाँव बसे, ग्रामीण हुआ।
इंसान था, रचनात्मक था
शहर बसे, शहरी हुआ।
इंसान है, रचनात्मक है.....

रचनात्मकता ने मानव जाति के लिए जानवर जैसे अस्तित्व से सभ्यता तक के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। किसी घटना का प्रबंध करने के लिए रचनात्मकता में कुछ पूर्व अपेक्षित चीजों की आवश्यकता होती है। उनमें प्रमुख हैं – कौशल और सृजन के लिए महसूस की गई आवश्यकता। कौशल को प्रदर्शन, उपकरण, समय और पहुंच सूचकांक द्वारा आकार दिया जाता है जबकि महसूस की गई आवश्यकता या तो निर्मित या असली होती है और आमतौर पर सामाजिक–राजनीतिक विचारों पर निर्भर होती है।

रचनात्मक प्रक्रियाएं अकेली चुनौतियों पर काबू पाने की दिशा में लक्षित होती हैं। सामाजिक–राजनीतिक ताकतों में यह क्षमता होती है जो इन व्यक्तिगत 'प्रयासों' और 'रचनात्मकता' को सामूहिक 'जन कल्याण' में मिला सकती है। यह सामूहिक रचनात्मकता उद्यमशीलता और आविष्कार का भी पालन–पोषण करती है जिसका लक्ष्य क्रमशः सेवाओं और उपकरणों के माध्यम से जीवन को और सुगम बनाना है। औद्योगिक युग ऐसी अवधि को चिन्हित करता है जिसने उचित राजनीतिक और सामाजिक स्थिति के साथ–साथ ऐतिहासिक आविष्कारों और नवीनीकरण की श्रृंखला देखी हो। शहरीकरण, गैर कृषि अर्थव्यवस्थाओं की विशेषता वाले समाजों का सृजन इस सामूहिक रचनात्मकता की एक सीधी गिरावट थी जिसने तीव्र औद्योगीकरण में अपने आप को प्रकट किया। रचनात्मकता शहरों के वर्गीकरण एवं संरचना के मामले में दुनिया भर में शहरी परिदृश्य के लिए एक अभूतपूर्व गतिशीलता भी लाई जो औद्योगीकरण से पहले व्यापार नगरों एवं प्रशासनिक सीटों तक ही सीमित थी।

बड़े पैमाने की किफ़ायतें (लागत–लाभ जो परिचालन के विस्तार में वृद्धि के साथ प्रति इकाई उत्पादन लागत में अनुपातिक कमी होने के कारण उद्यमों को प्राप्त होता है) पर्याप्त जनशक्ति, सामग्री और प्रौद्योगिकी की उपलब्धता के कारण संघर्ष करने के लिए एक शक्ति बन गयीं। इसके अलावा, संचित किफ़ायतों के लाभ का अर्थ उन्नत और पिछड़े संयोजन वाले उद्योगों के समूह के स्थानीयकरण से है। इसके परिणामस्वरूप शहर वाणिज्य और शक्ति के स्वतंत्र केन्द्रों से अन्योन्याश्रित समूहों के नेटवर्क में परिवर्तित हुए जिसने विनिर्माण हब, बाजार और कच्चे माल की आपूर्ति करने वाले आंतरिक प्रदेश के रूप में विशिष्टता प्राप्त की।

इन विभिन्न कार्यों ने परिवहन और संचार के क्षेत्रों में शहरी केन्द्रों को अपेक्षित नवीकरण प्रदान किया और रचनात्मकता प्रदान की। बेहतर सड़कें, कुशल ऑटोमोबाइल, हवाई परिवहन, अन्वेषण और खनन के नए तरीके (प्रणाली को चलाने के लिए ईंधन) और बाद में आभासी संचार के लिए इंटरनेट। संचार के नए साधनों और परिवहन के कारगर साधनों के कारण सेवा किफायतें विकसित हुईं। जटिल और बड़ी बाधाओं ने शहरीकरण की

प्रक्रिया को चुनौती दी है और हमारे परिपक्व समाज के रचनात्मक सार ने हमारे शहरों को जीवित बनाए रखने और विकसित करने में कामयाबी प्रदान की है। इस प्रकार, शहरीकरण, इसकी सर्वथा अंकुरण एवं जीविका के लिए, इस अभूतपूर्व रचनात्मकता पर निर्भर करता है। सामूहिक आबादी का रचनात्मक सूचकांक विकास के इन इंजनों को चलाता है, बाधाओं से परे नवीनता लाता है तथा निरंतर वितरण और निष्पादन के लिए शहरी मशीनरी को चालू रखता है।

शहरीकरण का रथ रूकने वाला नहीं अगर इसकी गति की जड़ता को इसके वृद्धिशील आकार और रचनात्मकता के रूप में एक तुलनात्मक प्रतिबल, यदि अभिभूत नहीं होता, द्वारा बढ़ाया जाए। तथापि, शहर अपनी निहित विशेषताओं के कारण रचनात्मक प्रक्रिया को सीमित करता है जो पहुँच, समय की उपलब्धता और महसूस की गई आवश्यकता को प्रभावित करता है।

शहरीकरण के प्रारंभिक चरणों में संसाधनों तक पहुँच महंगी, व्यापकता आधारित और अनौपचारिक प्रवृत्ति की होती है जिसके परिणामस्वरूप विविधीकरण और प्रयोग कार्यों पर दृढ़ता से व्यापक शेयरिंग, वाद–विवाद, चर्चा और प्रयोज्यता होती है। जैसे–जैसे शहरी रूप परिपक्व होता है वैसे–वैसे स्थापित सिद्धांतों और विशेषज्ञता पर बल देने के साथ पहुंच संरचित, संगठित और औपचारिक हो जाती है। यद्यपि यह विकसित प्रणाली नियमित कार्य का प्रबंध अधिक कुशलता से करती है, यह नियमों या वैकल्पिक सोच के सवाल को सहजता से अस्वीकार भी करती है जो रचनात्मकता को बढ़ाने एवं पोषण करने के लिए आवश्यक है।

रचनात्मकता का एक अनिवार्य तत्व समय है। उत्पादन के साथ आने के लिए उत्पादक को अपेक्षित अन्वेषण, विश्लेषण और प्रयोग के स्तर के समय प्रधान दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। समय भी एक संसाधन है जिसे कपड़े धोने, खाना पकाने, ऑनलाइन शॉपिंग करने और बहुत से तरीकों पर व्यय होने वाले समय तथा प्रयास को कम करने के लिए उपकरणों के निर्माण द्वारा प्रौद्योगिकी ने उपलब्ध करवाया है। यद्यपि उक्त प्रौद्योगिकी ने आराम और कायाकल्प के रास्ते खोल दिए हैं जिससे वास्तविक आभासी गेमिंग, जीवन शैली, निवेश इत्यादि चीजों के माध्यम से मनुष्य के कार्य के घंटों को भारी मात्रा में अंधेरे में डाल दिया है। समाज उत्पादक समय के रूप में कार्यालय में आठ मानव कार्य घंटे निवेश करता है तथा यात्रा, प्रसंस्करण और प्रौद्योगिकी अंधकार जैसी अनुत्पादक गतिविधियों में समान समय बर्बाद होता है।

समय और पहुंच दोनों कौशल विकास की कुंजी हैं तथा ये शहरीकरण के स्तर और गति में वृद्धि से प्रतिकूल रूप से प्रभावित होते हैं।

'महसूस की जाने वाली आवश्यकता' को पैदा करने में प्रेरणा का अभाव एवं चुनौतियों की कमी भी मुख्य कारक हैं जो समाज की रचनात्मक क्षमता को नीचे लाते हैं। आज युवा वयस्कों के जीवन के हर क्षेत्र में मदद करने के लिए उपकरणों की सुविधा है, चाहे यह सोना, कार्य करना, खेलना, भोजन, शिक्षा या यहां तक कि सामाजिकता का क्षेत्र हो। आभासी खेल स्थानों (वर्चुअल प्ले–स्टेशनों) ने खेल के मैदान की जगह ले ली है, उद्यान में काम की परेशानी या यहां तक कि रसोई तैयार करने के बिना रेडीमेड भोजन उपलब्ध है, वातानुकूलित आवास और कार्य स्थलों ने मौसम की समस्याओं को खत्म कर दिया है तथा व्यक्तिगत बातचीत के बजाय नेटवर्किंग साइटें आदर्श बन गई हैं। यह तनाव मुक्त जीवन अल्प चुनौतियां देता है और इसके परिणामस्वरूप दबाव डालने वाली समस्याओं की ओर ध्यान देने की जरूरत नहीं होती है और कोई रचनात्मक प्रक्रिया गति में

नहीं रहती है। कुछ समस्याएं तो जरूर उठती हैं जो अत्यन्त विशेषज्ञता प्राप्त करने के कारण एक बहुत छोटे से लक्ष्य की आबादी के साथ, एक समूह के लिए विशिष्ट हो जाती हैं। ये बिखरी समस्या परिदृश्य सामाजिक–राजनीतिक क्षेत्र में सामाज के लिए किसी भी 'महसूस की जाने वाली आवश्यकता' के निर्माण में खरी नहीं उतरती है और गठबंधन धारणाओं को चलाना मुश्किल हो जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में वर्ष 1990 तक रचनात्मक सोच के टोरेंस टेस्ट द्वारा मापी जाने वाली रचनात्मकता में वृद्धि हुई। इसके बाद स्कोर में कमी आ रही है। संभावित कारणों में टीवी देखने में व्यतीत समय में वृद्धि, कंप्यूटर गेम खेलने में व्यतीत समय में वृद्धि या स्कूलों में रचनात्मकता की शिक्षा का अभाव शामिल है।

यह सैद्धांतीकरण उस विचार का समर्थन करेगा जो उच्च स्तरीय रचनात्मकता को बनाए रखने में हमारे शहरों को क्षति से बचाने तथा कई गुना आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक होगा। फिर भी, जैसे किसी भी चीज का अत्यधिक होना बुरा होता है वैसे ही अत्यधिक अच्छा भी घातक हो सकता है। मूल रचनात्मक प्रक्रियाएं, जो शहर बनाती हैं तथा इसे पूरे वेग से चलाती है, इस शहरी ढ़ांचे को नष्ट कर सकती हैं जिसे ये समर्थन करती हैं।

शहर उन प्रणालियों पर जीवित रहते हैं जो समय के साथ स्थापित होती हैं तथा जो उन मूल्यों को बनाए रखते हैं जो प्रक्रियाओं को परिभाषित करते हैं एवं कारगर बनाते हैं तथा पिछली पीढ़ियों द्वारा सीखे ज्ञान को आगे सौंपते हैं। प्रणाली का यह दृष्टिकोण अनसुलझे मुद्दों और सेक्टरों के समाधान के लिए अधिक समय छोड़ता है जिसमें पुनः संगठित, पुनर्गठन, उन्नयन या अन्य उपायों की आवश्यकता हो सकती है। हालांकि, तीव्र रचनात्मकता में दृढ़ता और कठोरता के नाम पर सभी प्रणालियों से बचकर निकलने की संभावना है और शहरीकरण को क्षति पहुंचाने की संभावना है जो इसका समर्थन करता है। भ्रष्टाचार दुनिया भर में इस्तेमाल किए जाने वाला एक सबसे रचनात्मक 'समस्या' सुलझाने वाले उपकरण के रूप में उभरा है। क्योंकि भ्रष्ट तरीके प्रणालियों का अनुसरण नहीं करते हैं, इसलिए इस तरह के कार्यों का लाभ इच्छुक पक्षों के एक केंद्रित लक्ष्य समूह तक ही सीमित रहता है। बड़े पैमाने पर समाज के लिए योगदान की कमी, आम सुविधाओं, परिसंपत्ति और सुरक्षा जाल को विकसित करने और बनाए रखने के लिए उपलब्ध धन और संसाधनों में कमी से शहरी क्षेत्र को क्षति पहुँचाती है।

इस प्रकार यद्यपि सतत शहरीकरण के लिए एक रचनात्मक समाज आवश्यक गुण है जिसे विकास की तेज एवं सतत गति के लिए पोषित करने की जरूरत है। वहीं, रचनात्मक बलों को शहरी क्षेत्रों के विघटन से बचाने के लिए सर्वहित में श्रेणीबद्ध करने की आवश्यकता है।

जीवन–सूत्र

दुनिया की सबसे दुर्लभ जोड़ी
खुशी और आंसू की होती है।
दोनों का एक साथ मिलना कठिन है,
लेकिन जब दोनों एक साथ होते हैं तो
वह पल बहुत खूबसूरत होता है।

सही आंकलन

ललित मेहता

हर देश की अपनी प्रथाएं, नीतियां एवं अलग पहचान होती है। इसी तरह 326 ई.स.पूर्व चाणक्य के नाम से मगध देश की पहचान बनी और चाणक्य के नाम से ही चाणक्य नाति भी जानी जाती है। उनका निवास स्थान पाटलीपुत्र (पटना) था। तक्षशिला से शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त वह राजनीति के प्राध्यापक बन गए। मगध देश की राजनीति की दशा देखकर उनका मन खिन्न हो गया। चाणक्य ने योजना बनाकर राजनीति में प्रवेश करके देश की अर्थव्यवस्था के लिए सुदृढ़ कार्य किया। देश के शिक्षक, विद्वान और रक्षक–निःस्पृही, चतुर और साहसी होने चाहिएं। इसलिए चाणक्य को "कौटिल्य" भी कहा जाता है।

चाणक्य ने अपने शिष्य चन्द्रगुत मौर्य को मगध देश का राजा बनाया और स्वयं देश के महामंत्री बने। चीन के प्रसिद्ध यात्री फाह्यान ने यह देखकर जब आश्चर्य व्यक्त किया, तब महामंत्री का उत्तर था "जिस देश का महामंत्री (प्रधानमंत्री–प्रमुख) सामान्य कुटिया में रहता है, वहाँ के नागरिक भव्य भवनों में निवास करते हैं, पर जिस देश के मंत्री महालयों में निवास करते हैं, वहाँ की जनता कुटिया में रहती है। राजमहल की अटारियों में, जनता की पीड़ा का आतर्नाद सुनायी नहीं देता।"

प्राचीन काल में ऐसी प्रथा थी कि राज्य की शासन व्यवस्था की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजा राज्य में गुप्तचरों द्वारा गुप्त सूचनाएं एकत्रित करवाता था और तद्नुसार अपने राज्य की कूटनीति का निर्धारण करता था। बुद्धिमान राजा अपने गुप्तचरों को वेष बदल कर पड़ोसी राज्य में भेजता था और दूसरे राज्य की कूटनीतिक चालों का भेद जानकर अपने राज्य की प्रशासन नीति तैयार करता था। इसी नीति के तहत् एक नौजवान अपने ही देश में वेष बदलकर देश की वास्तविकता की जानकारी के लिए कार्य करने लगा किन्तु राजा के गुप्तचरों को इसकी भनक लग गई। वहां के पहरेदारों ने उस अजनबी को पकड़ लिया और उससे पूछा कि तुम कौन हो और कहां से आए हो और कहां जाना है? अजनबी घबरा गया। इससे पहले की वह कुछ कह पाता या बोल पाता, पहरेदार उसे राजा के पास ले गए। राज्य में कई चोरियां हो चुकी थी। राजा ने भी अजनबी को सफाई का मौका दिए बिना ही जल्दबाजी में उसे कठोर कारावास की सजा दे दी। आमतौर पर सजा पाने वाला विरोध करता है किन्तु वह अजनबी सजा को विधि का विधान मानकर सजा भुगतने को तैयार हो गया। कारावास के दौरान वह पूरे मन से सजायाफता कैदियों की सेवा करता और कठोर कारावास के तहत् दी गई सजा के बदले जो काम दिया जाता उसे पूरी ईमानदारी से करता। कभी कोई विरोध नहीं करता, न ही कभी सजा का अफसोस करता। जेलर उसकी कार्य प्रवृत्ति से अचंभित था। समय–समय पर राजा को दी जाने वाली गुप्त जानकारियों द्वारा जेलर ने राजा को साफ कह दिया कि उक्त कैदी को दी गई सजा का पुनः मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

राजा जेलर की गुप्त सलाह पर पूरा भरोसा करता था इसलिए राजा ने तुरन्त उस कैदी को अपने सम्मुख उपस्थित करने का आदेश दिया। राजा के आदेश का पालन करते हुऐ कैदी सिर झुकाए बेड़ियों में जकड़ा राजा

के दरबार में उपस्थित हुआ। राजा ने पूछा तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना हैं। कैदी ने सिर हिलाते हुए मना कर दिया। गुप्तचरों की राय से राजा उसकी सेवा भावना से स्वयं परिचित था। राजा भी जान गया था कि उसने भी बिना सोचे समझे जल्दबाजी में उस कैदी को सजा दे दी। फिर भी वह कैदी कोई विरोध न करते हुऐ राजा के फैसले का आदर कर सजा भुगतने को तैयार हो गया। राजा ने कहा तुम्हें इस फैसले के लिए अपनी राय देनी होगी।

आखिरकार कैदी को राजा के आदेश का सम्मान करते हुए बोलना पड़ा और वह बोला, महाराज पानी अगर अपने स्वभाव में रहता है, तो उसे पी सकते है, किन्तु पानी उबला हुआ हो तो उसे पीने पर मुख एवं गला पूरा जल जाएगा। अतः पानी को ठंड़ा होने दीजिए फिर उसे पी सकेंगे। राजा अपनी गलती के लिए प्रायश्चित करने लगा कि यह उसने क्या कर दिया। राजा समझ गया कि यह कोई साधारण मनुष्य नहीं है। यह अवश्य कोई महापुरुष है। राजा बहुत बुद्धिमान था, स्थिति को तुरन्त समझ गया।

राजा ने उसकी सजा माफ कर दी और ऐलान कर दिया कि इसे राज्य का अहम मंत्री बनाकर उसकी सेवाएं राज्य के लिए लेगा। किन्तु राजा ने कहा कि पहले उसे बताना होगा कि वह कौन है? कैदी अपने असली वेष में आ गया। राजा और उसके मंत्री दांतों तले उंगली दबाकर स्तब्ध रह गए। वह चाणक्य था जो राजा से यह कहकर गया था कि पड़ोसी राज्य में उसकी कूटनीति की चाल मालूम करके आएगा। राजा ने पूछा कि यह क्या है? चाणक्य बोला महाराज, दूसरे राज्य का हाल पता करने से पहले अपने राज्य का हाल पता करना ज्यादा आवश्यक है।

राजा चाणक्य की नीति का कायल हो गया। राजा समझ गया कि सही वक्त पर **सही आंकलन** करना अत्यावश्यक है तभी राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था ठीक हो सकेगी। चाणक्य को राज्य की अर्थव्यवस्था की नीति बनाने के लिए जाना जाता है। इसलिए चाणक्य नीति को आज भी कूटनीति कहा जाता है। चाणक्य से बढ़कर आज तक कोई अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ पैदा नहीं हुआ। चाणक्य को स्वार्थ त्याग, निर्भीकता एवं साहस की साक्षात मूरत माना जाता है।

आयुर्वेदिक दोहे

रोटी मक्के की भली, खा लें यदि भरपूर।
बेहतर लीवर आपका, टी.बी. भी हो दूर।।

****

गाजर रस संग आंवला, बीस औ चालिस ग्राम।
रक्तचाप हृदय सही, पाएं सब आराम।।

****

दही मथें माखन मिले, केसर संग मिलाय।
होंठो पर लेपित करें, रंग गुलाबी आय।।

****

ठण्ड लगे जब आपको, सर्दी से बेहाल।
नीबू मधु के साथ में, अदरक पिएं उबाल।।

झूठा मोह

रणसिंह सैनी

आज मरा है, कल भूलेंगे,
ये है अपनी परम्परा।
कौन किसी के संग है आया,
कौन किसी के संग मरा।
ये मेरा बेटा, ये मेरी बेटी,
ये है मेरी पटरानी।
मरने के बाद, करें श्राद्ध,
जीते जी नहीं दें पानी।
जोड़–जोड़ कर धरले बन्दे,
सब कुछ रहजा यहीं धरा।
आज मरा है, कल भूलेंगे,
ये है अपनी परम्परा।
कौन किसी के संग है आया,
कौन किसी के संग मरा।
पांच नाम का मणका ले ले,
उस मालिक को करले याद।
बेदर्द हाकिम यहां पर बैठे,
तेरी कौन सुने फरियाद।
नेक कमा ले, रझकै खा ले,
क्यों रहता है डरा–डरा।
आज मरा है, कल भूलेंगे,
ये है अपनी परम्परा।
कौन किसी के संग है आया,
कौन किसी के संग मरा।
उस मालिक को रट ले प्यारे,
जो सब का बेड़ा करते पार।
झूठ कपट और छल छोड़ दे,
नहीं तो डूब मरे मझदार।
मेहर फिरै जब उस दाता की,
सूखा चमन हो जाए हरा।
आज मरा है, कल भूलेंगे,
ये है अपनी परम्परा।
कौन किसी के संग है आया,
कौन किसी के संग मरा।
नर तन बख़्शा उस ईश्वर नें,
मत ना दाग लगाना तू।
हाथ दिये हैं दान करन को,
खूब धर्म कमाना तू।
बाँहों में भर लेगा ईश्वर,
जब तू उतरे अति खरा।
आज मरा है, कल भूलेंगे,
ये है अपनी परम्परा।
कौन किसी के संग है आया,
कौन किसी के संग मरा।

जल : सबसे अनमोल सीमित संसाधन

आभा अग्रवाल

डब्ल्यू एच अडेन ने कहा था कि ''हजारों लोग प्यार के बिना रहे हैं, लेकिन एक भी व्यक्ति जल के बिना नहीं रहा।''

जल मानव जीवन के लिए अत्यावश्यक है क्योंकि वह हर मानव गतिविधि जैसे खेतीबाड़ी, उद्योग, ऊर्जा, परिवहन और रोजगार के लिए जरूरी है। जल के बिना इंसान का जीवन असंभव है। यह अनुमान लगाया गया है कि पूरे विश्व में घरेलू उपयोग के लिए 10 प्रतिशत, औद्योगिक कार्य के लिए 20 प्रतिशत और खेतीबाड़ी के लिए 70 प्रतिशत जल का उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त, अक्सर जल का काफी भावनात्मक एवं प्रतीकात्मक मूल्य है और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र को बनाए रखने के लिए जल बहुत महत्वपूर्ण है।

पृथ्वी के जल का अधिकांश भाग नमकीन जल के रूप में है जिसमें से केवल 2.5 प्रतिशत स्वच्छ जल है। पृथ्वी पर पाए जाने वाला लगभग 70 प्रतिशत स्वच्छ जल अंटार्कटिका और ग्रीनलैंड में बर्फ के रूप में जमा हुआ है, शेष 30 प्रतिशत जल (विश्वभर के कुल जल संसाधनों के केवल 0.7 प्रतिशत के बराबर) इस्तेमाल के लिए उपलब्ध है।

तेजी से बढ़ती जनसंख्या, बढ़ते शहरीकरण, प्रदूषण, आर्थिक विकास आदि कारणों से स्वच्छ जल की आवश्यकता बढ़ती जा रही है और पूरे संसार में जल की कमी की समस्या बहुत गंभीर रूप धारण कर रही है। यह अनुमान लगाया गया है कि भविष्य में ये समस्या हमेशा बढ़ती ही जाएगी क्योंकि वर्षा की जगह और समय के बहुत असमान होने के कारण विश्वभर में जल के संसाधनों मे जबरदस्त परिवर्तन होगा। चिली स्थित अटाकामा रेगिस्तान में वर्षा की वार्षिक मात्रा न के बराबर है और भारत स्थित मौसीनराम में हर वर्ष 450 इंच वर्षा होती है। तापमान एवं सापेक्ष आर्द्रता के आधार पर वाष्पीकरण की दर बदलती रहती है जो भूमिगत जल आपूर्ति की पुनः पूर्ति के लिए उपलब्ध जल की मात्रा को प्रभावित करती है।

कृषि में जल प्रबंधन के विस्तृत मूल्यांकन के अनुसार तीन में से एक व्यक्ति को जल की कमी का सामना करना पड़ रहा है। लगभग 1.2 अरब लोग या विश्व की जनसंख्या का लगभग 1/5 भाग जल की वास्तविक कमी वाले क्षेत्रों में रहता है, जबकि अन्य 1.6 अरब लोग या विश्व की जनसंख्या का 1/3 भाग विकासशील देशों में रहता है जहां नदियों एवं जलभृतों से जल लेने के लिए आवश्यक बुनियादी ढ़ाचे की कमी है।

वैश्विक जल मुद्दे

पृथ्वी की सतह जल से ढकी हुई है जिसमें 99 प्रतिशत समुद्री जल है और बाकी ग्लेशियर (स्वच्छ जल संसाधन) के नीचे दबा है (यूएनईपी 2008), बचा हुआ एक प्रतिशत जल मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। विश्व बैंक का अनुमान है कि अब और 2030 के बीच जल की मांग में 50 प्रतिशत से ज्यादा की वृद्धि होगी (विश्व बैंक 2007)। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन ने अनुमान लगाया है कि 2.8 अरब लोग पहले से ही जल संकट वाले क्षेत्र में रहते हैं और 2025 तक विश्व की जनसंख्या के 2/3 भाग के इससे प्रभावित होने की उम्मीद है। (एफएओ 2011) (आकृति 1)

आकृति 1: जल संसाधनों एवं जल मांग के बीच बढ़ता अंतर

जो हमारे पास है:

संसाधन की सीमित आपूर्ति जो प्रतिस्थापन योग्य नहीं है।

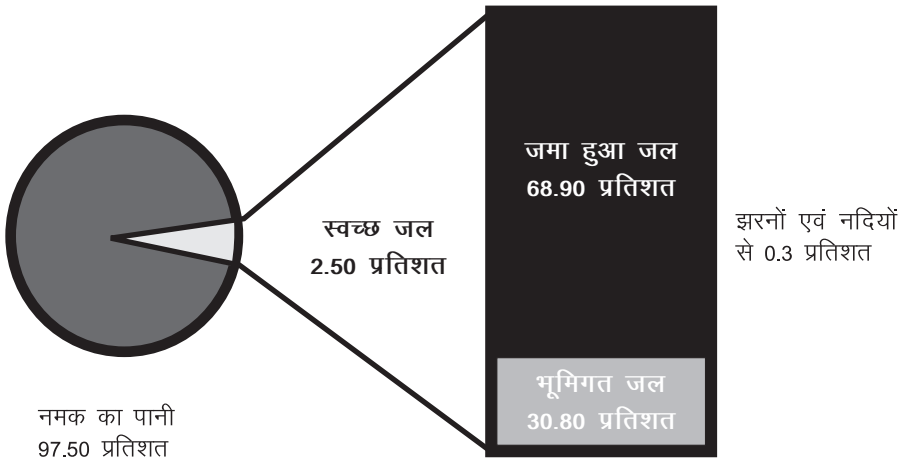

स्रोतः यूएनईपी वाइटल वाटर ग्राफिक्स 2008

जिसकी हमें आवश्यकता है:

हमारी बढ़ती जनसंख्या को देने के लिए बेहतर जल उत्पादकता

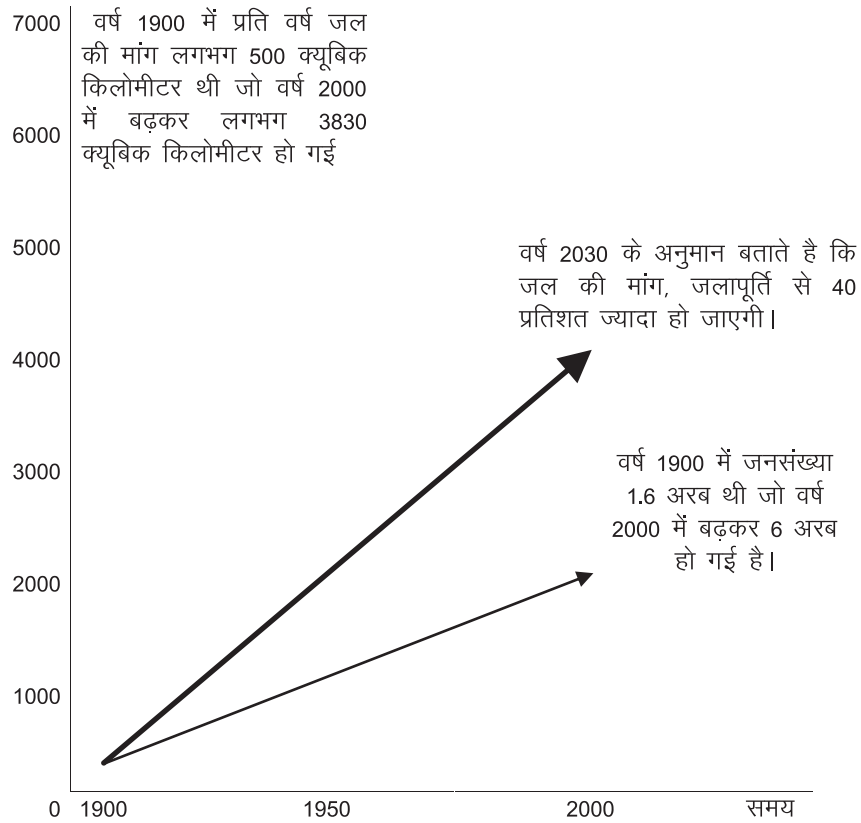

स्रोतः विश्व बैंक (2007), जल संसाधन समूह 2030

जल की कमी और जल प्रदूषण का आपस में बहुत गहरा संबंध है क्योंकि जल मानव जीवन, जीविका और आर्थिक उत्पादों (कृषि, औद्योगिक उत्पादन और बिजली पैदा करना) आदि के लिए परम आवश्यक है। जल की कमी के कारण कृषि संबंधी एवं औद्योगिक उत्पादन कम हो जाते हैं। आर्थिक विकास रूक जाता है जिसके कारण गरीबी बढ़ती है एवं पर्यावरण के क्षरण में वृद्धि होती है। जल अभाव से अक्सर जल की गुणवत्ता पर असर पड़ता है। इस प्रकार जो संचालक जल की मांग बढ़ाते है वे ही अपशिष्ट जल स्राव को भी बढ़ाते हैं। आकृति 2 देखें।

आकृति 2: जल की कमी एवं जल प्रदूषण से संबंधित मुद्दे अक्सर आपस में जुड़े होते हैं।

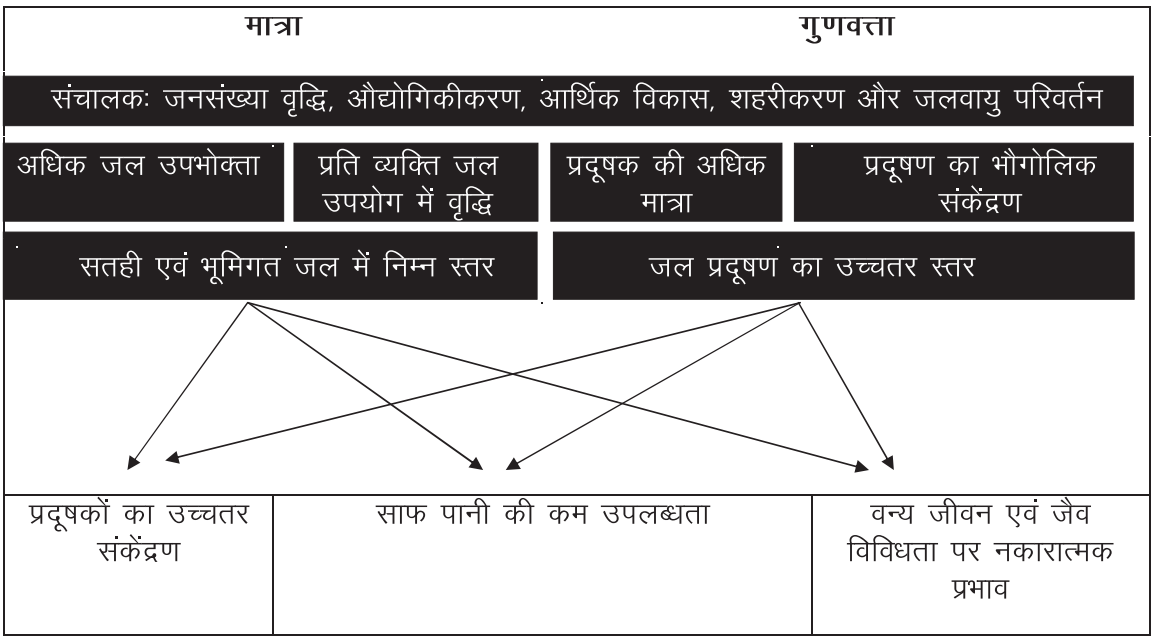

जल एवं हिंसक संघर्ष

साफ पानी की आवश्यकता पूरे संसार में लड़ाई/बहस का कारण बन रही है क्योंकि जनसंख्या की बढ़ोतरी, पर्यावरण दुरुपयोग और खराब जल प्रबंधन के कारण जल की कमी होती जा रही हैं। प्रागैतिहासिक जनजातियों में आग को लेकर लड़ाई होती थी, उसी प्रकार अगले कुछ वर्षों में जल की कमी के कारण देशों के बीच कुछ भी हो सकता है। यह समस्या संसार के उन देशों में और ज्यादा गंभीर होती जा रही है जिनमें जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है और वहां के जल संसधानों को अक्सर गंवाया अथवा प्रदूषित किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों में यह अनुमान लगाया गया है कि विश्व में पानी के लिए इस तरह के लगभग 300 संघर्ष हो सकते हैं जिसकी शुरूआत नदियों पर तकरार से लेकर जल लेने के लिए और जलभृतों से जल निकालने से जुड़ी हुई हैं। मध्य एशियाई देशों मिश्र, सूडान, इथोपिया, इजराइल, भारत, पाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, कजाकिस्तान, तजाकिस्तान, मोजाम्बिक, जाम्बिया आदि देशों में नदी में बह रहे जल के बंटवारे को लेकर झगड़े होने की संभावना है। इसी तरह पीने के पानी की कमी के कारण नागरिक और सरकार के बीच में पानी की कीमत, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अवसंरचना संबंध, सेवा जवाबदेही आदि के कारण तनाव होता है।

जल संरक्षणः समय की मांग

महात्मा गांधी जी ने कहा है ''पृथ्वी हर इंसान की आवश्यकता की पूर्ति के लिए बहुत कुछ देती है लेकिन हर इंसान के लालच की पूर्ति के लिए नहीं।'' जल की गंभीर समस्या को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 22 मार्च, 1993 को विश्व जल दिवस के रूप में निर्धारित किया गया है। इस दिन का यह उद्देश्य है कि विश्व में जल

और ऊर्जा के केन्द्र में सुस्थिर प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित करें। यह जल एवं ऊर्जा क्षेत्र के बीच निकट संबंध को भी प्रदर्शित करता है और कैसे वे एक–दूसरे के पूरक हैं और पृथ्वी पर जीवन संभव बनाते हैं। इस दिन को इस उद्देश्य के साथ मनाया जाता है कि जल संरक्षण की आवश्यकता के बारे में जनता को शिक्षित किया जा सके और उन्हें इस बहुमूल्य संसाधन को बर्बाद नहीं करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। विश्व जल दिवस पर विकासशील देशों में जल की सफाई को बेहतर बनाने के लिए साधारण लेकिन सस्ते उपायों के प्रति लोगों की जागरूकता को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाता है। यूएन समर्थित पैनल, विश्व जल आयोग द्वारा अनुमान लगाया गया है कि लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जल में निवेश एक वर्ष में दुगुना होकर 180 अरब डॉलर हो जाएगा और केवल निजी क्षेत्र ही इस स्तर पर पूंजी लगा सकते हैं।

सम्पूर्ण विश्व के नागरिकों को यह अवश्य समझना चाहिए कि जल एक सीमित संसाधन है और प्रदूषण, जनसंख्या, ग्लोबल वार्मिंग इत्यादि की वजह से इसके स्रोत तेजी से समाप्त होते जा रहे हैं। इसी कारण पानी की हर बूंद की बहुत अहमियत है और हम अपनी जीवन शैली में सुधार लाकर पानी की बचत कर सकते हैं जैसे कि टपकती पाइपलाइन को ठीक करना, नहाने के लिए कम पानी का इस्तेमाल करना, एक बाल्टी पानी से कार को धोना आदि। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हमारे जल संसाधनों का प्रबंध करने के लिए सुस्थिर रूप से स्वच्छ जल संसाधनों का संवर्धन एवं जल संरक्षण की समग्र योजना तैयार करना है। जलापूर्ति के वैकल्पिक स्रोतों जैसे समुद्री जल और सीवेज परिशोधित जल के इस्तेमाल को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

पानी को बचाने के कुछ और भी तकीनीकी उपाय हैं जो सरकारी संस्थानों, नगर नियोजकों और जल से संबंधित संस्थानों द्वारा कार्यान्वित किए जा सकते हैं, जैसेः–

1. बड़े भवनों में ऊर्जा सहित पानी के इस्तेमाल में कमी लाने के लिए गैर–आवासीय भवन का डिजाइन, निर्माण और प्रचालन करना क्योंकि इससे टॉवर को ठण्डा करने में पानी के इस्तेमाल में कमी आती है।
2. कुशल प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल, जल लेखापरीक्षा और स्थानीय जल उपयोग प्रोत्साहन योजना को बढ़ावा देकर व्यक्तिगत व्यवहार में बदलाव लाकर घरों में पानी के इस्तेमाल को कम करना।
3. रिसाइकिल प्रौद्योगिकी द्वारा वर्षा के पानी, गंदे पानी आदि को रीसायकल करना, एकत्रित करना एवं पुनः उपयोग में लाना।
4. देशी और अनुकूल वनस्पति पर बल देते हुए प्रभावशाली सिंचाई प्रौद्योगिकी के साथ घरों और भवनों में लैंडस्केपिंग में पानी के इस्तेमाल को कम करना।
5. जल रिसाइकिलिंग की अनुमति देने के लिए नई जल प्रौद्योगिकी समायोजित करने हेतु भवन कोड में परिवर्तन की आवश्यकता है।
6. जल एजेंसियों द्वारा दर संरचना में भवन जल संरक्षण निर्धारण करके जल संरक्षण के लिए नकद प्रोत्साहन देकर जनता के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है।
7. पानी की कीमतों को इस प्रकार निर्धारित किया जाए ताकि दरें अधिक हों। पानी बर्बाद करने और अत्यधिक पानी इस्तेमाल करने वालों पर आर्थिक दण्ड भी लगाया जाए।
8. पानी के इस्तेमाल के प्रत्येक पहलू को मापें – 'जिसको मापा जा सकता है उसका प्रबंधन किया जा सकता है' और वितरण के दौरान पानी की क्षति को खत्म करें।

स्वच्छ पेयजल हर आदमी की जरूरत है क्योंकि यह सिर्फ महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन ही नहीं है बल्कि प्राकृतिक आर्थिक संसाधन है जिसको आने वाली पीढ़ियों के लिए उपलब्ध कराना और बचाकर रखना हमारी जिम्मेदारी है।

पृथ्वी रहेगी तो जीवन बचेगा

सुबोध कुमार श्रीवास्तव

ग्लोबल वार्मिंग आज पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर चुनौती बन गई है। सबसे अजीब बात यह है कि जो विकसित देश इस समस्या के लिए अधिक जिम्मेदार हैं वो ही विकासशील व अन्य देशों पर इस बात के लिए दबाव बना रहे हैं कि ऐसा विकास न करें जिससे धरती का तापमान बढ़े। हालांकि वो खुद अपनी बात पर अमल नहीं करते लेकिन दूसरे देशों को शिक्षा देते हैं। बहरहाल बात चाहे जो हो, विभिन्न देशों के आपसी विवाद में नुकसान केवल हमारी पृथ्वी का ही है।

पृथ्वी पर कल–कल बहती नदियां, माटी की सोंधी महक, विशाल महासागर, ऊंचे–ऊंचे पर्वत, तपते रेगिस्तान सभी जीवन के असंख्य रूपों को अपने में समाए हुए हैं। वास्तव में अन्य ग्रहों की अपेक्षा पृथ्वी पर उपस्थित जीवन इसकी अनोखी संरचना, सूर्य से दूरी एवं अन्य भौतिक कारणों के कारण संभव हो पाया है। इसलिए हमें पृथ्वी पर मौजूद जीवन के विभिन्न रूपों का सम्मान और सुरक्षा करनी चाहिए। परंतु पिछले कुछ दशकों के दौरान मानवीय गतिविधियों एवं औद्योगिक क्रांति के कारण पृथ्वी का अस्तित्व संकट में पड़ता जा रहा है। दिशाहीन विकास के चलते इंसानों ने प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया है। परिणामस्वरूप आज हवा, पानी और मिट्टी अत्यधिक प्रदूषित हो चुके हैं। इस प्रदूषण के कारण कहीं लाइलाज गंभीर बीमारियां फैल रही हैं तो कहीं फसलों की पैदावार प्रभावित हो रही है। कोयला, पेट्रोल, केरोसिन जैसे जीवाश्म ईंधनों के दहन से वातावरण में ऐसी गैसों की मात्रा बढ़ रही है जिससे पृथ्वी के औसत तापमान में इजाफा हो रहा है यानी ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उत्पन्न होती जा रही है। यह अन्य जीवों के साथ–साथ मानव के अस्तित्व के लिए भी खतरा उत्पन्न कर रहा है।

इसकी महत्ता को समझते हुए प्रत्येक वर्ष 22 अप्रैल को विश्व पृथ्वी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसकी शुरूआत सर्वप्रथम 1970 में संयुक्त राज्य अमेरिका से की गई थी। तभी से स्वच्छ पर्यावरण के लिए जागरूकता बढ़ाने के लिए पूरे विश्व में प्रतिवर्ष पृथ्वी दिवस मनाया जाने लगा है। असल में विश्व पृथ्वी दिवस ऐसा अवसर है जब हम पृथ्वी को जीवनदायी बनाए रखने का संकल्प ले सकते हैं। इस साल पृथ्वी दिवस की 42वीं वर्षगांठ की वैश्विक थीम 'मोबलाइज द अर्थ' यानी पृथ्वी प्रदत्त संसाधनों का उपयोग करना एवं संकटों से उसकी रक्षा करना है। सूरज से पृथ्वी की दूरी करीब 14 करोड़ 96 लाख किलोमीटर है। यह दूरी ही पृथ्वी ग्रह को पूरे सौर मंडल में विशिष्ट स्थान देती है। इसी दूरी के कारण यहां पानी से भरे महासागर बने, ऊंचे पहाड़ बने, रेगिस्तान, पठार और सूरज की लगातार मिलती ऊर्जा और पृथ्वी के गर्भ में मौजूद ताप से यहां जीवन के विभिन्न रूप संभव हुए हैं।

पेड़–पौधे और अन्य वनस्पतियां, पशु–पक्षी तथा इंसान रूपी जीव–जंतु, यहां तक कि सूक्ष्मजीव आदि के जीवन में ऊर्जा का स्रोत सूर्य की ऊष्मा ही है। कैसा अजीब संयोग है कि सूर्य से दूर होने के साथ–साथ पृथ्वी एक कोण पर झुकी हुई है, जिस कारण अलग–अलग ऋतुएं, मौसम, जलवायु बनें और जीवन में विविधता पैदा

हुई। इस ग्रह पर प्रकृति को जीवन जुटाने में लाखों वर्ष लगे। धरती पर कई जटिल प्रणालियां पूरे सामंजस्य से लगातार कार्य करती रहती हैं जिस कारण जीवन हर रंग–रूप में फल–फूल रहा है। पृथ्वी पर मौजूद जीवनदायी पानी के कारण ही यह ग्रह अंतरिक्ष से नीला दिखाई देता है। सूर्य और पृथ्वी के आपसी मेलजोल से ही इसके आसपास हवाओं और विभिन्न गैसों के आवरण यानी वायुमंडल का निर्माण हुआ। इसी वायुमंडल की परत ने जीवन को हानि पहुंचाने वाली सूर्य की हानिकारक किरणों को पृथ्वी पर पहुंचने से रोक रखा है।

कितने आश्चर्य की बात है कि हजारों वर्षों से वायुमंडल की विभिन्न परतों में गैसों का स्तर एक ही बना हुआ है। जीवन की शुरूआत भले ही पानी में हुई परंतु इसी जीवन को बनाए रखने के लिए प्रकृति ने ऐसा पर्यावरण दिया कि हर कठिन परिस्थिति से निपटने में जीवन सक्षम हो सका है। पर्यावरण का तात्पर्य है हमारे या किसी वस्तु के आसपास की परिस्थितियों या प्रभावों का जटिल मेल जिसमें वह वस्तु, व्यक्ति या जीवन स्थित है या विकसित होते हैं। इन परिस्थितियों द्वारा उनके जीवन या चरित्र में बदलाव आते हैं या तय होते हैं। पूरे विश्व में आजकल पर्यावरण शब्द का काफी उपयोग किया जा रहा है। कुछ लोग पर्यावरण का मतलब जंगल और पेड़ों तक ही सीमित रखते हैं तो कुछ जल और वायु प्रदूषण से जुड़े पर्यावरण के पहलुओं को ही अपनाते हैं। आजकल लोग ग्लोबल वार्मिंग यानी भूमंडलीय तापन मतलब गर्माती पृथ्वी और ओजोन के छेद तक पर्यावरण को सीमित कर देते हैं, तो कई परमाणु ऊर्जा एवं बड़े–बड़े बांधों का बहिष्कार कर सौर ऊर्जा और छोटे बांधों को अपनाने की बात कह कर अपना पर्यावरण के प्रति दायित्व पूरा समझ लेते हैं।

ऐसे में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आखिर पर्यावरण की वास्तविक परिभाषा है क्या? सर्वप्रथम तो हमें यह तय करना होगा कि हम किस वस्तु या प्राणी विशेष के पर्यावरण की व्याख्या कर रहे हैं। फिर पर्यावरण का अर्थ समझना आसान है। उदाहरण के लिए हमारे अपने पर्यावरण का अर्थ होगा, हमारे आसपास की हर वह वस्तु चाहे वह सजीव हो या निर्जीव जिसका हम पर या हमारे रहन–सहन पर या हमारे स्वास्थ्य पर एवं हमारे जीवन पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, निकट या दूर भविष्य में, कोई प्रभाव हो सकता है और साथ ही ऐसी हर वस्तु जिस पर हमारे कारण कोई प्रभाव पड़ सकता है। यानी पर्यावरण में हमारे आसपास की सभी घटनाओं जैसे मौसम, जलवायु आदि का समावेश होता है, जिन पर हमारा जीवन निर्भर करता है। यह सृजनात्मक प्रकृति एक बहुत ही नाजुक संतुलन पर टिकी है जिसने हमें जीवन और जीवन के लिए आवश्यक वातावरण दिया है। अगर हम वायुमंडल को ही लें तो संपूर्ण वायुमंडल सबसे उपयुक्त गैसों के अनुपात से बना है जो जीवन के हर रूप, उसकी विविधता को संजोए रखने में सक्षम है।

जीवन–सूत्र

मंजिलें उनको मिलती हैं,
जिनके सपनों में जान होती है।
सिर्फ पंखों से कुछ नहीं होता, दोस्तों
हौसलों से उड़ान होती है।

हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन मास–2013 के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राकेश द्विवेदी, निदेशक (रा.भा.), शहरी विकास मंत्रालय, विशिष्ठ अतिथि श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, अनुसंधान अधिकारी, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का स्वागत, दीप प्रज्जवलन, गृह पत्रिका 'नियोजन संदेश' का विमोचन तथा पुरस्कार ग्रहण करते हिंदी प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगी।

हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन मास–2013 के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राकेश द्विवेदी, निदेशक (रा.भा.), शहरी विकास मंत्रालय एवं विशिष्ठ अतिथि श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, अनुसंधान अधिकारी, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से पुरस्कार ग्रहण करते हिंदी प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगी।

हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन मास–2013 के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राकेश द्विवेदी, निदेशक (रा.भा.), शहरी विकास मंत्रालय एवं विशिष्ठ अतिथि श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, अनुसंधान अधिकारी, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से पुरस्कार ग्रहण करते हिंदी प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगी।

हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन मास–2013 के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर पुरस्कार ग्रहण करते हिंदी प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगी, कवियों का स्वागत एवं कविताओं का आनंद लेते अधिकारी एवं कर्मचारी।

जापान की इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली से सीख एवं सिफारिशें

उदित रत्न

परिचय

जापान की कुल 1164.80 लाख की आबादी में से 91.14 प्रतिशत शहरी आबादी है (वर्ष 2011)। जापान में कुल नगरपालिकाओं की संख्या 1718 है जिसमें 790 शहर, 745 कस्बे एवं 183 गांव सम्मिलित हैं। जापान की राजधानी टोक्यो (8.33 मिलियन जनसंख्या) राष्ट्र का सबसे बडा महानगर है। योकोहामा (3.57 मिलियन), ओसाका (2.59 मिलियन), नागोया (2.19 मिलियन), सपोरो (1.88 मिलियन), कोबे (1.52 मिलियन), फुकुओका (1.39 मिलियन), कावासाकी (1.3 मिलियन) और सैतमा (1.19 मिलियन) जापान के अन्य महत्वपूर्ण शहर हैं।

टोक्यो शहर अधिक भीड़–भाड़ वाला है। टोक्यो मेट्रोपोलिटन एरिया की 50 किलोमीटर की परिधि के भीतर रहने वाले लगभग 30 लाख लोग हैं। आज टोक्यो मेट्रोपोलिटन एरिया में रोजगार का सबसे बड़ा अनुपात टोक्यो के 23 वार्डों में पाया जाता है। योकोहामा, टोक्यो, चिबा और कावासाकी जैसे गहरे पानी वाले बड़े बंदरगाह आर्थिक गतिविधियों से जुड़े हुए हैं।

चित्र 1

मॉडल शेयर के रूप में टोक्यो की परिवहन प्रणाली, जापान के अधिकतर अन्य शहरों अथवा अन्य देशों के बड़े शहरों की तुलना में बेजोड़ है। जापान में सार्वजनिक परिवहन रेलवे परिवहन की सर्वाधिक हिस्सेदारी है। रेलवे परिवहन को जे आर (41 प्रतिशत), मेट्रोपोलिटन गवर्नमेंट ऑफ टोक्यो–टीटो रेपिड ट्रांजिट प्राधिकरण (12 प्रतिशत) और निजी रेलवे कम्पनियों (47 प्रतिशत) द्वारा संचालित किया जाता है। रेल परिवहन जापान की सर्वाधिक प्रचलित परिवहन प्रणाली है। यात्री प्रायः आने–जाने के लिए कार का प्रयोग नहीं करते हैं। जहां एक ओर रेल का नेटवर्क अत्यधिक विकसित है और रेलगाड़ियों की बारम्बारता भी काफी अधिक है, वहीं दूसरी ओर टोक्यो शहर में पार्किंग की जगह दुर्लभ और महंगी है और एक्सप्रेसवे पर अधिक टोल लगाने के कारण सड़क परिवहन महंगा है। जापान के अन्य बड़े शहरों की तुलना में टोक्यो में यात्री कारों का उपयोग असामान्य है। टोक्यो वासी अपनी कारों से अधिक टैक्सियों पर भरोसा करते हैं। नतीजतन, 50,000 टैक्सियां टोक्यो महानगर में चलती हैं। जापान के शहर साइकिल उपयोग के लिए भी सर्वथा उपयुक्त हैं (चित्र 1 एवं 2 देखें)।

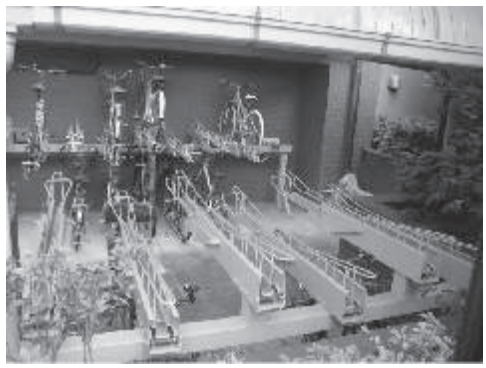

चित्र 2

वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मुझे 15 जुलाई, 2014 से 8 अगस्त, 2014 तक टोक्यो में आयोजित "समूह एवं क्षेत्र – इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली" पर केंद्रित प्रशिक्षण में भाग लेने का अवसर प्रदान किया गया। उक्त प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य सरकारी अधिकारियों को आवश्यक जानकारी एवं तकनीक प्रदान करते हुए

प्रत्येक देश में इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली को शुरू करने की जानकारी का प्रसार करने में सक्षम बनाना था। दुनिया भर के 14 देशों अर्थात थाईलैंड, म्यांमार, फिलीपींस, वियतनाम, इंडोनेशिया, भारत, बांग्लादेश, श्रीलंका, मिस्र, तुर्की, ब्राजील, नाइजीरिया, जॉर्जिया और अजरबैजान से 21 प्रतिभागियों को चुना गया जिन्होंने उक्त विषय पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

जापान में इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली का विकास

इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली मार्ग चयन, यात्रा के समय, साधन बदलने (मोड शिफ्ट) पर फैसला, यातायात संकेतों के अनुकूलन, आदि के मामले में उपयोगकर्ताओं को एक बेहतर जानकारी के साथ निर्णय लेने में मदद करती है।

इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली में अवधारणात्मक सूचना प्रौद्योगिकी (सेंसर), स्थान प्रौद्योगिकी (पोजिशनिंग), मानचित्र सूचना प्रौद्योगिकी (मानचित्रण), सूचना संचार प्रौद्योगिकी (संचार), सूचना नेटवर्क प्रौद्योगिकी (नेटवर्क) और मानव मशीन इंटरफेस शामिल हैं।

भीड़–भाड़ कम करने के लिए इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली उपाय

जापान में भीड़–भाड़ को कम करने के लिए निम्नलिखित उपायों को अपनाया गया हैः–

उन्नत यातायात प्रबंधन

इसमें गत्यावरोधक चौराहों की क्षमता में वृद्धि करना शामिल है।

डायनेमिक यात्री सूचना प्रणाली

इस उपाय में गत्यावरोधक पर केंद्रित मांग को कम समय लेने वाले मार्गों (कम दूरी वाले मार्गों) में बांट दिया जाता है।

इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह

इस प्रक्रिया में टोल बूथों की क्षमता में वृद्धि की जाती है। वैकल्पिक तौर पर भीड़–भाड़ की बढ़ती मांग को 'डायनेमिक कंजेशन चार्जिंग' द्वारा अन्य मार्गों/क्षेत्रों में बांट दिया जाता है।

उन्नत सार्वजनिक परिवहन प्रणाली

इस प्रक्रिया में मांग को अन्य सार्वजनिक परिवहन साधनों में बांटा जाता है ताकि किसी एक परिवहन साधन पर बोझ न पड़ सके ।

जापान में इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली के लिए सिस्टम आर्किटेक्चर

इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली के प्रभावी कार्यान्वयन में चार मंत्रालय और एक एजेंसी अर्थात् राष्ट्रीय पुलिस एजेंसी, आंतरिक मामला और संचार मंत्रालय, आर्थिक, व्यापार और उद्योग मंत्रालय तथा भूमि, अवसंरचना, परिवहन और पर्यटन मंत्रालय शामिल हैं। जापान में इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली के लिए सिस्टम आर्किटेक्चर 5 नवम्बर, 1999 को लागू किया गया था। इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली सिस्टम, आर्किटेक्चर इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली की योजना बनाने, परिभाषित करने, परिनियोजित करने और एकीकृत करने के लिए रूपरेखा प्रदान करता है। इस प्रकार इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली आर्किटेक्चर उन उपयोगकर्ता सेवाओं को परिभाषित करता है जिनकी इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली और अनुप्रयोगों से निष्पादन की उम्मीद होती हैं। विशिष्ट उपयोगकर्ता

सेवाओं में यात्री को जानकारी उपलब्ध कराना, यातायात प्रबंधन करना, इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह करना, चालकों को बेहतर कार्य निष्पादन में सहायता करना (विशेष रूप से आपातकालीन स्थितियों में), यातायात दुर्घटनाओं पर सूचना भेजना, सार्वजनिक और निजी वाहनों के बेड़े का प्रबंधन करना, आदि शामिल हैं। यह एन्टिटी है जहां सूचना प्रणाली तंत्र जुडे हैं। एन्टिटी के तहत यात्री और प्रणाली प्रशासक जो इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली अनुप्रयोगों के साथ बातचीत करते हैं, उन्हें सूचना भेजते हैं और उनसे सूचना एवं सेवाएं प्राप्त करते हैं। एन्टिटी प्रणाली के तहत इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह प्रणाली (ईटीसी) या पार्किंग टिकट प्रबंधन इत्यादि सम्मिलित हैं जो इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली उपयोगकर्ता सेवाओं के निष्पादन में सहायता करती है। आर्किटेक्चर सूचना प्रवाह एवं डाटा प्रवाह कार्यों और एन्टिटी को जोड़ता है। इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली आर्किटेक्चर इस बात को दर्शाता है कि इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली क्या करती है, (उपयोगकर्ता सेवाएं), यह कहां होती है (एन्टिटी) और इन घटकों के बीच कौन सी सूचना चलती है (प्रवाह)।

संचार प्रौद्योगिकी

यातायात नियंत्रण केंद्र

यातायात की सुरक्षा एवं उसको सुप्रवाही बनाकर पर्यावरण के अनुकूल यातायात समाज की स्थापना करने में यातायात नियंत्रण केंद्र एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह केंद्र यातायात की जानकारी एकत्र करता है, उसका विश्लेषण करता है उसके बाद इसे जनता को उपलब्ध कराता है। इसके अलावा यह केंद्र ट्रैफिक जाम से निपटने के लिए यातायात संकेतों को नियंत्रित करता है (चित्र 3 देखें)।

चित्र 3: यातायात नियंत्रण केंद्र, टोक्यो मेट्रोपोलिटन पुलिस विभाग, टोक्यो

वाहन सूचना और संचार प्रणाली (वीआईसीएस)

वाहन सूचना और संचार प्रणाली टोक्यो मेट्रोपोलिटन एरिया में वर्ष 1996 से चल रही है। इस प्रणाली का लक्ष्य चालकों के लिए सुविधाओं में सुधार करना और यातायात जाम, यातायात प्रतिबंधों, यातायात दुर्घटनाओं एवं पार्किंग स्थलों के बारे में सूचना प्रदान करना है। इस प्रणाली का उद्देश्य इन लाभों को प्रदान करते हुए जीवन का स्तर उच्च बनाना और सामाजिक एवं आर्थिक विकास में योगदान करना है। आधुनिक विश्व में यातायात भीड़–भाड़ को खत्म करना, यातायात दुर्घटनाओं को कम करना और सड़क की परिस्थिति में सुधार करना प्रत्येक

राष्ट्र के सामने आ रही मुख्य चुनौतियां हैं। वाहन सूचना और संचार प्रणाली चालक को सबसे सुगम मार्ग चुनने, भीड़–भाड़ क्षेत्र से बचाव करने कम ईंधन खपत के साथ–साथ भीड़ को उचित रूप से बांटने में सहयोग करती है।

जाँच–परख (प्रोब) सूचना एकत्रीकरण प्रणाली

जापान में **प्रोब (जाँच–परख)** सूचना आईटीएस–ईसीयू मोबाइल नेटवर्क, टैक्सी कंपनी की डाटा संग्रह प्रणाली और टेलीमैटिक्स सेवा प्रदाताओं के माध्यम से इकट्ठी की जाती है। सूचना को अलग–अलग वाहनों (वाहन पहचान, गति और यात्रा समय इत्यादि) से इकट्ठा किया जाता है। टैक्सियों और टेलीमैटिक्स से सूचना को सड़क की एक निश्चित लम्बाई पर वाहनों की संख्या के माध्यम से एकत्र किया जाता है। इन तीनों डाटा स्रोतों को जोड़ने के बाद हम यातायात की व्यापक और अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

जापान सड़क यातायात सूचना केन्द्र

जापान सड़क यातायात सूचना केन्द्र (जेएआरटीआईसी) यातायात प्रशासकों और सड़क प्रशासकों से सूचना को इकट्ठा एवं एकीकृत करता है और फिर सड़क उपयोगकर्ताओं को टेलीफोन, रेडियो और टेलीविजन प्रसारण, इंटरनेट, कार नेविगेशन सिस्टम और अन्य मीडिया द्वारा सड़क परिवहन संबंधित जानकारी प्रदान करता है।

इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली स्पॉट

इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली स्पॉट सेवा को वर्ष 2009 में शुरू किया गया था। वर्ष 2009 से अब तक जापान में तीन लाख इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली स्पॉट के अनुकूल ऑन बोर्ड यूनिट कार्य कर रही हैं। उनमें से 1600 इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली स्पॉट जापान के सभी एक्सप्रेसवे पर स्थापित हैं। इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली स्पॉट इंटरसिटी एक्सप्रेसवे के भीतर प्रत्येक जंक्शन से पहले लगभग 90 स्थानों पर 10 से 15 किमी के अन्तराल पर और शहरी एक्सप्रेसवे पर लगभग प्रत्येक 4 किमी अन्तराल पर स्थापित हैं। इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली स्पॉट सड़कों पर स्थापित आईटीएस स्पॉट और वाहनों में लगे आईटीएस स्पॉट के अनुकूल कार नेविगेशन प्रणालियों के बीच तीव्र गति एवं तीव्र संचार क्षमता बनाते हैं तथा व्यापक क्षेत्र सड़क परिवहन सूचना और छवियों एवं विभिन्न अन्य सेवाओं को प्रदान करना संभव बनाते हैं।

डिजिटल रोड मैप

वेबसाइटों पर उपलब्ध मुद्रित सड़क के नक्शे और डिजिटल छवि नक्शे जनता के प्रयोग के लिए उपयुक्त हैं जो उन्हें देख कर समझ सकते हैं। तथापि, इन नक्शों को उच्च मूल्यवर्धित डाटा प्रोसेसिंग के निष्पादन के लिए कार नेविगेशन प्रणाली और सड़क प्रशासन प्रणाली के द्वारा प्रयोग नहीं किया जा सकता है। इस कारण यह आवश्यक है कि डिजिटल रोड मैप बनाए जाएं जो कंप्यूटर को पृथक सड़क तत्वों को पहचानने में सक्षम करें। जापान में डिजिटल रोड मैप के विकास की स्थिति से ज्ञात होता है कि मार्च 2014 तक 9.30 लाख किमी (4 लाख किमी बुनियादी सड़क एवं 5.30 लाख किमी संकरी सड़क) की लम्बाई में सड़कों का डिजिटल रोड मैप तैयार किया गया जिसमें 55.20 लाख लिंक सम्मिलित हैं।

परिवर्तनीय संदेश संकेत (वीएमएस)

परिवर्तनीय संदेश संकेत के अन्तर्गत वास्तविक समय में यातायात सूचना का प्रावधान और सड़क पर

यातायात दुर्घटनाओं, ट्रैफिक भीड़–भाड़ और बाधाओं पर सूचना शामिल है। इससे ड्राइवरों के तनाव और चिड़चिड़ाहट को कम करने तथा गौंड़ दुर्घटनाओं की आवृत्ति को कम करने में मदद मिलती है। यह सूचना व्यवस्था को शीघ्र और लचीले तरीके से प्रदान करने का महत्वपूर्ण साधन भी है।

चित्र 4 : इलेक्ट्रोनिक टोल संग्रह प्रणाली

इलेक्ट्रोनिक टोल संग्रह प्रणाली का विकास

वीआईसीएस के बाद विकसित की गई सड़क से वाहन की समन्वय प्रणाली ईटीसी है (चित्र 4 देखें)। ईटीसी प्रणाली वाहन में लगे उपस्कर एवं सड़क पर स्थापित उपस्कर के बीच रेडियो संचार स्थापित करके वाहन को रोके बिना टोल स्टेशनों पर भुगतान किए जाने को सक्षम बनाती है। इस प्रणाली को टोल स्टेशनों पर यातायात जाम से निपटने, नकद रहित भुगतान पद्धति अपनाकार चालकों के लिए सुविधा में सुधार, प्रबंधन लागत में कमी इत्यादि के लक्ष्य के साथ विकसित किया गया था।

इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली से प्राप्त सबक और सिफारिशें

जहां तक इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली का सवाल है, भारत एक बहुत ही प्रारंभिक अवस्था में है लेकिन अब इसके बारे में हर महत्वपूर्ण शहरी परिवहन सम्मेलनों में चर्चा प्रारम्भ हो चुकी है। इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली आर्किटेक्चर को राष्ट्रीय स्तर, क्षेत्रीय स्तर और शहर स्तर पर विभिन्न हितधारकों के साथ परामर्श से विकसित किए जाने की आवश्यकता है। वास्तव में इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली से संबंधित विशेष एजेंसियों को समय सीमा में परिभाषित उत्तरदायित्व के साथ बाहर लाया जाना आवश्यक है। एकीकृत महानगर परिवहन प्राधिकरण के रूप में शीर्ष स्तर एजेंसी को सभी हितधारकों के साथ समन्वय स्थापित करने और इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली से संबंधित मुद्दों पर ध्यान देने के लिए बनाया जाना आवश्यक है। इस प्रकार निधि की उपलब्धता के मद्देनज़र निम्नलिखित प्रौद्योगिकियों को चरणबद्ध तरीके से अपनाने की सिफारिश की जाती है:–

- ❖ इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली पर राष्ट्रीय आर्किटेक्चर
- ❖ इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली मास्टर प्लान
- ❖ यातायात सूचना केंद्र
- ❖ वाहन सूचना और संचार प्रणाली केंद्र
- ❖ इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली स्पॉट
- ❖ प्रोब (जांच–परख) डाटा संग्रह
- ❖ डिजिटल मैपिंग

इंटेलिजेंट परिवहन अपनाने हेतु एक सुदृढ़ सोच की आवश्यकता है। इंटेलिजेंट परिवहन के विषय में सोच का सबसे तेज तरीका है कि हम स्मार्ट मोबिलिटी के बारे में अभी से सोचना शुरू कर दें। इंटेलिजेंट परिवहन क्षेत्र में स्मार्ट शहर, परिवहन और भू–उपयोग के बीच एकीकरण के साथ स्मार्ट मोबिलिटी समाधान भारतीय शहरों को आने वाले समय में उन्नति के पथ पर ले जा सकेगा। इंटेलिजेंट परिवहन प्रणाली प्रौद्योगिकी क्षेत्रों को सुदृढ़ करने के लिए पर्याप्त वित्त पोषण का प्रावधान किया जाना चाहिए।

शहरी विकास तभी सम्भव होगा, जब इसे क्षेत्रीय योजना से जोड़कर देखा जाए। किसी भी शहर की महायोजना बनाते समय यह श्रेयस्कर होगा कि उस शहर के साथ–साथ सम्बंधित जिले की खूबियाँ, कमियाँ अवसर एवं आशंकाओं का क्षेत्र विश्लेषण कर प्रबल क्षमता क्षेत्रों और घटकों का पता लगाया जाए तथा शहरी विकास योजना एवं क्षेत्रीय योजना में सामंजस्य स्थापित किया जाए। सबसे महत्वपूर्ण बात ग्राम/पंचायत/जिला स्तर पर कार्य करने में दृष्टिकोण एवं सोच में बदलाव है। टिकाऊ और जनोपयोगी शहरी विकास योजना की संकल्पना तभी की जा सकती है जब शहरों को लाभ पहुचाने वाली क्षेत्रीय अवसंरचना एवं क्षेत्रीय स्तर पर विद्यमान संसाधनों से समुचित तरीके से इसका सामंजस्य स्थापित (dovetail) हो जाए।

भ्रष्टाचार

रेजीना टोप्पो

देश में है भ्रष्टाचार
कहते हैं यह सब बार–बार
क्या है भ्रष्टाचार
पूछ मुझसे यह सब हज़ार बार
मैं कहती हूँ
कि वो है यह भ्रष्टाचार

जहाँ अमीर तो और अमीर हुए हैं
पर गरीब हुए और भी लाचार
वो है यह भ्रष्टाचार
जहाँ नेताओं की ऐश है
पर आम आदमी की है हा–हाकार
वो है यह भ्रष्टाचार

जहाँ ईमान की इज्जत नहीं है
पर रिश्वत घूस की है जय–जयकार
देश में है भ्रष्टाचार
जिक्र होता है इसका हर बार
इसी को कहते हैं भ्रष्टाचार।

मॉडर्न युवती

लुकास रतन बरला

दिल्ली मेट्रो में महिला सीट पर बैठे
ग्रामीण बुजुर्ग को एक युवती इशारे से
सीट से उठने को कहती है।
बुजुर्ग बेचारा समझ नहीं पाया
तो हिंदी में बताती है
आप गलत सीट पर बैठे हैं बाबा
यह सीट तो महिलाओं के लिए हैं।
मैं सोचता ही रह गया
एक ओर तो बाबा कह रही है
फिर सीट से क्यूँ उठा रही है?
तभी ध्यान आया 'बरला'
यह तो कान्वेंट स्कूल में पढ़ी है
बहुत ही मॉडर्न है शायद
इसलिए अपने अधिकार को
लेने पे अड़ी है।

जीवन–सूत्र

इंसान एक 'दुकान' के समान है
उसकी जुबान 'ताले' के समान है
'ताला' खुलता है,
तभी मालूम होता है कि
दुकान सोने की है
या 'कोयले' की ।

स्मार्ट शहर

धर्मेन्द्र शर्मा

कल्पना कीजिए, भारतीय शहरों के प्रत्येक घर में इन्टरनेट सेवा, गैस, पानी और बिजली को स्मार्ट ग्रिड तकनीकी आधार पर जोड़ दिया जाए। नागरिक सेवा उच्च तकनीक के आधार पर शहर के प्रत्येक नागरिक से जुड़ी हुई हो। शहरों में प्रदूषण और यातायात समस्याओं का नियंत्रण "केन्द्रीय नियंत्रण कमाण्ड" द्वारा किया जा रहा हो। ऐसे शहर में न तो शोर शराबा, न धूल, धुआं और न भीड़–भाड़ हो। यही आदर्श शहर है, यही स्मार्ट शहर है, हरियाली से भरा यह शहर समस्त आधुनिक सेवाओं से भरपूर है।

वास्तव में, यह स्मार्ट शहर है क्या? स्मार्ट शहर संकल्पना, एक नवीन कल्पना है जो कि शहरी वर्तमान समय में नियोजन में अधिक प्रासंगिक है। यूरोपीय देशों में स्मार्ट शहर यथार्थ है। वहां आधुनिक तकनीक को मास्टर प्लान के साथ समन्वित किया गया है। विभिन्न सेवाओं जैसे बिजली, पानी, यातायात और स्वास्थ्य सेवाओं को मास्टर कमाण्ड नेटवर्क द्वारा मॉनीटर किया जाता है जिसके द्वारा इन सेवाओं की सुलभता सुनिश्चित की जाती है। स्मार्ट शहर में मूलभूत सुविधाओं को बेहतर तरीके से जन–जन तक पहुंचाया जाता है। इनमें संचार, पानी, गैस आपूर्ति और बिजली आपूर्ति प्रमुख हैं।

अगर हम, यूरोपीय स्मार्ट शहर की तुलना भारतीय शहरों से करें तो यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि भारतीय शहर भी आधुनिक तकनीक जैसे ब्रॉडबैण्ड सेवा, दूरसंचार तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं किन्तु इनका पूर्ण रूप से दोहन नहीं हो पा रहा है। ट्रैफिक सिस्टम मैन्युअली नियन्त्रित हो रहा है जबकि यह सेन्ट्रल कमाण्ड द्वारा नियन्त्रित होना चाहिए जिसके लिए स्काडा जैसी आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जा सकता है। सार्वजनिक परिवहन की निगरानी और बेहतर संचालन के लिए जी.पी.एस. तकनीक का इस्तेमाल होना चाहिए ताकि क्षेत्र विशेष में भीड़ के आधार पर बसों की आवृत्ति को घटाया–बढ़ाया जा सके। शहरी स्थानीय निकायों में तकनीक को अधिक से अधिक बढ़ावा दिया जाए ताकि समस्त नागरिक सेवाओं को सुलभ कराना सुनिश्चित किया जा सके।

वर्तमान में, भारत में दिल्ली और मुम्बई औद्योगिक गलियारों के सहारे सात नए स्मार्ट शहर को 90 बिलियन डालर के निवेश द्वारा उच्च तकनीक की उपलब्धता के साथ बसाने की तैयारी चल रही है।

प्रश्न यह उठता है कि भारत को स्मार्ट शहर की आवश्यकता है कि नहीं। इसका जवाब अर्थशास्त्रियों के पास है। उनका मानना है कि भारत की शहरी जनसंख्या वर्ष 2026 तक कुल जनसंख्या का 38 प्रतिशत अर्थात 590 मिलियन के करीब हो जाएगी, ऐसे में इतनी बड़ी जनसंख्या को संभालने के लिए भारत को स्मार्ट शहर की शीघ्र आवश्यकता होगी। मैकिन्जी रिपोर्ट के अनुसार, भारत को अगले दशक में 20–30 नए स्मार्ट शहरों की आवश्यकता होगी ताकि बढ़ती शहरी जनंसख्या को समुचित नागरिक सेवाएं उपलब्ध करायी जा सके।

वर्तमान में, माननीय शहरी विकास मंत्री श्री वेंकैया नायडू जी ने घोषणा की है कि भारत में 100 नए स्मार्ट शहरों को बसाया जाएगा। इसके साथ–साथ जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय शहरी नवीकरण मिशन (जेएनएनयूआरएम) को हटाने की तैयारी चल रही है। जेएनएनयूआरएम योजना अपनी प्रासंगिकता को सिद्ध नहीं कर पाई है। चूंकि शहर, राज्य का विषय है जिस पर केन्द्रीय नियंत्रण सीमित है। 74वें संविधान संशोधन में इसका

नियंत्रण स्थानीय निकायों को सौंप दिया गया है, इससे संघीय ढांचे में राज्य–केन्द्र संबंध भी प्रभावित हुए हैं।

हम पुनः स्मार्ट शहर की ओर आते हैं, जैसा कि शहरी विकास मंत्रालय ने 100 नए स्मार्ट शहरों की स्थापना का बीड़ा उठाया है। यह भारतीय शहरी क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हो सकते हैं। स्मार्ट शहर की स्थापना के लिए निम्न विषयों पर ध्यान देना आवश्यक है।

स्मार्ट शहरों का वित्त पोषणः इसके लिए एक विशेष कोष की स्थापना और सार्वजनिक–निजी साझेदारी की आवश्यकता है ताकि आधुनिक तकनीक को निचले स्तर तक लाया जा सके।

इंटेलीजेंट ट्रांस्पोर्ट और मोबिलिटीः इसमें मास्टर कन्ट्रोल, जीपीएस, सेन्सर आधारित तकनीक, आरएफआईडी तकनीक का इस्तेमाल होगा। पार्किंग से लेकर यातायात कानूनों के उल्लंघन तक समस्त मुद्दे आधुनिक तकनीक से हल किए जाएंगे।

स्मार्ट ऊर्जा ग्रिडः समस्त आवासों को स्मार्ट ग्रिड से जोड़ना, आधुनिक मीटर, विद्युत समस्याओं का स्वतः निदान, ऑटोमेशन तकनीक का उपयोग और स्काडा द्वारा ऊर्जा नियंत्रण, सतत विकास के लिए सौर ऊर्जा का अधिकतम उपयोग शामिल है। स्मार्ट गर्वनेन्स जिसके तहत् सूचना, संचार व तकनीक (आईसीटी) के द्वारा सुशासन को बढ़ावा, घर बैठे नागरिक समस्याओं का निदान, पानी, सीवर एवं स्वास्थ्य सेवाओं को इस दायरे में लाया जाएगा।

स्मार्ट बिल्डिंग को बढ़ावाः भारतीय जरुरतों को ध्यान में रखते हुए ऐसी इमारतों का निर्माण करना जो समस्त अत्याधुनिक सेवाओं से लैस होने के साथ–साथ सुरक्षित व आपदा मुक्त हों।

सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावाः इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन जैसे क्षेत्रों को आधुनिक तकनीक जैसे ऐली मेडिसिन, वर्चुअल वर्ल्ड, वर्चुअल टूरिज़्म, डिस्टेंस एजूकेशन द्वारा सुदृढ़ करना शामिल है।

आज हर क्षेत्र में तकनीक ने इतनी उन्नति कर ली है कि व्यक्ति रोजाना टीवी, फ्रिज, पंखा, कूलर, गीजर, कार, म्यूजिक सिस्टम, बच्चों के खिलौनें आदि और न जाने कितने ही अन्य कार्य रिमोट कंट्रोल से व्यवस्थित करता है, फिर सेंसर और जीपीएस सिस्टम से भारी भरकम कार्य क्यों नहीं किया जा सकता है। हमारे सारे आकाशीय सैटेलाइट पृथ्वी से ही कंट्रोल किए जा रहे है। आधुनिक तकनीक की सहायता से कार्यालयों और संगठनों में ऊर्जा बचत संभव है, सुरक्षा हेतु पुलिस का घटना स्थल पर पहुंच पाना संभव है, ट्रांस्पोर्ट सिस्टम सुधारा जा सकता है, अपशिष्ट निपटान शीघ्र हो सकता है। ऐसे तमाम विषय हैं जो कि आधुनिक प्रौद्योगिकी द्वारा हल किए जा सकते हैं। ऐसे में परम्परागत तरीकों का स्मार्ट शहरों में कोई स्थान नहीं है। समय के साथ चलकर हम भी अन्य विकसित देशों की तरह बचत कर सकते हैं और आधुनिक तकनीक की सहायता से जल्द और आसान तरीके से अपना कार्य शीघ्र एवं सुचारु रूप से कर सकते हैं।

अंत में, स्मार्ट शहर की संकल्पना को मूर्त रूप देने के लिए हमें दो प्रकार के सिस्टम विकसित करने होंगे। पहला, मशीन से मशीन (एमटूएम) सिस्टम एवं दूसरा, मशीन से मानव (एमटूएच)। दोनों सिस्टमों के संयोजन से स्मार्ट शहर को हम मूर्त रूप दे पाएंगें। वास्तव में, ये शहर कल्पना लोक जैसे प्रतीत होंगे। बेहतर यातायात नेटवर्क, सुलभ जन सेवाएं, न कहीं प्रदूषण, न शोर शराबा, चारों ओर हरियाली, घर से आफिस और आफिस से घर तक का सफर भय और चिंता से मुक्त होगा। न ही लाइन में लगने का झंझट और न कहीं परेशानी। ऐसा प्रतीत होगा कि हम सपनों के शहर में विचरण कर रहे हैं। ऐसा होगा हमारा स्मार्ट शहर।

खुशियों की खोज

मैत्रयी बैनर्जी

खुशियाँ आसानी से कहां मिलती हैं.....
न जाने, आने से पहले कितनी दो राहें खड़ी करती हैं,
किस्मत से अगर दूर कहीं दिख जाएं...
तो जान लेना दुख दर्द भी वो साथ लाती हैं।

इस दुनियां में आसान कुछ नहीं होता.....
पैसे के बिना पानी भी नहीं मिलता,
सब भाग रहे हैं हरी पत्तियों के पीछे.....
जेब भर जाए तो भी, खुशी न इंसान पाता।

जीवन बचपन से शुरू होता है.....
मगर बचपन का स्टेटस पापा का वालेट होता है,
स्कूल या कालेज में एडमीशन पापा का रूतबा खरीद देता है.....
जॉब भी ज्यादातर पैसों के दम पर मिलता है।

डिमांड की लिस्ट कभी खत्म नहीं होती.....
गाड़ी, घर, शादी, बच्चा जिम्मेदारियां जुड़ती ही जाती,
लोन के दम पर इंसान सामान खरीद पाता है.....
पर ई.एम.आई. के पाँव तले दबता चला जाता है।

खुशियां तो खैर तब भी नहीं मिलतीं.....
पैसे की लत रिश्ते भुला देती,
झगड़ा, क्लेश, खुशी का गला घोंटती.....
सुसाइड, डायवोर्स, मर्डर, यही अंजाम दिखाती।

जिस बच्चे को जन्म दिया, वही वृद्धाश्रम का रास्ता दिखाता है.....
मौके का फायदा देखकर, कई सारे वृद्धाश्रम को कंडोमोनियम बना रहे हैं,
रिश्तों से ना सही, पर पैसे से खुशी खरीदने की कोशिश जारी रहती है .....
पर पैसे से क्या सच में खुशी खरीदी जा सकती है।

आधुनिकीकरण से पहले लोग ज्यादा खुश हुआ करते थे.....
नोट बनाने की प्रतियोगिता नहीं थी इसलिए रिश्तों को मायने दिया करते थे,
बंधुत्व, भाईचारा सब ढकोसले बन गए हैं.....
खून की होली जो खेले, उसे रेवोल्यूशनरी का नाम देते हैं।

उन्नति के लिए आधुनिक हुए, पर बेहतर इंसान बनना भूल गए.....
इसी तरह चलता रहा, तो बेहतर जीवन नहीं बना पाएंगे,
न जाने कब एटम बम से सब खत्म हो जाएं.....
जो मर गया भला, पर जो रह गया, खुशी उनके लिए कहां से लाएंगे।

बेहतर शासन, बेहतर सरकार सब हमसे शुरू होती है.....
हम जब तक अच्छे से बेहतर नहीं बन जाएंगे, भगवान भी कुछ नहीं कर पाएंगे,
जरूरी है कि हम अपने नैतिक मूल्य न भूल बैठें.....
पैसे बनाएं, पर लालच को पीछे छोड़, अपनी और दूसरों की खुशी को सराहें।

प्यारी बेटी

शशिरंजन कुमार सिन्हा

जब–जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।

ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।

तारों की शीतल छाया है बेटी,
आँगन की चिड़िया है बेटी।

त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नए–नए रिश्ते बनाती है बेटी।

जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी,
बार–बार याद आती है बेटी।

बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी।

संगीत का महत्व और प्रभाव

नेत्रपाल

संगीत सबको प्यारा है। संगीत का अपना अलग ही महत्त्व है। इस दुनिया में संगीत का कोई सानी नहीं। संगीत में तन–मन को ऊर्जा से भरने की जादुई शक्ति होती है। जिस तरह इन्द्रधनुष के सात रंग होते हैं, ठीक उसी प्रकार संगीत में भी सात सुरों का संगम होता है। जिस प्रकार इंसान के जीवन में सात वचनों का महत्व है, ठीक उसी तरह सात सुरों की सरगम का इंसान के जीवन से बहुत गहरा और पुराना नाता है। संगीत से बेहतर इस दुनिया में कोई और दूसरी चीज नहीं है और न कभी होगी क्योंकि संगीत सभी बन्धनों से मुक्त है। संगीत का कोई धर्म नहीं होता, न कोई मजहब। यह किसी का गुलाम नहीं है। अभिप्राय यह है कि संगीत में एक अद्‌भुत शक्ति होती है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी संगीत के जादुई प्रभावों को मानता है।

संगीत के महत्त्व को हम इतिहास के पन्ने पलटकर देख सकते हैं। अपने देश में ऐसे महान संगीतकार हुए हैं, जिन्होंने विभिन्न रागों के माध्यम से मानव तो क्या प्रकृति व वनस्पतियों तक को प्रभावित किया है। संगीत के एक से बढ़कर एक सैंकडों घराने हैं। अकबर के नौ रत्नों में से एक संगीत सम्राट तानसेन थे जो अपने संगीत से पानी में आग लगा देते थे तथा संगीत से बारिस भी करा देते थे। संगीत जब बजता है तो वह सबको मोहित कर देता है। संगीत के कई रूप हैं। यह संगीत कभी माँ की लोरी के रूप में तो कभी पिता की थपकी और कभी ईश्वर के भजन के रूप में मिलता है। संगीत जहां एक ओर रोते हुए लोगों को हँसाता है तो वहीं दूसरी ओर हँसते हुए लोगों को रुलाता भी है। जो संगीत इंसानी खुशियों में शामिल होता है, वो गम में भी साथ देता है। संगीत के दीवाने अपने भी हैं और पराये भी। संगीत तो निर्जीव में भी जान डाल सकता है।

संगीत द्वारा तनाव दूर करना

आपाधापी भरी तेज रफ्तार जिंदगी में संगीत का महत्व पहले की अपेक्षा आज काफी बढ़ा है। इसका कारण है कि अब लोग पहले की तुलना में कहीं ज्यादा तनावग्रस्त हो रहे हैं। वे अपने आप को संयमित और एकाग्रचित रखने की प्रवृत्ति खो रहे हैं। वे एकदम से उग्र व उतावले हो रहे हैं। इस बदलती स्थिति के लिए विशेषरूप से सामाजिक और आर्थिक स्थितियां जिम्मेदार हैं। संगीत तनाव को कम करता है। यही नहीं, संगीत मनुष्य को स्वस्थ रखकर कई बीमारियों से बचाता भी है। इसी वजह से अब अनेक मनोचिकित्सक व अन्य चिकित्सक संगीत के माध्यम से विभिन्न रोगों का इलाज करने लगे हैं। इस संगीत चिकित्सा पद्धति को "संगीत चिकित्सा" का नाम दिया गया है।

संगीत तरंगों के रूप में मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है। धीमा या मंदिम स्वर में सुना गया संगीत मन–मस्तिष्क को शांत करता है और थके हुए मिजाज को तरोताजा करता है। यह तथ्य कई शोधों से प्रमाणित हुआ है। संगीत भावनात्मक असंतुलन को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके विपरीत तेज गति वाला संगीत आपके मस्तिष्क की तरंगों को बढ़ा देता है। आजकल शादी समारोह, जन्मदिन पार्टी या अन्य समारोह में डीजे का चलन बहुत बढ़ गया है। इनमें संगीत को ऊंची आवाज में बजाया जाता है जिसका कुछ लोग, विशेषकर युवा पीढ़ी तो मजे लेती है, परंतु अधिकांश इस कानफोडू संगीत से बचते देखे जा सकते हैं अथवा वो इसको नापसंद करते हैं। ऐसी स्थिति में अधिक सजग रहने की जरूरत है।

कई अध्ययनों से यह प्रमाणित हो चुका है कि संगीत डिप्रेशन, उदासी, चिन्ता व बेचैनी आदि मनोरोगों से राहत दिलाने में काफी हद तक उत्साहजनक परिणाम देता है। मनोचिकित्सकों की मानें तो संगीत चिकित्सा से स्कीजोफ्रेनिया (पागलपन का एक रूप) से ग्रस्त रोगियों को इस रोग से जल्दी उबरने में मदद मिलती है। मस्तिष्क की गतिविधियों पर संगीत का सीधा असर पड़ता है। कुछ अध्ययनों से पता चला है कि संगीत के माध्यम से बच्चे गीत, कविता, कहानियां इत्यादि को जल्दी सीख जाते हैं जिससे उनकी शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता बढ़ जाती है।

संगीत अनिद्रा दूर करता है

अनेक चिकित्सा संबंधी शोध–अध्ययनों से यह भी पता चला है कि संगीत अनिन्द्रा की शिकायत से ग्रस्त लोगों के लिए वरदान है। नींद न आने की शिकायत को दूर करने में धीमे स्वर से सुने जाने वाले संगीत का अपना एक अलग महत्व है। इसलिए सोने से पूर्व धीमे स्वर में पसंदीदा संगीत सुनना चाहिए।

अन्य लाभ

चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार संगीत उच्च रक्त चाप की शिकायत से राहत दिलाने में भी सहायक है। हालांकि, इसका यह मतलब नहीं है कि आप उच्च रक्त चाप की दवा ही न लें। विशेषज्ञों के अनुसार रोज मनपसंद संगीत सुनने से उच्च रक्त चाप को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। संगीत से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। इसके अतिरिक्त संगीत मांसपेशियों का तनाव दूर करने में भी लाभप्रद है।

संगीत की बदलती परिभाषा

संगीत की परिभाषा समय बीतने के साथ ही बदल रही हैं। संगीत का अस्तित्व कहीं न कहीं आज आधुनिकता की चकाचौंध में खोता जा रहा है। अब संगीत में वह दम नहीं रहा जो पहले कभी हुआ करता था। पहले संगीत को नौ रत्नों में गिना जाता था, अब वो बात नहीं है। आजकल जिस तरह का संगीत चल रहा है, उसको देखते हुए उसके चाहने वाले भी कम होते जा रहे हैं। तीज–त्योहारों पर गाए जाने वाले पारंपरिक लोकगीतों में से हमारी संस्कृति नदारद हो रही है क्योंकि नए अंदाज में लोकगीतों को पेश किया जा रहा है। आज फूहड़ संगीत की ज्यादा मांग है। आज उलटे–सीधे तरीकों से संगीत का निर्माण किया जा रहा है वो भी सिर्फ पैसा बटोरने के लिए। इसलिए संगीतकार भी वही परोस रहे हैं जो लोगों को पसंद आता है। 'जिया धक्–धक् करने लगा', 'चोली के पीछे क्या है', 'मुन्नी बदनाम हुई, 'शीला की जवानी' जैसे गाने आज लोगों के पसंदीदा हो गए हैं। आज के संगीत को व्यावसायिक दृष्टि से अधिक देखा जा रहा है। इसलिए व्यावसायिक संगीत बनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य केवल पैसा कमाना है।

आज का संगीत अर्थहीन सा प्रतीत होता है क्योंकि यह संगीत हमारे मन को नहीं छूता। हम देखते हैं कि कहीं कोई गजल पर डिस्को कर रहा है तो कोई भजन पर डांस। चारों तरफ सब कुछ उल्टा–पुल्टा हो रहा है। हम अपने चारों ओर के परिवेश में पाते हैं कि आज भी कुछ लोग ऐसे हैं जो पुराने और अर्थपूर्ण संगीत सुनना पसंद करते हैं। सफर के दौरान पुराने गानों को पसंद किया जाता है। 'सदाबहार गाने', 'ओल्ड इज गोल्ड' एवं 'एवरग्रीन' आज भी लोगों द्वारा गुनगुनाए जाते हैं। यह संगीत भविष्य में कभी समाप्त होने वाला नहीं है। नए गाने अल्पकालिक बजते हैं और कहीं गुम हो जाते हैं, लेकिन पुराने गाने अपनी पहचान को न तो भुला पाए हैं और न कभी भुला पाएंगे। कहावत है नया नौ दिन, पुराना सौ दिन। पुराने गानों का स्थान सदा पहले पायदान पर रहेगा। इस प्रकार संगीत लोगों के जीवन में प्रसन्नता की अनुभूति कराने और उन्हें स्वस्थ रखने में सदा योगदान देता रहेगा।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को सम्मान

तनवीर अहमद खान

आजाद हिन्दुस्तान की नींव में जंगे आजादी में लाखों माताओं के जाबांज सपूत शहीदों का खून शामिल है जिन्होंने ज़ालिम नाइंसाफ अंग्रेजों की गुलामी से हिन्दुस्तान को आजाद कराने के लिए फांसी के फन्दों को चूमा और वक्त से पहले मौत को सिर्फ इसलिए गले लगा लिया ताकि आने वाली नस्लें आजाद हिन्दुस्तान के सवेरे में आँखें खोल सकें। लेकिन आजाद हिन्दुस्तान में अफसोस और गुस्सा इस बात का है कि जो महाराजा, राजा, नरेश, निजाम और नबाव अंग्रेजों के वफादार होने की वजह से ताकतवर और इज्जतदार थे और 1857 ई0 की जंगे आजादी में अंग्रेजों का साथ दिया था और हिन्दुस्तान को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी की जंग लड़ने वाले हिन्दुस्तानी इंकलाबियों को कुचलने और उनका सफाया कराने में धन–दौलत से मदद की थी, वो राजघराने आजाद हिन्दुस्तान में भी शक्तिशाली मान–सम्मान वाले हैं जिन्होंने वतन की आजादी से गद्दारी की थी, जिन्होंने हिन्दुस्तानियों का कत्लेआम कराने में अंग्रेजों की मदद की थी।

जहां पे कोई किसी की मदद नहीं करता।
जहां पे कोई किसी का दम नहीं भरता।।

जिन्होंने मादर–ए–वतन की मुहब्बत में और वतन की आजादी के लिए अपने बेटों मिर्जा मुगल बुसर, सुल्तान, पोते व नवासों यानि अपने परिवार के हर कर्द को हिन्दुस्तान की आजादी के लिए कुर्बान कर दिया, जिनके बेटों और पोतों के सिर कलम कर सुबह के नाश्ते में बाप के सामने पेश किए गए थे। भारतीय इतिहास में उस बदनसीब बाप, क्रांतिकारी सम्राट बहादुर शाह जफर को देशभक्त इतिहाकारों द्वारा जंगे आजादी का शहीदे आजम कहा जाता है।

अगर तू चाहे तो चिंगारी कंकरी हो जाए।
अगर तू चाहे तो चिड़ियों से हाथियों को भगाए।।

देश के शासक राजनीतिक स्वार्थों की दृष्टि से हर धर्म के धार्मिक उत्सवों पर शुभकामनाएं संदेश देना नहीं भूलते। भारतीय शासकों द्वारा आजादी के युद्ध में जान व माल, घर–परिवार कुर्बान करने वाले शहीदों का स्मरण न करना उनकी साम्राज्यवादी अंग्रेजपरस्त मानसिकता को दर्शाता है। गौरतलब है कि 1857 ई0 आजादी की पहली जंग हिन्दु–मुस्लिम एकता महाशक्ति का प्रदर्शन था। 1857 ई0 क्रांति का नाम सुनकर अंग्रेज कांप जाया करते थे।

अगर तू चाहे तो दरियों में रास्ता बन जाए।
अगर तू हुक्म करे अज़दहा असा बन जाए।।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द सेना की पहली सलामी परेड रंगून स्थित बहादुर शाह ज़फर के मकबरे पर पेश की थी। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था कि 'आजादी मिलने के बाद बहादुर शाह ज़फर की कब्र को दिल्ली लाल किले में लाकर स्थानांतरित किया जाएगा।' भारत सरकार कोहनूर हीरा इंग्लैंड से जरूर मंगाना चाहती है लेकिन दिल्ली के किसी हवाई अड्डे, भवन, विश्वविद्यालय, सुरक्षा ट्रेनिंग कॉलेज तक का नाम बहादुर शाह ज़फर के नाम पर नहीं देखा गया है। न ही दिल्ली हुकूमत, न ही दिल्ली वाले उन्हें याद व सलाम नमन करते हैं। विद्वानों का कथन है कि जो कौम, मुल्क और शहीद पुरखों को भुलाती है, उस कौम में देशभक्ति, देश प्रेम का अभाव हो जाता है। वतन पर मर–मिटने की भावना जगाने के लिए बहादुर शाह ज़फर की यादगार को अमर बनाना जरूरी है।

उम्र–ए–दराज़ माँग कर लाए थे चार दिन। दो आरजू में कट गए दो इंतजार में।।
कितना है, बदनसीब, ज़फर दफन के लिए। दो गज ज़मीन भी न मिली कू–ए–यार में।।

जिला आपदा प्रबंधन योजना

राम स्वरूप मीना

आपदा का शाब्दिक अर्थ तबाही, मुसीबत या दुर्घटना है। आपदा का तात्पर्य जान–माल का नुकसान होना है, नुकसान चाहे प्राकृतिक आपदा से हो या मानव निर्मित आपदा से। आपदा की मुख्य विशेषताएं हैं अप्रत्याशित, अनिश्चित, गति व असमानताएं। भारत अपनी अनौखी भौगोलिक जलवायु परिस्थितियों के कारण प्राकृतिक आपदाओं के लिए पारंपरिक रूप से कमजोर है। बाढ़, सूखा, चक्रवात, भूकंप और भूस्खलन जैसी आवर्तक घटना होती रहती हैं। प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदाएँ आज नई नहीं हैं, परंतु सुनामी जैसी बड़ी घटनाएं सामने आने से विश्व में हलचल मच गई है और देशों का ध्यान आपदाओं तथा उनसे होने वाले नुकसान से बचाव की ओर बढ़ा है।

भारत में आपदाओं के प्रकार

आम तौर पर, आपदाओं के दो प्रकार होते हैं–'प्राकृतिक' व 'मानव निर्मित'। प्राकृतिक आपदाओं में हिमस्खलन, ज्वालामुखी, भूकंप, सुनामी, पेड़ गिरना, चक्रवाती हवा, शीत लहर, शिकारी जानवर, बिजली गिरना, चक्रवात, भूस्खलन, ओलावृष्टि, महामारी, अकाल, संक्रामक रोग फैलना, सर्प दंश, बाढ़, रेबीज, जानवरों के काटने से मौत, सौरमंडलीय हलचलें एवं भारी वर्षा आदि मुख्य हैं तथा मानव निर्मित आपदाओं में आग, आतंकवादी गतिविधियां, गैस रिसाव, युद्ध व दंगे, सड़क व रेल दुर्घटनाएं, विषाक्त भोजन, औद्योगिक आपदा, पर्यावरण प्रदूषण, बांध टूटना एवं पुरानी इमारतों का ढह जाना इत्यादि शामिल है।

जिला आपदा प्रबंधन योजना

आपदा–पूर्व योजना आपदा संबंधी तैयारियों का एक अभिन्न हिस्सा है जो आपदा प्रबंधन को एक समग्र दृष्टिकोण की ओर ले जाता है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के अनुसार तैयार राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन की रूपरेखा बताती है कि आपदा जोखिम कम करने के लिए जिला आपदा प्रबंधन योजना तैयार करनी होगी। राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन संस्थान, जो आपदा प्रबंधन की आपदाओं से पूर्व तैयारियां, संसाधनों का विकास, क्षमता विकास व प्रशिक्षण का काम कर रहा है, ने जिला आपदा प्रबंधन योजना का एक खाका तैयार किया है जिसके अनुसार प्रत्येक जिला प्राधिकरण अपने–अपने जिलों में संभावित आपदाओं की पूर्व तैयारियां, आपदा के समय बचाव व राहत कार्य हेतु जिले के लिए जिला आपदा प्रबंधन योजना तैयार कर सकेंगे। जिला प्रशासन सभी सरकारी योजनाओं और गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए केन्द्र बिन्दु होने के कारण जिले के लिए आपदा प्रबंधन योजना तैयार करने व आपदा प्रबन्ध कार्य योजना के क्रियान्वयन में जिला प्रशासन की अहम भूमिका रहेगी।

जिले की आपदा प्रबंधन योजना तैयार करने से पहले जिले की भौगोलिक स्थिति, आपदाओं के प्रकार एवं उनकी आवृत्ति को ध्यान में रखकर कुछ मुद्दों जैसे शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, संस्थागत एवं कानूनी का अध्ययन करना होगा। आपदा प्रबंधन कार्य योजना तैयार करते समय सभी मुद्दों का विश्लेषण कर सभी विभागों में सामंजस्य स्थापित करना है ताकि राजनीतिक पार्टियों में परिवर्तन होने पर भी आपदा प्रबंधन कार्य योजना अपना कार्य सकारात्मक रूप से कर सके।

जिला आपदा प्रबन्धन योजना अध्ययन के मुख्य उद्देश्य

- जिले की सम्पूर्ण आपदाओं की प्रवृत्ति, खतरे, जोखिम का आंकलन एवं विश्लेषण करना।
- पुराने मकानों, स्लम बस्तियों, कच्चे घरों के समूहों का अवलोकन व भावी संभावित खतरे।
- बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, सूचना प्रणाली व परिवहन प्रणाली तथा अन्य बुनियादी सुविधाओं की तरह मौजूदा शहरी बुनियादी ढांचे की स्थिति का मूल्यांकन करना एवं सुधार के उपाय करना।
- स्वैच्छिक संस्थाओं एवं गैर–सरकारी संस्थाओं को प्रशिक्षित करना व आपदा कार्य योजना में हिस्सेदार बनाना।
- आपदा प्रबंधन कार्य योजना तैयार करना तथा उसके तहत आपदा प्रबंधन केन्द्रों की स्थापना करना।

जिला आपदा प्रबंधन योजना के भावी लाभ

- जिला आपदा प्रबंधन योजना तैयार करने से जिले के सभी शहरों की स्थिति का आकलन होगा व मौजूदा बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य बुनियादी सुविधाओं में सुधार किया जा सकेगा।
- संचार एवं परिवहन प्रणाली आधुनिक तकनीक से लेस की जा सकेगी।
- क्षतिग्रस्त भवनों का सर्वे करवाकर उनकी मरम्मत की जा सकेगी और बचाव के लिए संकेतक लगाए जा सकेंगे।
- विषाक्त भोजन, विस्फोटक पदार्थ आदि के लिए दुकानदार और उपभोक्ताओं के खिलाफ सख्त कानून की व्यवस्था हो सकेगी।
- बाढ़ के समय गोताखोरों को बुलाकर प्रशिक्षित किया जा सकेगा। बाढ़ग्रस्त इलाके में जगह–जगह रक्षा कवच के सामान रखने का प्रावधान हो सकेगा।
- जिले की सम्पूर्ण सड़कों व पुल, दीवार, रेलिंग आदि का प्रति महीने सर्वे करने की ज़िम्मेदारी संबन्धित विभाग की होगी जिससे मरम्मत कार्य यथासमय पूरे किए जा सकेंगे।
- जोखिम भरी खदानों, वस्तुओं, इमारतों व स्थानों की सूची तैयार हो सकेगी।
- क्षमता विकास का प्रशिक्षण व आपदा प्रबंधन केंद्रों की स्थायी व्यवस्था होगी।
- आकस्मिकता किट रखने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाएंगे।

आपदाएँ अप्रत्याशित व अनिश्चित होती हैं। हर आपदा के समय बचाव के लिए पूर्व सूचना जरूरी है जिसके लिए सूचना तंत्र मजबूत हो एवं आपदा के समय बचाव व राहत कार्यों के लिए परिवहन प्रणाली की अहम भूमिका होती है। इस कार्य को सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिए हर जिले की एक जिला आपदा प्रबंधन योजना व उसके तहत सुनियोजित आपदा प्रबंधन कार्य योजना तैयार हो ताकि आपदा के समय परिचालन केन्द्रों/राहत दलों द्वारा बचाव कार्य कुशलता से किए जा सकें। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ब्लॉक व नगर स्तरीय आपदा प्रबंधन योजनाएं अलग–अलग भी तैयार कर सकते हैं। आपदा प्रबंधन, महायोजना/क्षेत्रीय योजना दस्तावेज़ का घटक है एवं शहरी स्थानीय निकायों इत्यादि के क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विकास एवं मानव कल्याण

अनिल कान्त मिश्रा

हमारे देश की संस्कृति मानव कल्याण की भावना पर आधारित है। इस संस्कृति के अनुसार मनुष्य के सभी कार्य दूसरों के हित तथा उनके सुख के लिए होने चाहिएं। भारतीय संस्कृति की मूल भावना को व्यक्त करने के लिए मानव मात्र के कल्याण की कामना की गई है। इस संबंध में हमारे ग्रंथों में कहा गया हैः–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत।।

सब सुखी हों, सब निरोगी हों, सबका कल्याण हो तथा किसी को कोई दुखः न हो। मानव में सहनशीलता तथा क्षमाशीलता का गुण महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जिस व्यक्ति में सहनशीलता का गुण है वह हर स्थिति में दूसरों के भले की ही कामना करता है। इसी कारण उसका कोई शत्रु भी नहीं होता।

दूसरी ओर, जब कोई व्यक्ति शत्रुता के बदले शत्रुता करता है, ईर्ष्या के बदले ईर्ष्या करता है तब वह व्यक्ति मानव का नहीं बल्कि पशुओं का कार्य कर रहा होता है। यदि आप किसी पशु के साथ कोई बुरा काम करेंगे तो वह वापस आपको नुकसान पहुँचाएगा। मनुष्य तथा पशु में यही अंतर है। पशु में सहनशीलता, संवेदनशीलता, परोपकार तथा सहयोग आदि की भावना नहीं होती जबकि मनुष्य में ये सभी गुण होते हैं। किसी का नुकसान करना तथा प्रतिशोध लेना मनुष्य को पशुतुल्य बना देता है। क्रोध उसकी बुद्धि का विनाश कर देता है। बुद्धि का विनाश होने पर व्यक्ति को उचित या अनुचित का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं रहता। इसलिए मनुष्य को सदैव दूसरों का हित करना चाहिए।

यदि कोई व्यक्ति आपके साथ कुछ गलत करता है, उस समय अपनी सहनशीलता दिखाने वाला व्यक्ति श्रेष्ठ कहलाता है। जब उस व्यक्ति को अहसास होगा कि उसके गलत व्यवहार का आप पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ रहा है, तब वह व्यक्ति भी अपना व्यवहार ठीक कर लेगा। उसी प्रकार क्षमा करना भी मानव कल्याण की ही भावना है। जब कोई व्यक्ति बुरा काम करता है, तब उसे इसकी सजा देने की अपेक्षा यदि माफ कर दिया जाए तो उस व्यक्ति में अपने आप परिवर्तन आ जाएगा। अतः कहा गया है कि जिसके पास क्षमा रूपी अस्त्र है, दुष्ट मनुष्य भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं। जहां एक ओर ईर्ष्या, द्वेष तथा वैमनस्य, मानवीय आत्मा के द्योतक हैं क्योंकि जिस भी व्यक्ति में ये अवगुण हैं, वह व्यक्ति कभी भी सफल नहीं हो सकता तथा उसका निरंतर पतन होता है। वहीं दूसरी ओर, समाज में सहनशील व्यक्तियों का सभी आदर तथा सम्मान करते हैं। गीता में कहा गया है कि 'जो व्यक्ति सभी को अपने समान समझता है, वही व्यक्ति ज्ञानी तथा पंडित कहलाता है।' भगवान यीशू ने भी इसी प्रकार की शिक्षा दी थी– यदि कोई मनुष्य तुम्हारें दाएँ गाल पर थप्पड़ मारता है, तो अपना बायाँ गाल भी उसके सामने कर दो। एक बार में नहीं तो दूसरी बार में उसे शर्मिंदा होना पड़ेगा। डाकू अंगुलिमाल को बुद्ध ने अपनी सहनशीलता तथा मधुर व्यवहार द्वारा जीत लिया था। स्नेहिल व्यवहार, मधुर वचनों तथा सहृदयता के द्वारा ही विनोबा भावे ने डाकुओं का आत्मसमर्पण तथा हृदय परिवर्तन किया था।

कुछ लोगों का मानना है कि क्षमा करने तथा सहनशीलता से कुछ भी प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार की विचारधारा से तो दुष्टों की दुष्टता और भी अधिक बढ़ जाती है। ऐसे व्यक्तियों का कहना है कि दुष्टों के साथ

दुष्टता का ही व्यवहार करना चाहिए। रावण जैसे पापी को श्रीराम के समझाने का कोई असर नहीं हुआ। श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को बड़े ही प्रेम के साथ यह अनुरोध किया था कि पांडवों को केवल पाँच गाँव दे दो, परन्तु दुर्योधन पर इस बात का कोई असर नहीं हुआ और परिणामस्वरूप लाखों लोगों की जान का नुकसान हुआ। लोगों का मानना है कि बिना डर के कोई दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता है। यदि अपराधी को दंड का डर नहीं हो, तो वह कभी भी अपनी आपराधिक प्रवृत्ति नहीं छोड़ेगा।

लोगों की यह धारणा उचित नहीं है क्योकि क्रोध से क्रोध का अंत नहीं हो सकता। जिस प्रकार शत्रुता को प्यार से ही समाप्त किया जा सकता है उसी प्रकार ईर्ष्या को प्रेम से ही दूर किया जा सकता है, तभी मानव का कल्याण संभव है। भारत गांवों का देश है तथा 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गांवों में ही निवास करती है। यदि कहा जाए कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। ग्रामीण जीवन की प्राचीनता एवं महत्व को उजागर करने वाली एक प्राचीन उक्ति है कि नगरों का निर्माण मनुष्य ने किया, ग्राम ईश्वर द्वारा बसाए गए। निःसंदेह हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का पूर्ण और स्वाभाविक विकास ग्रामीण अंचलों में ही हुआ है। भारत के सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद के अंतर्गत जिस सभ्यता के उल्लेख प्राप्त होते हैं, वह ग्रामीण सभ्यता ही थी। इस सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि जिस समय नगरों या शहरों की परिकल्पना भी नहीं की गई होगी, उस समय सभ्यता का उद्‌गम छोटे–छोटे ग्रामों के रूप में हुआ था। ग्रामीण भारत में निवास करने वाली सम्पूर्ण जनसंख्या का मुख्य कार्य कृषि है। अधिकांश शहरी आवश्यकताओं की पूर्ति गांवों द्वारा ही की जाती है। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रुपों में गांव राष्ट्र के विकास एवं प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। भारतीय गांवों से व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कई प्रकार की लकड़ियां प्राप्त होती हैं जिनका उपयोग फर्नीचर, माचिस आदि बनाने में होता है। सम्पूर्ण देश में सभी प्रकार के खाद्यान्नों की आपूर्ति गांव ही करते हैं। ग्रामीण अंचलों में कुछ ऐसी वनस्पतियां तथा जड़ी–बूटियां पायी जाती हैं जिनसे विभिन्न प्रकार की औषधियां तैयार की जाती हैं। ग्रामीण जीवन हरियाली से भरपूर होने के कारण पर्यावरण को शुद्धता प्रदान करता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में गांवों की अहम भागीदारी को देखते हुए ही उन्हें देश की राष्ट्रीय निधि की संज्ञा प्रदान की गई है।

अतः हमें अपने देश की इस अमूल्य निधि के विकास हेतु विभिन्न प्रयत्न करने चाहिएं क्योंकि विकसित गांव ही विकसित भारत का आधार–स्तंभ बन सकते हैं। इसी क्रम में, हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 'प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना' का शुभारम्भ एक प्रशंसनीय कदम है।

हँसगुल्ला

एक बस में एक नवयुवती शिक्षिका को काफी देर से खड़े देखकर एक बच्चे से रहा नहीं गया और वो उठकर बोला–मेडम प्लीज आप मेरी जगह बैठ जाईए।
मैडम ने ये सुना और तैश में आकर बच्चे को थप्पड़ रसीद कर दिया।
''भलाई का तो जमाना ही नहीं रहा...!!!!
.....यह कहते हुए बच्चा वापस अपने पापा की गोदी में बैठ गया।

इंसानियत का मूल्य

कुमारी ज्योत्सना रानी

जहां पूजते थे माता–पिता को भगवान के समान,
आज वहीं ये रिश्ता खोखला हो गया है,
कहलाते आज भी वो अभिभावक हैं,
पर उनके प्रति दायित्व कहीं खो गया है।

मनुष्य आज के दौर में इतना आगे बढ़ चुका है,
कि न जानें क्यों वो अपने आप से दूर हो गया है,
धन और मान–सम्मान की दौड़ में भागते हुए,
अपने आदर्शों को कहीं भूल गया है।

मोहब्बत बसती थी जहां लोगों के दिलों में,
वहीं आज चाहत सिर्फ जुबान तक रह गई है,
खिलवाड़ हो रहा है प्यार के नाम पर,
इंसान आज खुद अपनी मोहब्बत का दुश्मन हुआ है।

बढ़ गया है अधर्म इस जहान् में इतना,
धर्म का निशान धुंधला हुआ है,
क्यूं खून खराबा, बेईमानी का आसरा,
आज इंसान का मस्तिष्क हुआ है।

ये क्या हो गया है इंसान को यहां,
परिपक्व है वो मस्तिष्क से, पर दिल से निसहाय हुआ है,
समय के साथ भागते–भागते,
खुद अपने आप से पिछड़ गया है,
समय वही है पर आज इंसानियत का मूल्य बदल गया है।

तनावों से घिरा महानगरों का जीवन

तरसिसियुस टेटे

भागदौड़ एवं आपाधापी भरा जीवन, वैज्ञानिक उन्नति से फलता–फूलता जीवन, प्रदूषण का दुष्परिणाम झेलता जीवन, अत्यधिक जनसंख्या से चरमराती नागरिक सेवाएं, चलते कंधे छिलते, सांस लेने को धुआं, पीने को विषैला जल, आकाश को देखने को तरसता है यह शहरी जीवन। इस जीवन को जीने वालों को मिलता है केवल तनाव। भाग–दौड़ भरे इस जीवन में शहरी लोगों को तनाव सौगात में मिलता है।

दिल्ली, मुंबई, कोलकाता जैसे बड़े–बड़े महानगरों में से दिल्ली और मुंबई ऐसे महानगर हैं जहां पर लोग यदि एक बार आ जाएं तो फिर जाने का नाम ही नहीं लेते। इन शहरों का आकर्षण इतना है कि दूर–दराज के गांवों के लोगों को लगता है कि ये महानगर नहीं, स्वर्ग है, जहां जादू की छड़ी घुमाने मात्र से सभी वस्तुएं प्राप्त हो जाती हैं। पर यहां आने के बाद ही वे जान पाते हैं कि उनकी सोच बहुत गलत थी। गांव में अपना सब कुछ बेचकर महानगरों में आने के बाद ही ये सब पता चलता है।

ग्रामों की भांति महानगरीय जीवन इतना सरल नहीं होता। एक–एक सांस के लिए संघर्ष करना पड़ता है। एड़ी–चोटी का पसीना बहाने के बाद ही एक जून पेट भरने को मिलता है। ग्रामों की तरह परिवार बड़ा नहीं होता। हम दो, हमारे दो को सार्थक करता परिवार छोटे–छोटे दड़बेनुमा घर में रहने को विवश होता है। एक बड़ी रकम किराए के रूप में चुकाने के बाद वह प्रतिदिन रुपयों को गिनकर दिन का हिसाब रखता है। कमरतोड़ महंगाई से जूझने के लिए पति–पत्नी दोनों का कमाना अत्यावश्यक है। एक सदस्य की कमाई से घर चलाना अत्यधिक कठिन है।

सुबह उठते ही दिन भर का तनाव शुरू हो जाता है। बच्चों को विद्यालय भेजने में जुटे माँ–बाप को अपने–अपने काम पर समय पर पहुंचने की शीघ्रता रहती है। सारा दिन दफ्तर में सिर खपाने के पश्चात् जब दोनों घर पहुंचते हैं तो राहत की सांस मिलने की बजाए उनका इंतजार करती हैं बच्चों के विद्यालय की अनेक शिकायतें, बच्चा लापरवाह है, पढ़ाई में ध्यान नहीं देता आदि। दूसरे दिन बच्चों के स्कूल के टिफिन की तैयारी की चिंता, भोजन की चिंता, बिजली–पानी–टेलीफोन का बिल, बच्चों के स्कूल की फीस, कॉपी–किताबों का खर्चा अलग। प्रतिदिन बच्चों की नित नई मांग। उनकी पूर्ति की चिंता। साथ ही समय–समय पर त्योहारों पर दावतों के दिखावे की चिंता। इन तनावों के बीच जीता है महानगरीय मानव। प्रतिदिन तनाव भरा जीवन जीना जिसकी नियति बन गई है।

महानगरवासियों के तनाव का एक कारण और है – समाज में अपना 'स्टेटस' बनाए रखना। जहां वह रहता है, वहां आस–पास के लोगों, अपने सगे–संबंधियों, मित्रों, सहकर्मियों, बॉस के बीच अपना रूतबा बनाए रखने के लिए शहरी को अधिकतर दिखावा करना पड़ता है। मिथ्या प्रशंसा प्राप्त करने, आस–पास के मित्रों पर अपना रौब जमाने के लिए औकात से बढ़कर न केवल दावतें देनी पड़ती हैं, अपितु महंगे–महंगे उपहार भी देने पड़ते हैं। घर की सजावट और स्वयं की सजावट भी उच्च कोटि की दिखानी पड़ती है। इसी दिखावे की आदत के अंतर्गत वह आकंठ कर्जे में डूब जाता है और उसकी हालत खस्ता होती जाती है।

अपने बच्चों को महंगे अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ाना भी स्टेटस सिम्बल माना जाता है। चादर देखकर पाँव पसारना शहरी की किस्मत में नहीं। विभिन्न प्रदूषणों से जूझता नागरिक अनेक रोगों का शिकार बन जाता है। तनावग्रस्त मनुष्य का खाना–पीना, सोना–जागना कुछ भी समयानुकूल नहीं रहता। असंयमित जीवन जीने को विवश शहरी लोगों को विभिन्न रोग नहीं घेरें तो तनाव तो घेरे ही रहता है। क्षणभंगुर इस जीवन में मनुष्य वह सब कुछ पाना चाहता है जो उसके बूते से बाहर है। इसी प्रयास में वह अपने आपको व्यस्ततम बना लेता है, अनियमित जीवन जीने लगता है। सफल जीवन के लिए वह हर पल तनावग्रस्त रहता है। अपने शरीर के प्रति लापरवाह हो जाता है और कई प्रकार से अपने शरीर की हानि कर बैठता है।

असंतुष्ट जीवन जीने वाला व्यक्ति सदा ही विभिन्न तनावों से घिरा रहता है। शांति के दो पल पाने के लिए वह विभिन्न आयोजन करता है। इसके दुष्परिणाम स्वरूप वह मानसिक रोगों से ग्रस्त हो जाता है, अपना संतुलन खो बैठता है। तनावग्रस्त व्यक्ति का व्यवहार समय–समय पर परिवर्तित होता रहता है। तनावग्रस्त व्यक्ति चोरी, अपहरण, हत्या, झगड़ा, मारपीट तक करने लगता है।

केवल बड़े व्यक्ति ही तनाव में नहीं रहते। बड़े–बड़े नगरों में रहने वाले छोटे–छोटे बच्चे भी तनाव भरे वातावरण में जीते हैं। वे स्वाभाविक जीवन से दूर हो जाते हैं। बचपन से ही वे परीक्षाओं की चिंता, जीवन लक्ष्य बनाने की चिंता, अच्छी नौकरी अथवा व्यवसाय अपनाने की चिंता में अपना बचपन खो बैठते हैं। इस प्रकार महानगरों में रहने वाले लोगों के लिए रात–दिन में कोई अंतर नहीं रहता। बचपन से ही बच्चे भी तनावभरा जीवन जीते–जीते विभिन्न मानसिक विकारों से ग्रस्त हो जाते हैं।

शहरी मनुष्य तनाव में इतना भर जाता है कि वह स्वाभाविक रूप से मुस्कुराना तक भूल जाता है। कोई भी साधन ऐसा नहीं जो उसके जीवन को शांति प्रदान कर सके। रोबोट की तरह निरंतर एक ही ढर्रे का जीवन जीने वाला शहरी मानव निराश एवं कुंठा से ग्रस्त हो जाता है। तनावभरा जीवन जीने से बेहतर वह मृत्यु का आकांक्षी हो जाता है। यह बात सही है कि विज्ञान के सभी साधन शहर में सुलभ हैं जो मनुष्य के सुख के लिए बाजारों में आसानी से उपलब्ध हैं लेकिन महानगर में रहने वाले व्यक्ति के लिए यही कहा जा सकता है–'कोई सागर दिल को बहलाता नहीं।'

अपने को तनाव से छुटकारा दिलाने हेतु वह शारीरिक एवं मानसिक व्यायाम करता है। ध्यान–योग से उसे क्षणिक राहत मिलती है, पर सदा के लिए नहीं। अपनी समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए उसके पास धैर्य कहां है? हर सफलता का, हर समस्या का हल वह पलभर में प्राप्त करना चाहता है। इसके लिए उचित–अनुचित सभी कदम उठाने को वह तत्पर रहता है। तनाव का ही दुष्परिणाम है कि नगर का मानव अपने कष्टों से छुटकारा पाने के लिए युक्तिसंगत निदान नहीं खोजता, बल्कि विभिन्न विकल्प होते हुए भी वह शीघ्र ही अंधविश्वास में पड़ जाता है। अधकचरा ज्ञान रखने वाले, छोटा–मोटा चमत्कार दिखाने वाले, साधु–सन्यासियों तथा बाबाओं के चक्कर में पड़कर अपना सर्वस्व लुटा बैठता है। प्रतिदिन समाचार पत्रों में इस प्रकार की घटनाएं पढ़ने को मिल जाती हैं।

अंधविश्वास गांवों में भी कम नहीं है, पर वहां जीवन में इतनी रफ्तार नहीं है। भाग–दौड़, आपाधापी से कहीं दूर है – गांव का जीवन। भाईचारा, अपनापन, ईमानदारी, मानवीय संबंधों की गहराई शहरों की अपेक्षा गांवों में ही देखने को मिलती है। सरल, सहज, स्वाभाविक जीवन होने के कारण गांवों में तनाव की स्थिति कम ही देखने को मिलती है। प्रदूषण का प्रभाव भी कम ही देखने को मिलता है। तभी अवसर प्राप्त होते ही नगर में रहने वाला मनुष्य अमन–चैन के क्षण प्राप्त करने के लिए गांवों की ओर अथवा प्रकृति की गोद में समा जाना चाहता है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि महानगरीय जीवन तनावों भरा जीवन है। इन पंक्तियों में जहां नगरीय–जीवन के प्रति विरक्ति है, वहीं ग्रामीण जीवन की ललक परिलक्षित हो रही है।

"मेरे उद्विग्न मन! चल उड़ चलें हम,
कंक्रीट का जंगल छोड़ चलें हम।
जीवन–मृत्यु सहज नहीं है, तनाव भरा है जीवन।
लहराते सरसों के खेतों में,
गमकते आम्र बौरों में,
इठलाता है ग्राम का यौवन।
मेरे उद्विग्न मन। चल उड़ चलें हम।"

रिटायरमेंट को बनाएं खुशहाल

अमीर सिंह

आपके जीवन का एक पल बीत रहा है, यानी कि आप अपने जीवन के रिटायरमेंट की ओर अग्रसर हैं। सामाजिक सुरक्षा के मामले में हमारी सरकार की जो हालत है, वह किसी से छिपी नहीं है। वृद्धावस्था पेंशन के नाम पर मासिक 300 से 500 रुपये की रकम मिलती है। किसी–किसी राज्य में यह रकम एक हजार रुपये है, लेकिन इस रकम में तो एक वृद्ध की एक माह की दवाई भी नहीं होगी। खाना और कपड़ा कहां से पूरा होगा? ऐसे में सवाल उठता है कि क्या हम अपने बुढापे को सरकार के भरोसे छोड़ दें, या खुद कुछ करें।

बचत की दो योजनाएं: पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) और नेशनल पेंशन स्कीम (एनपीएस) दोनों ही लंबी अवधि की बचत योजनाएं हैं। पीपीएफ में कोई जोखिम नहीं है और इसकी ब्याज दरें हर वर्ष तय की जाती हैं, जबकि एनपीएस में डेट के अलावा इक्विटी में निवेश का विकल्प भी है जिससे पीपीएफ की तुलना में बेहतर रिटर्न मिल सकता है। 60 साल की उम्र के बाद पीपीएफ में निवेश कर सकते हैं लेकिन एनपीएस में नहीं।

निवेश का तरीका: दोनों ही स्कीमों में निवेश के लिए एक बैंक खाता खोलना जरूरी है। हिंदू अविभाजित परिवार (एचयूएफ) समेत केवल भारतीय ही पीपीएफ खाता खोल सकते हैं। अनिवासी भारतीय (एनआरआई) पीपीएफ खाता नहीं खोल सकते, जबकि 18 साल की आयु वाले एनआरआई सहित हर भारतीय नागरिक एनपीएस खाता खोल सकता है। एचयूएफ एनपीएस खाता नहीं खोल सकते। अवयस्क के नाम पर एनपीएस खाता नहीं खोला जा सकता, अवयस्क के नाम से कानूनी संरक्षक पीपीएफ खाता खोल सकते हैं।

अंशदान की सीमा व कर लाभ: पीपीएफ प्रावधानों के अनुसार आप इसमें सिर्फ एक लाख रुपये तक का ही अंशदान कर सकते थे जिसे बढ़ाकर वित्तीय वर्ष 2014–15 में 1.5 लाख रुपए कर दिया गया है। आपको अनिवार्यतः साल भर में एक बार 500 रुपए का अंशदान करना होगा। एक साल में आप अधिकतम 12 बार इसमें पैसे जमा करा सकते हैं। कर छूट पाने के लिए आप अपने निजी पीपीएफ खाते, अपने बच्चे या फिर अपने जीवनसाथी के खाते में अंशदान कर सकते हैं, जबकि एनपीएस में आप अपने ही खाते में अंशदान कर सकते हैं। पीपीएफ पर कर लाभ धारा 80सी के तहत जबकि एनपीएस में कर लाभ धारा 80सीसीडी–। के तहत मिलते हैं। डेढ़ लाख रुपये की ओवरऑल सीमा में एनपीएस अंशदान, अगर आप स्वरोजगारी हैं तो आपकी सकल कुल आय का 10 फीसदी से ज्यादा न हो और अगर आप नौकरीशुदा हैं तो आपके वेतन के 10 फीसदी से ज्यादा न हो। एनपीएस में आप इससे ज्यादा पैसे भी जमा करवा सकते हैं लेकिन आयकर का लाभ उपरोक्त रकम तक ही मिलेगा। यानी कि एनपीएस में अंशदान करने की आजादी है जो कि पीपीएफ में नहीं है।

परिपक्वता रकम पर टैक्स: मौजूदा कर नियमों के अनुसार पीपीएफ खाते से परिपक्वता पर मिलने वाली पूरी रकम कर मुक्त है पर एनपीएस टियर–। खाते में 60 साल की उम्र में पहुंचने के बाद आपको जमा रकम के 40 फीसदी हिस्से से भारत में पंजीकृत किसी भी जीवन बीमा कंपनी से एन्युटी, जो कि फिलहाल टैक्सेबल है और प्रस्तावित डीटीसी में भी टैक्सेबल है, खरीदना अनिवार्य है। बाकी की 60 फीसदी रकम पूरी तरह से कर मुक्त होती है।

खातों की फ्लेक्सिबिलिटीः पीपीएफ खाते की शुरूआती अवधि 15 साल निश्चित है और जिस साल खाता 15 साल पूरा करे, उसके 31 मार्च को यह परिपक्व हो जाता है। उसके बाद भी आप इसे एक बार में 5 साल के लिए आगे बढ़ा सकते हैं और योगदान जारी रख सकते हैं। लेकिन 60 साल पूरा करने के बाद आप एनपीएस में अंशदान नहीं कर सकते।

दोनों से प्राप्त रिटर्न की दरः पीपीएफ में रिटर्न की दर सरकार द्वारा तय की जाती है, जबकि एनपीएस के रिटर्न की दर आप द्वारा चयनित डेट व इक्विटी फंडों के प्रदर्शन पर निर्भर करती है। पर ध्यान रहे कि इसमें कम समय में भले ही कम रिटर्न मिले, पर लंबी अवधि में इसकी रिटर्न पीपीएफ से ज्यादा भी हो सकती है। इसमें जोखिम की संभावना भी है। जो निवेशक जोखिम नहीं उठाना चाहते हैं, उनके लिए पीपीएफ बढ़िया है।

अहसास

अनिल कुमार वर्मा

दिल्ली मेट्रो में कुछ लोग जागे हैं
तो कुछ आँखें मूँदे बैठें हैं।
ध्यान से देखा
तो जाना,
जो जागे हैं
वो अपनी सीटों पर बैठें हैं।
जो आँखें मूंदें हैं
वो बुजुर्गों–विकलांगों के लिए
आरक्षित सीटों पे बैठें हैं।

जीवन–सूत्र

धार के विपरीत जाकर देखिए, जिंदगी को आजमा कर देखिए।
आंधियां खुद मोड़ लेंगी रास्ता, एक दीपक तो जलाकर देखिए।

****

यदि कोई आपको नजरअंदाज कर रहा है तो बुरा मत मानना। क्योंकि लोग अक्सर हैसियत से बाहर महंगी चीज को नजरअंदाज कर देते हैं।

हिंदी सम्मेलन एवं भारत के स्विट्जरलैंड कौसानी का भ्रमण

राम दयाल मीना

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन द्वारा मुझे 24वें त्रिदिवसीय अखिल भारतीय प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मेलन, कौसानी, बागेश्वर, उत्तराखण्ड में भाग लेने का एक सुनहरा अवसर दिया गया जिसका अनुभव मैं आप सबके साथ बांटना चाहता हूं।

हिन्दी राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए यह 24वां प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मेलन दिनांक 06 से 08 मार्च, 2014 तक आयोजित किया गया जिसको छह सत्र में बांटकर सम्पन्न किया गया था। हरेक सत्र अपने आप में अद्भुत था।

प्रथम उद्घाटन सत्र माननीय लोकसभा सांसद **श्री प्रदीप टमटा जी** के कर कमलों से आरम्भ हुआ। सत्र में, श्री वेद प्रकाश गौड़, निदेशक (राजभाषा) के साथ अन्य कई गणमान्य पदाधिकारी भी मौजूद थे। भारतीय भाषा एवं संस्कृति विषय पर खुलकर व्याख्यान हुए जिसमें अपनी–अपनी मातृभाषा के साथ हमारे देश की राजभाषा पर विशेष जोर देकर कहा गया कि जब तक संघ में एक राजभाषा नहीं होगी, तब तक देश एक सूत्र में नहीं बंध पाएगा। इसलिए राजभाषा की आवश्यकता सर्वोपरि है।

दूसरे सत्र में, सरकारी कामकाज में अनुवाद की सहज एवं सुबोध भाषा के उपयोग के संबंध में विस्तार से चर्चा हुई। अनुवाद में किस तरह एवं किन–किन बातों का विशेष ध्यान रखने से सही अनुवाद हो सकता है, इस पर चर्चा हुई। चर्चा में श्री वेद प्रकाश गौड़, निदेशक (राजभाषा) ने सविस्तार से सही अनुवाद करने व गलत अनुवाद से बचने के बारे में जानकारी दी।

तृतीय सत्र में, विज्ञापन के क्षेत्र में हिन्दी की भूमिका पर चर्चा हुई। हिन्दी में बढ़ते विज्ञापनों की भरमार से आज हिन्दी विज्ञापन का बाजार लगभग 2500 करोड़ रुपये को भी पार कर गया है। इसी से पता चलता है कि विज्ञापन के क्षेत्र में हिन्दी के एक–एक स्लोगन के लिए 25.00 लाख रुपये तक भी दिए जाने लगे हैं। जैसे **कर लो दुनिया मूट्ठी में, जिंदगी के साथ भी जिंदगी के बाद भी** आदि जितने भी विज्ञापन आज दूरदर्शन पर देखने को मिलते हैं, वह लाखों–करोड़ों रुपयों में तैयार किए जाते हैं। कमाई के हिसाब से देखें तो हिन्दी में कमाई के अच्छे अवसर हैं।

चतुर्थ सत्र में, कंप्यूटर के क्षेत्र में हिन्दी के नए सॉफ्टवेयर एवं उनके प्रयोग के संबंध में बताया गया। यूनिकोड की सहायता से अब विभिन्न सॉफ्टवेयरों में हिन्दी में कार्य करना आसान हो गया है। कंप्यूटर के माध्यम से प्रोजेक्टर के द्वारा यूनिकोड की पूरी जानकारी दी गई। हम किस तरह से अंग्रेजी से हिन्दी में सरल एवं सुनिश्चित तरीके से काम कर सकते है, इस पर विस्तार से चर्चा हुई। पंचम सत्र में, राजभाषा संबंधी तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने की विधि एवं तत्संबंधी आदेशों का पालन करने के संबंध में चर्चा की गई। इसमें श्री वेद प्रकाश गौड़, निदेशक (राजभाषा) ने अपने विचार रखे।

अंतिम सत्र में, संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली एवं अपेक्षित प्रश्नोत्तर पर भी खुलकर चर्चा हुई जिसमें खुले दिल से सभी उपस्थित सदस्यों ने भाग लिया। अपनी–अपनी समस्याओं को लेकर प्रश्नोत्तर किए गए जिनका श्री वेद प्रकाश गौड़, निदेशक (राजभाषा) ने बहुत ही सहज ढंग से समाधान किया।

भ्रमण सत्र में, कौसानी के प्रमुख दर्शनीय स्थलों का भ्रमण कराया गया। वास्तव में कौसानी एक बहुत ही सुन्दर एवं रमणीय स्थल है जिसे लोगों ने उत्तराखण्ड के **स्विट्जरलैंड** की संज्ञा दी है। यहीं पर हिन्दी के महान कवि स्व. श्री सुमित्रानन्दन पन्त की जन्मस्थली भी है। साथ ही महात्मा गाँधी का आश्रम भी है, जहां कभी महात्मा गाँधी गए थे। भ्रमण सत्र में कौसानी के पास सरयू नदी के तट पर स्थित बागेश्वर धाम मंदिर, भैरवनाथ मंदिर और बैजनाथ मंदिर (यहां छोटे–छोटे कई मंदिर हैं जिनसे मिलकर बैजनाथ मंदिर कहलाता है) का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। चाय बागानों में चाय का उत्पादन किया जाता है और हथकरघा शाल उद्योग तो कश्मीर की तरह ही पहचान बनाए हुए है। इन सब तीर्थ स्थानों एवं भ्रमण स्थानों को देखकर सभी प्रतिभागी पुलकित हो उठे। प्रकृति का जो खूबसूरत नजारा वहां देखने को मिला वह आज तक मैंने कहीं और नहीं देखा।

हिन्दी के प्रसार–प्रचार के लिए प्रशिक्षण शिविर व सम्मेलनों में भाग लेने से अच्छा और कोई तरीका नहीं हो सकता क्योंकि पढ़ाई के साथ भ्रमण आदि की व्यवस्था कर, तीन दिवसीय इस कार्यशाला में जितना सीखने को मिला, उतना व्यावहारिक रूप से भी सीखने को नहीं मिलता। यह प्रसन्नता की बात है कि संगठन के अधिकारियों/कर्मचारियों को ऐसे प्रशिक्षणों में नियमित रूप से भेजा जाता है।

मैं मुख्य नियोजक जी का आभारी हूं कि मुझे यह स्मरणीय अवसर प्रदान किया। इस तरह के आयोजनों में भाग लेने से आपसी मेल–जोल तो बढ़ता ही है, साथ ही हिंदी संबंधी बहुत ही आवश्यक एवं अहम जानकारियां भी सीखने को मिलती हैं। मैं अपने इस यादगार प्रशिक्षण एवं भ्रमण सत्र को अभी तक सही शब्दों में व्यक्त नहीं कर सका

कड़वा सच

जसबीर सिंह

खुशियाँ कम और अरमान बहुत हैं,
जिसे भी देखिए यहाँ हैरान बहुत हैं।
करीब से देखा तो रेत का घर है,
दूर से मगर उसकी शान बहुत है।

कहते हैं सच का कोई साथी नहीं है
आज तो झूठ की आन–बान बहुत है।
मुश्किल से मिलता है शहर में आदमी
यूं तो कहने को इंसान बहुत हैं।

वक़्त पे न पहचाने ये अलग बात है,
वैसे तो शहर में अपनी पहचान बहुत है।

ग्लोबल वार्मिंग

आशा चंद्रा

ग्लोबल वार्मिंग या वैश्विक तापमान बढ़ने का मतलब है कि पृथ्वी लगातार गर्म होती जा रही है। वैज्ञानिकों का कहना है कि आने वाले दिनों में सूखा, बाढ़ की घटनाएँ बढ़ेंगी और मौसम का मिजाज बुरी तरह बिगड़ा हुआ दिखेगा। इसका असर दिखने भी लगा है। कहीं असामान्य बारिश हो रही है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं और रेगिस्तान पसरते जा रहे हैं, तो कहीं नमी कम, कहीं सूखा है, कहीं असमय ओले पड़ रहे हैं।

वैज्ञानिक कहते हैं कि इस परिवर्तन के पीछे ग्रीन हाउस गैसों की मुख्य भूमिका है जिन्हें सीएफसी या क्लोरो फ्लोरो कार्बन भी कहते हैं इनमें कार्बन डाई आक्साइड है, मीथेन है, नाइट्रस ऑक्साइड है और वाष्प है। वैज्ञानिकों का कहना है कि ये गैसें वातावरण में बढ़ती जा रही हैं और इससे ओजोन परत के छेद का दायरा बढ़ता ही जा रहा है, ओजोन की परत ही सूरज और पृथ्वी के बीच एक कवच की तरह काम करती है।

वैज्ञानिक कहते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग के पीछे तेजी से हुआ औद्योगीकरण, जंगलों का तेजी से कम होना, पेट्रोलियम पदार्थों के धुएं से होने वाला प्रदूषण और फ्रिज, एयरकंडीशनर आदि का बढ़ता प्रयोग भी है। वैज्ञानिक कहते हैं कि इस समय दुनिया का औसत तापमान 15 डिग्री सेंटीग्रेड है और वर्ष 2100 तक इसमें डेढ़ से छह डिग्री तक की वृद्धि हो सकती है।

आज हर व्यक्ति पर्यावरण की बात करता है, प्रदूषण से बचाव के उपाय सोचता है। व्यक्ति स्वच्छ और प्रदूषण–मुक्त पर्यावरण में रहने के अधिकारों के प्रति सजग होने लगा है और अपने दायित्वों को समझने लगा है। वर्तमान में, विश्व ग्लोबल वार्मिंग के सवालों से जूझ रहा है। इस सवाल का जवाब जानने के लिए विश्व के अनेक देशों में वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग और खोजें हुई हैं। उनके अनुसार, अगर प्रदूषण फैलने की रफ्तार इसी तरह बढ़ती रही तो अगले दो दशकों में धरती का औसत तापमान 0–3 डिग्री सेल्सियस प्रति दशक की दर से बढ़ेगा। यह चिंताजनक है। तापमान की इस वृद्धि से विश्व के सारे जीव–जंतु बेहाल हो जाएंगे और उनका जीवन खतरे में पड़ जाएगा। पेड़–पौधों में भी इसी तरह का बदलाव आएगा। सागर के आस–पास रहने वाली आबादी पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ेगा। जल स्तर ऊपर उठने के कारण सागर तट पर बसे ज्यादातर शहर इन्हीं सागरों में समा जाएंगे। हाल ही में, कुछ वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि जलवायु में परिवर्तन का सिलसिला इसी तरह जारी रहा तो कुपोषण और विषाणुजनित रोगों से होने वाली मौतों की संख्या में भारी बढ़ोत्तरी हो सकती है। जलवायु परिवर्तन से हर साल पचास लाख लोग बीमार पड़ रहे हैं। इस पारिस्थितिक संकट से निपटने के लिए मानव को सचेत रहने की जरूरत है। दुनिया भर की राजनीतिक शक्तियां इस बहस में उलझी हैं कि गरमाती धरती के लिए किसे जिम्मेदार ठहराया जाए। अधिकतर राष्ट्र यह मानते हैं कि उनकी वजह से ग्लोबल वार्मिंग नहीं हो रही है। लेकिन सच यह है कि इसके लिए कोई भी जिम्मेदार हो, भुगतना सबको है।

ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ता खतरा

जो पानी की बर्बादी करते हैं, उनसे मैं यही पूछना चाहती हूँ कि क्या उन्होंने बिना पानी के जीने की कोई कला सीख ली है, तो हमें भी बताए, ताकि भावी पीढ़ी बिना पानी के जीना सीख सके। नहीं तो तालाब के स्थान पर मॉल बनाना क्या उचित है? आज यही हो रहा है। पानी को बर्बाद करने वालों यह समझ लो कि यही पानी तुम्हें बर्बाद करके रहेगा। एक बूँद पानी यानी एक बूँद खून, यही समझ लो। पानी आपने बर्बाद किया, खून आपके परिवार वालों

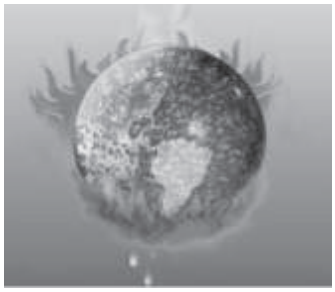

का बहेगा। इसलिए आज से ही नहीं, बल्कि अभी से पानी की एक–एक बूँद को सहेजना शुरू कर दो। वैश्विक तापमान यानी ग्लोबल वार्मिंग आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। इससे न केवल मनुष्य, बल्कि धरती पर रहने वाला प्रत्येक प्राणी त्रस्त है। ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए दुनियाभर में प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन समस्या कम होने के बजाय साल–दर–साल बढ़ती ही जा रही है। चूंकि यह एक शुरुआत भर है, इसलिए अगर हम अभी से नहीं संभले तो भविष्य और भी भयावह हो सकता है। पहले हम यह जान लें कि आखिर ग्लोबल वार्मिंग क्या है?

ग्लोबल वार्मिंग क्या है?

जैसा कि नाम से ही साफ है, ग्लोबल वार्मिंग धरती के वातावरण के तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी है। हमारी धरती प्राकृतिक तौर पर सूर्य की किरणों से उष्मा प्राप्त करती है। ये किरणें वायुमंडल से गुजरती हुई धरती की सतह से टकराती हैं और फिर वहीं से परावर्तित (रिफलेक्शन) होकर पुनः लौट जाती हैं। धरती का वायुमंडल कई गैसों से मिलकर बना है जिनमें कुछ ग्रीनहाउस गैसें भी शामिल हैं। इनमें से अधिकांश धरती के ऊपर एक प्रकार से एक प्राकृतिक आवरण बना लेती हैं। यह आवरण लौटती किरणों के एक हिस्से को रोक लेता है और इस प्रकार धरती के वातावरण को गर्म बनाए रखता है। क्या आपको मालूम है कि मनुष्यों, प्राणियों और पौधों के जीवित रहने के लिए कम से कम 16 डिग्री सेल्सियस तापमान आवश्यक होता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्रीनहाउस गैसों में बढ़ोत्तरी होने पर यह आवरण और भी मोटा होता जाता है। ऐसे में यह आवरण सूर्य की अधिक किरणों को रोकने लगता है और फिर यहीं से शुरू हो जाते हैं ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव।

ग्लोबल वार्मिंग की वजह क्या हैं?

ग्लोबल वार्मिंग के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार तो मनुष्य और उसकी गतिविधियां ही हैं। अपने आप को इस धरती का सबसे समझदार प्राणी मनुष्य अनजाने में या जानबूझकर अपने ही रहने के स्थान को खत्म करने पर तुला हुआ है। मानवनिर्मित जहाजों, बिजली बनाने वाले संयंत्रों इत्यादि से अंधाधुंध होने वाले गैसीय उत्सर्जन की वजह से कार्बन डाइ–ऑक्साइड गैस में बढ़ोत्तरी हो रही है जिससे इन गैसों का आवरण सघन होता जा रहा है। यही आवरण सूर्य की परावर्तित किरणों को रोक रहा है जिससे धरती के तापमान में वृद्धि हो रही है।

जंगलों का बड़ी संख्या में हो रहा विनाश इसकी दूसरी वजह है। जंगल कार्बन डाइ–ऑक्साइड की मात्रा को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करते हैं, लेकिन इनकी बेतहाशा कटाई से यह प्राकृतिक नियंत्रण भी हमारे हाथ से छूटता जा रहा है। इसकी एक अन्य वजह सीएफसी है जो रेफ्रीजरेटर्स, अग्निशामक यंत्रों इत्यादि में इस्तेमाल की जाती है। यह धरती के ऊपर बने एक प्राकृतिक आवरण ओजोन परत को नष्ट करने का काम करती है। ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली घातक पराबैंगनी (अल्ट्रावायलेट) किरणों को धरती पर आने से रोकती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस ओजोन परत में एक बड़ा छिद्र हो चुका है जिससे पराबैंगनी किरणें सीधे धरती पर पहुंच रही हैं और इस तरह से उसे लगातार गर्म बना रही हैं। यह बढ़ते तापमान का ही नतीजा है कि ध्रुवों पर सदियों से जमी बर्फ भी पिघलने लगी है। विकसित हो या अविकसित देश, हर जगह बिजली की जरूरत बढ़ती जा रही है। बिजली के उत्पादन के लिए जीवाष्म ईंधन (फासिल फ्यूल) का इस्तेमाल बड़ी मात्रा में करना पड़ता है। जीवाष्म ईंधन के जलने पर कार्बन डाइ–ऑक्साइड पैदा होती है जो ग्रीनहाउस गैसों के प्रभाव को बढ़ा देती है। इसका नतीजा ग्लोबल वार्मिंग के रूप में सामने आता है।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव

वातावरण का तापमान और बढ़ेगा। पिछले दस सालों में धरती के औसत तापमान में 0.3 से 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हुई है। आशंका यही जताई जा रही है कि आने वाले समय में ग्लोबल वार्मिंग में और बढ़ोत्तरी ही होगी।

समुद्र सतह में बढ़ोत्तरीः ग्लोबल वार्मिंग से धरती का तापमान बढ़ेगा जिससे ग्लेशियरों पर जमा बर्फ पिघलने लगेगी। कई स्थानों पर तो यह प्रक्रिया शुरू भी हो चुकी है। ग्लेशियरों की बर्फ के पिघलने से समुद्रों में पानी की मात्रा बढ़ जाएगी जिससे साल–दर–साल उनकी सतह में भी बढ़ोत्तरी होती जाएगी। समुद्रों की सतह बढ़ने से प्राकृतिक तटों का कटाव शुरू हो जाएगा जिससे एक बड़ा हिस्सा डूब जाएगा। इस प्रकार तटीय (कोस्टल) इलाकों में रहने वाले अधिकांश लोग बेघर हो जाएंगे।

मानव स्वास्थ्य पर असरः जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा असर मनुष्य पर ही पड़ेगा और कई लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। गर्मी बढ़ने से मलेरिया, डेंगू और यलो फीवर (एक प्रकार की बीमारी) जैसे संक्रामक रोग बढ़ेंगे। वह समय भी जल्दी ही आ सकता है जब हममें से अधिकांश को पीने के लिए स्वच्छ जल, खाने के लिए ताजा भोजन और श्वांस लेने के लिए शुद्ध हवा भी नसीब नहीं होगी।

पशु–पक्षियों व वनस्पतियों पर असरः ग्लोबल वार्मिंग का पशु–पक्षियों और वनस्पतियों पर भी गहरा असर पड़ेगा। माना जा रहा है कि गर्मी बढ़ने के साथ ही पशु–पक्षी और वनस्पतियां धीरे–धीरे उत्तरी और पहाड़ी इलाकों की ओर प्रस्थान करेंगे, लेकिन इस प्रक्रिया में उनका कुछ अस्तित्व खो जाएगा।

शहरों पर असरः इसमें कोई शक नहीं है कि गर्मी बढ़ने से ठंड भगाने के लिए इस्तेमाल में लाई जाने वाली ऊर्जा की खपत में कमी होगी, लेकिन इसकी पूर्ति एयर कंडीशनिंग में हो जाएगी। घरों को ठंडा करने के लिए भारी मात्रा में बिजली का इस्तेमाल करना होगा। बिजली का उपयोग बढ़ेगा तो उससे भी ग्लोबल वार्मिंग में इजाफा ही होगा।

ग्लोबल वार्मिंग से कैसे बचें?

ग्लोबल वार्मिंग के प्रति दुनियाभर में चिंता बढ़ रही है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस साल का नोबल शांति पुरस्कार पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाली संयुक्त राष्ट्र की संस्था इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) और पर्यावरणवादी अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति अल गोर को दिया गया है। लेकिन सवाल यह है कि क्या पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वालों को नोबेल पुरस्कार देने भर से ही ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से निपटा जा सकता है? बिल्कुल नहीं। इसके लिए हमें भरसक प्रयास करने होंगे।

निष्कर्ष

ग्लोबल वार्मिंग के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार तो मनुष्य और उसकी गतिविधियां ही हैं। अपने आप को इस धरती का सबसे बुद्धिमान प्राणी समझने वाला मनुष्य अनजाने में या जानबूझकर अपने ही रहने के स्थान को खत्म करने पर तुला हुआ है। मानवनिर्मित जहाजों, बिजली बनाने वाले संयंत्रों इत्यादि से अंधाधुंध होने वाले गैसीय उत्सर्जन की वजह से कार्बन डाइ–ऑक्साइड में बढ़ोत्तरी हो रही है। इसलिए सभी देश संधि का पालन करें। इसके तहत 2014 तक हानिकारक गैसों के उत्सर्जन, धुएं को कम करना होगा। यह जिम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है। हम सब भी पेट्रोल, डीजल और बिजली का उपयोग कम करके हानिकारक गैसों को कम कर सकते हैं। जंगलों की कटाई को रोकना होगा। हम सब अधिक से अधिक पेड़ लगाएं। इससे भी ग्लोबल वार्मिंग के असर को कम किया जा सकता है। तकनीकी विकास से भी इससे निपटा जा सकता है। हम ऐसे रेफ्रीजरेटर्स बनाएं जिनमें सीएफसी का इस्तेमाल न होता हो और ऐसे वाहन बनाएं जिनसे कम से कम धुआं निकलता हो।

असली खजाना

नीता अरोड़ा

बंद मुट्ठी में रेत सी, बीती जाए उमरिया,
अब तो सुध ले ले रे मनवा, क्यों सोए ओढ़ चदरिया।
अपने सुख और दुख की, सब तेरी ही जिम्मेदारी,
सुख–दुख हानि–लाभ, तेरे कर्मो की है ये कहानी।
क्यूं आए हैं और कहां से, कब है हमको जाना,
जीवन का अनजान रहस्य, न समझे मन मतवाला।
आ ही गए जब इस जीवन में, ऐसे इसको जीना,
बार–बार ये विष का प्याला, पड़े न हमको पीना।

मिला हमें जो इस दुनिया में, उसकी ही कृपा है,
उसी का दिया इस जीवन में, खाया पिया जिया है।
प्रकृति का है ऋण सभी पर, सोच समझ के जीना,
जितना होवे देना सीखो, कम से कम ही लेना।
लेना लगता आसान मगर, देना लगता मुश्किल है,
सूद समेत है लेती–देती, प्रकृति का यही नियम है।

अपने सुकर्मो से, इस धरती को स्वर्ग बनाओ,
नफरत, हिंसा और घृणा को, प्रेम प्यार से हराओ।
सुखी अगर होना चाहो, प्रण ले लो ये जीवन में,
सेवा सबकी करो मगर, आशा उस एक प्रभु से।
जीवन की गाड़ी को सन्मार्ग पर ले के जाना,
सभी को अपने जैसा समझो, दुख न किसी को देना।

टेढ़ी मेढ़ी पगडंडी पर आगे ही बढ़ते जाओ,
जो भी मिले जीवन में तुमको, प्रभु को समर्पित करते जाओ।
नहीं चाहिए हीरे मोती, सभी यहीं रह जाना,
सच्चा सौदा जोड़ ले प्राणी, असली यही खजाना।

अनियोजित शहरीकरण के खतरे

अजय कुमार

शहरीकरण को प्रायः विकास का प्रतीक माना जाता है। इसे विकास के सूचक या संकेतक के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। शहरों में प्रायः प्रति व्यक्ति अधिक आय, उच्च शिक्षा स्तर, रहन–सहन का उच्च स्तर, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, निम्न मातृ–शिशु मृत्यु दर तथा बेहतर सुविधाएं पायी जाती हैं, यही कारण है कि शहरों को विकास का केंद्र–बिंदु या धुरी कहा जाता है।

जहाँ एक ओर, शहरीकरण विकास के लिए वरदान साबित हुआ है, वहीं दूसरी ओर अनियोजित शहरीकरण ने अनेक समस्याओं को भी जन्म दिया है। अनियोजित शहरीकरण से तात्पर्य है कि शहरों में आवासीय इलाके का अनियोजित तरीके से बसा हुआ होना, यातायात की पर्याप्त व्यवस्था, साफ–सफाई और नालियों की उचित व्यवस्था तथा जल निकासी की पर्याप्त व्यवस्था न होना आदि।

पिछले कुछ दशकों में भारत में शहरीकरण में तेजी से वृद्धि हुई है। इसका मुख्य कारण भारी मात्रा में गाँव से शहरों की ओर पलायन रहा है। आज लगभग सभी शहरों में अनेक प्रकार की समस्याएँ परिलक्षित हो रही हैं और इन सबका कारण अनियोजित शहरीकरण रहा है।

अनियोजित शहरीकरण का सबसे अधिक प्रभाव पर्यावरण पर देखा गया है। शहरों में अनियोजित तरीके से बढ़ता भवन निर्माण उसे 'ऊष्मा द्वीप' के रूप में तब्दील कर देता है। वाहनों की बढ़ती संख्या तथा उससे उत्पन्न होने वाली हानिकारक गैसों व धुएँ से वायु प्रदूषण को बढ़ावा मिलता है। अधिक भवन निर्माण तथा सड़क आदि के लिए कंक्रीट बिछाने के कारण वर्षा जल भूमिगत नहीं हो पाता है और भू जल–स्तर में कमी आती है।

अनियोजित शहरीकरण की दूसरी प्रमुख समस्या मनुष्य के लिए आवास की कमी होना है। एक ओर जहाँ बड़े–बड़े घर तथा बंगलों में बहुत कम लोग रहते हैं, वहीं दूसरी ओर मलिन बस्तियों में कई व्यक्ति एक ही कमरे में जीवन व्यतीत करने के लिए विवश होते हैं। यदि नियोजित तरीके से शहरों का विकास किया जाए तो इस समस्या से काफी हद तक छुटकारा पाया जा सकता है।

अनियोजित शहरीकरण का प्रभाव यातायात पर भी देखा जाता है। प्रायः यह देखा गया है कि जो शहर अनियोजित तरीके से बसे हैं वहां पर सड़कों की चौड़ाई बहुत कम होती है। यातायात प्रबंधन की कोई व्यवस्था नहीं होती है। इस कारण सड़कों पर जाम लगा रहता है तथा लोगों को कम दूरी तय करने में भी काफी समय लग जाता है।

इसके अतिरिक्त, अनियोजित तरीके से बसे शहरों में जल निकास की समस्या, गंदे पानी की समस्या, ठोस अपशिष्ट निपटान की समस्या, सीवर आदि की समस्या देखी जाती है। दिल्ली, कोलकाता, मुंबई आदि महानगरों में जल निकासी की व्यवस्था न होने के कारण वहां पर वर्षा के समय जल भराव होना एक आम बात है जो जन–जीवन को बुरी तरह से प्रभावित करता है।

इस प्रकार, शहरीकरण यदि अनियोजित तरीके से हो तो उससे अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं और वह वरदान की जगह अभिशाप साबित होता है। अतः किसी भी शहर को विकसित करने से पहले पूरी तरह से एक योजना प्रारूप तैयार किया जाना चाहिए जिसमें सड़क व्यवस्था, बिजली, पानी, सीवर, जल निकास आदि को ध्यान में रखा जाए। शहरीकरण से होने वाले लाभों को सही मायने में तभी उठा पाएंगे जब कोई भी शहर नियोजित तरीके से बसा हो। अतः आज शहरीकरण की अपेक्षा नियोजित शहरीकरण की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

दिल्ली मेट्रो – दिल्ली की धड़कन

प्राण कुमार

धड़कन जिसमें शुद्ध हवा प्रवेश करती है और जीवन को सुलभ बनाती है। यही धड़कन फेफड़े रोग, साँस की बीमारियों से हमें मुक्ति दिलाती है।

दिल्ली मेट्रो दिल्ली की धड़कन पर मैं अपने विचार कुछ इस प्रकार प्रकट करता हूँ:–

न मिट्टी को दूषित करती है।
और न ही जल को छू पाती है।
रहती है अपनी मस्ती में,
समय के साथ तैयार
न ही करती है, वायु को दूषित,
न ही बिगाड़ पाती, ध्वनि को,
सुन्दरता की तो बात ही कम पड़ जाए,
सब के मन को भाती है।
और मन को मोह लेती है,
तभी तो दिल्ली की वरदान कही जाती है।
मेरी मेट्रो, दिल्ली मेट्रो कहलाती है।
जो दिल्ली की धड़कन कही जाती है।

मेट्रो ने मानव के जीवन पर निम्नलिखित प्रभाव डाले हैं:–

1. यातायात तथा प्रदूषण से मानव जीवन की सुरक्षा
2. मानव जीवन में समय की बचत

1. यातायात तथा प्रदूषण से मानव जीवन की सुरक्षा

दिल्ली मेट्रो प्रदूषण मुक्त है क्योंकि न ही इससे धुआं निकलता है और न ही किसी प्रकार का प्रदूषण जैसे– ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और न ही मिट्टी प्रदूषण होता है। इन सबको मात देती है दिल्ली की धड़कन –दिल्ली मेट्रो।

प्रदूषण, जानलेवा दुर्घटनाओं और यातायात जाम की स्थिति से बचने के लिए सरकार ने राजधानी दिल्ली में मेट्रो रेल चलाने की कवायद शुरू की, जो आज के जीवन के लिए सर्वोपरि है।

विश्व में अब तक जापान, कोरिया, हांग–कांग, सिंगापुर, जर्मनी तथा फ्रांस इत्यादि देशों में मेट्रो रेल चल रही है।

दिल्ली मेट्रो के एक अनुमान के अनुसार समस्त दिल्ली में मेट्रो रेल के रूट तय किये गये हैं। यदि वे शुरू हो जाते हैं तो राजधानी की सड़कों से लगभग 2600 बसें कम हो जाएंगी। बसों से होने वोले प्रदूषण में कमी आएगी क्योंकि बसों से निकलने वाले धुएं में कार्बन मोनोक्साइड गैस होती है जो साँसों के द्वारा मानव जीवन को रोगग्रसित कर देती है। प्रदूषण साँस की बीमारी, कैंसर, फेफड़े इत्यादि रोगों को जन्म देता है। यह धुआँ कार्बन मोनोक्साइड गैस है जो पृथ्वी पर सबसे जहरीली गैस है, जिसने वायुमंडल में उपस्थित ओजोन परत में भी छेद कर दिया है। ओजोन परत पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी पर आने से रोकती है। पराबैंगनी किरण चर्म कैंसर पैदा करती है।

दिल्ली मेट्रो के सभी रूटों पर मेट्रो शुरू कर दी जाए तो इससे करोड़ों रुपये के ईंधन की बचत होगी। हमारे देश के कुछ महानगर जैसे कोलकाता, मुम्बई व चेन्नई के कुल वाहनों से कहीं अधिक वाहन दिल्ली में हैं, क्योंकि राष्ट्रीय दिल्ली राजधानी में 35 लाख वाहन हैं जिसमें छोटे–बड़े दोनों प्रकार के वाहन शामिल हैं।

2. मानव जीवन में समय की बचत

मेट्रो से लोग भीड़–भाड़ भरी सड़कों, धुएं व धूल–मिट्टी से तो बचते ही हैं और इससे भी महत्त्वपूर्ण चीज है कि इससे समय की बचत होती है। आज की भागती जिन्दगी में लोगों को समय पर मंजिल तक पहुँचाने में दिल्ली मेट्रो का महत्वपूर्ण योगदान है। मेट्रो हमें मिनटों में मंजिल तक पहुँचाती है। इस वातानुकूलित मेट्रो से सफर करने का अलग ही आन्नद है। दिल्ली मेट्रो का किराया भी अन्य परिवहन साधनों की अपेक्षा कम है।

इन सब बातों के अलावा मूल बात यह हैं कि दिल्ली मेट्रो निम्नलिखित चारों तरह के प्रदूषणों को मात देती है:–

ध्वनि प्रदूषण– दिल्ली मेट्रो से ध्वनि प्रदूषण पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता है।

वायु प्रदूषण– दिल्ली मेट्रो से वायु प्रदूषण का दूर–दूर तक कोई नाता नहीं है।

जल प्रदूषण– दिल्ली मेट्रो से जल प्रदूषण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

मिट्टी प्रदूषण– दिल्ली मेट्रो से मिट्टी प्रदूषण का दूर–दूर तक कोई नाता नहीं है।

अंत में, हम कह सकते हैं कि दिल्ली मेट्रो ने उक्त सकारात्मक योगदान के कारण दिल्ली की दिल की धड़कन बनने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

आयुर्वेदिक दोहे

शहद आंवला जूस हो, मिश्री सब दस ग्राम।
बीस ग्राम घी साथ में, योवन स्थिर काम।।

****

लाल टमाटर लीजिए, खीरा सहित स्नेह।
जूस करेला साथ हो, दूर रहे मधुमेह

माँ की ममता

हरविंदर कौर सेठी

इंसान इस बात को नहीं समझ पाया कि माता–पिता का स्थान देवताओं से भी ऊपर है। हमारे वेदों में इसका प्रमाण मिलता है कि पिता को आकाश के समान माना गया है। जिस प्रकार पिता का हाथ अपने बच्चों के सिर पर हमेशा बना रहता है, उसी प्रकार माता भी अपने बच्चों को बहुत अधिक प्यार करती है। इसी कारण माता को धरती के समान माना गया है। जब बच्चे को ठोकर लगती है तो माँ उसे अपनी गोद में ले लेती है जिससे उसे चोट का अहसास कम हो। यदि इंसान इस बात को समझेगा तो वो हमेशा दुख–तकलीफ से दूर रहेगा।

माता–पिता तो भगवान का रूप ही होते हैं। वे हमें पैदा करने के बाद समाज में चलने लायक बनाते हैं जिससे समाज में उनके बच्चों को खूब इज्जत मिले और वे आत्मसम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट होता है कि पुत्र कुपुत्र हो सकता है, पर माता कुमाता नहीं हो सकती। माँ तो माँ होती है जो प्रेम का सागर बनकर हमेशा बच्चों को खुश रहने का आशीर्वाद देती रहती है। उसका प्रेम, ममता, त्याग सब निस्वार्थ होता है। माँ हर हाल में अपने बच्चे का भला चाहती है।

इस संबंध में यहां पर मैं एक छोटी सी कहानी के रूप में उदाहरण प्रस्तुत करती हूँ:–

"माँ का एक दुलारा बेटा था। वह बहुत प्यारा और बहुत अच्छा था। उसके जीवन में एक अजीब सी घटना घटी। माँ के इस दुलारे बेटे को एक वैश्या से बहुत प्यार हो गया। इसके बाद वह माँ से लड़ाई–झगड़ा करने लगा। माँ ने उसे बहुत समझाया परन्तु वह तो उस वैश्या के सौन्दर्य में बहुत आसक्त रहने लगा था।

एक दिन वैश्या ने लड़के से कहा कि तुम यदि मुझे प्यार करते हो तो तुमको यह बात सिद्ध करनी होगी। इसके लिए वैश्या ने लड़के से अपनी माँ का कलेजा लाकर देने को कहा। वैश्या के प्रेम में लड़का इतना अंधा हो चुका था कि उसने अपनी माँ को मार दिया तथा कलेजा लेकर चल दिया। रास्ते में उसे बहुत ज़ोर से ठोकर लगी और वह गिर गया। गिरते ही माँ का कलेजा भी हाथ से गिर गया तो माँ के कलेजे ने उससे पूछा कि – बेटा चोट तो नहीं आई। वह दुबारा कलेजे को उठा कर वैश्या के पास गया। वैश्या बोली कि – जिस माँ ने तुझे नौ महीने पेट में रखा, तुझे पाल–पोष कर इतना बड़ा किया। जब तू उसका ही नहीं हुआ तो तू मेरा क्या होगा? वैश्या इतना कह कर वापस चली गई।"

यह कहानी एक माँ की अपने बच्चों के प्रति अथाह प्रेम को दर्शाती है। माँ, बच्चे को जन्म देने से लेकर बड़े होने तक ममता के आँचल में लपेट कर पालती है। अपने खून से उसको सींचती है। बच्चे की एक किलकारी सुनने को माँ बेचैन रहती है। जब बच्चा बड़ा होने लगता है तब माँ उसे अपनी उंगली का सहारा देकर चलना सिखाती है। माँ स्वयं अनेक तकलीफों को सहन करती है, परंतु अपने बच्चे को किसी भी तरह की परेशानी नहीं होने देती। वह खुद भूखा रहकर अपने बच्चे का पेट भरती है।

औलाद की किसी भी उन्नति पर माँ की आँखों में खुशी के आँसू भर आते हैं और माँ बच्चे की बड़ी से बड़ी गलती को माफ कर देती है, जबकि बच्चे बड़े होकर माँ की सेवा करने के स्थान पर उल्टा जबाव देते हुए कहते हैं

कि आपने हमारे लिए क्या किया है? उनके मरने के बाद उनके बच्चे घर और दौलत के हकदार हो जाते हैं।

इसी पर एक दोहा सटीक बैठता हैः–

"ममता के आँचल का सहारा मिला,
और मिला प्यार का समन्दर,
खो गए दुनियाँ की धूल में,
हम भूल गए उन लम्हों को,
जिस माँ ने खुद भूखे रहकर,
हमें समाज में जीने का रास्ता बताया..........

वास्तव में, हम माँ का मूल्य उसके जिन्दा होने पर नहीं पहचानते। हमारा बचपन बचपने में ही बीत जाता है और जवानी अहंकार में। माँ की कमी का अहसास हमें तब होता है जब माँ नहीं रहती। हमारी हर छोटी–बड़ी गलती को क्षमा करने वाली माँ नहीं रहती। माँ के द्वारा किए गए त्याग, बलिदान, तपस्या का एक अंश भी यदि कोई लौटा दे, तो इससे बड़ा काम कोई नहीं हो सकता। माँ की ममता का कोई मोल नहीं होता और न ही कोई इसे खरीद सकता है।

◇◇

भ्रष्टाचार का रावण

हरपाल सिंह

हे कलयुग के रावण तेरा नाम है भ्रष्टाचार।
बढ़ता जाता हरदम तेरा अत्याचार।

तू लालच से सीता को हर लेता है,
बदले में उसको तू लालच ही देता है।
बदल जाता है उसका भी शिष्टाचार,
हे कलयुग के रावण तेरा नाम है भ्रष्टाचार।

क्या मन्दिर क्या मस्जिद सभी में तू पनपा है,
क्या आत्मा क्या धर्मात्मा सभी में तू जिन्दा है।
बदल दिया तूने इंसान का ही व्यवहार।
हे कलयुग के रावण तेरा नाम है भ्रष्टाचार।

न धर्म देखता न जात देखता,
सभी के ऊपर है तू मेहरबान।
मंत्री हो या संतरी सभी करते तेरा इंतजार।
हे कलयुग के रावण तेरा नाम है भ्रष्टाचार।

जागरूकता रूपी राम तेरा वध करेगा,
पारदर्शिता की आग में तू धूँ–धूँ कर जलेगा।
मिट जाएगा तेरा सारा अत्याचार।
हे कलयुग के रावण तेरा नाम है भ्रष्टाचार।

जीवन जीने का ढंग

शशिकान्ता पुरी

एक शिष्य ने अपने गुरू से पूछा, महाराज संसार में रहने का तरीका क्या है? गुरू ने कहा – बहुत अच्छा प्रश्न पूछा, एक–दो दिन में उत्तर दूंगा। अगले दिन गुरू जी के पास एक शिष्य कुछ फल और मिठाइयां लाया, जिन्हें उनके सामने रखकर उन्हें दण्डवत प्रणाम कर उनके पास बैठ गया। गुरू जी ने उस व्यक्ति से कुछ विशेष बात नहीं की, पीठ मोड़ी और सभी फल खा लिए। वह व्यक्ति सोच में पड़ गया कि कैसा विचित्र साधू है, वस्तुएं स्वीकार कर लीं पर मुझसे ढंग से बात तक नहीं की। वह क्रुद्ध होकर चला गया। उसके जाने के बाद गुरू जी ने शिष्य से पूछा कि वह व्यक्ति क्या कह रहा था। शिष्य बोला महाराज, वह तो बहुत क्रुद्ध था। वह कह रहा था कि वस्तुएं तो खा लीं पर मुझसे बात तक नहीं की। महात्मा बोले, तो सुन, संसार में रहने का यह ढंग ठीक नहीं, कोई दूसरा ढंग सोचना चाहिए ।

थोड़ी देर बाद एक दूसरा व्यक्ति आया। वह भी फल लाया और गुरू जी के सामने रख कर बैठ गया। गुरू जी ने फलों को उठाया और आश्रम से लगी गली में बाहर फेंक दिया। फिर उस व्यक्ति से बड़े प्यार से बातें करने लगे। घर, परिवार, कारोबार के बारे में हालचाल पूछा तथा कुछ उपदेश भी दिया। गुरू जी की मीठी–मीठी बातें सुनकर भी वह व्यक्ति मन ही मन कुढ़ता रहा कि कैसा विचित्र साधू है। बातें तो मीठी–मीठी करता है पर मेरी दी हुई वस्तुओं का अपमान करता है। थोड़ी देर बाद वह भी चला गया। उसके जाने के बाद गुरू जी ने शिष्य से फिर पूछा कि वह व्यक्ति क्या कह रहा था। शिष्य बोला महाराज, वह तो बहुत क्रुद्ध था। वह कह रहा था कि मेरी लाई हुई वस्तुओं का अपमान कर दिया। महात्मा बोले, तो सुन, संसार में रहने का यह ढंग भी ठीक नहीं, कोई दूसरी विधि सोचनी चाहिए।

तभी एक और सज्जन वहां आ गए। वे भी फल तथा मिठाइयां लाए थे जिन्हें गुरू जी के समक्ष रखकर वे बैठ गए। गुरू जी ने उनसे बहुत प्यार से बातें कीं। उन वस्तुओं को आश्रम में उपस्थित लोगों को बांट दिया, कुछ फल उस व्यक्ति को भी दिए तथा कुछ स्वयं भी खाए। उससे घर–परिवार की कुशलता की बातें पूछीं तथा सुंदर कथाएं भी सुनाईं। जब वह चला गया तो गुरू जी ने शिष्य से फिर पूछा कि वह व्यक्ति क्या कह रहा था। शिष्य बोला महाराज, वह तो बहुत प्रसन्न था, आपकी बहुत तारीफ कर रहा था। कहता था ऐसे सन्त से मिल कर चित्त प्रसन्न हो गया। महात्मा बोले, तो सुन, संसार में रहने का यही ढंग सही है।

संसार में कई लोग वस्तु, वैभव, साधन से बहुत प्रेम करते हैं उनको पाने की लालसा में दिन–रात एक कर देते हैं। उन्हें पाने के लिए सद्गुण, सत्संग सब ताक पर रख देते हैं और परमात्मा की तरफ पीठ करके रहते हैं। दूसरे वे लोग हैं, जो परमात्मा से प्रेम का दम भरते हैं, परन्तु परमात्मा की बनाई सृष्टि, व्यक्तियों से घृणा करते हैं, उनके प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं करते हैं और उनके बारे में हीन भावना रखते हैं। उपरोक्त दोनो ही तरीके गलत हैं।

जीवन जीने का सही तरीका यह है कि हम परमात्मा को जानते हुए, उसे याद करते हुए, संसार के कार्यो को कर्मयोगी की तरह सम्पन्न करें। सभी कर्त्तव्यों को पूर्ण करते हुए ईश्वरीय गुणों को न भूलें। गुणों को साथ रखकर और गुणों को भूलकर कार्य करने में बहुत अंतर है। जहां एक किसान बहुत अशान्त मन से बैलों पर

अत्याचार करते हुए खेती कर रहा है, वहां दूसरा किसान शांत चित्त बैलों से प्यार से हल चलाता हुआ खेती कर रहा है। अब काम तो दोनों कर रहे हैं। पहला किसान कर्म करते हुए भी विकारों में जकड़ा हुआ है जबकि दूसरा किसान काम करते हुए भी कर्म के बन्धन से मुक्त है। पहले किसान के खाते में मेहनत के बावजूद कुछ भी जमा नहीं हो रहा जबकि दूसरे के खाते में मेहनत के फल के साथ सद्‌गुणों का पुण्य भी जमा हो रहा है। अतः केवल कर्म करना ही महत्व नही रखता, बल्कि सही मनोवृत्ति से, सद्‌गुणवृत्ति से कर्म करने पर ही पुण्य का खाता जमा होता है।

जाने कहां गए वो दिन

शान्ता थॉमस

उम्र के बढ़ते पड़ाव संग,
बचपन मेरा गया यूं छिन।
हर रोज, मैं पूछूं खुद से,
जाने कहां गए वो दिन?

वो बेपरवाह सी जिन्दगी,
वो खिलखिलाती हँसी।
आगे बढ़ने की चाह में,
तनाव की जंजीरों में फँसी।

जब माँ की प्यारी गोद में,
मुझको पूरा जहां मिल जाता था।
पापा के लाए खिलौनों संग,
पूरा दिन कट जाता था।

जब दादी माँ की कहानियों,
के बिन रातें पूरी न होती थीं।
दीदी का हाथ कसकर पकड़
जब मैं बेपरवाह सो जाती थी।

हँसी–हँसी में, खेल–खेल में,
दिन यूं ही बीत जाता था।
किसी चीज़ की चिंता न थी,
सब बिन माँगे मिल जाता था।

पर स्थिर जीवन नहीं,
उम्र तो बढ़ती कहानी है।
बचपन के दिनों को याद कर,
आया आँखों में पानी है।

पहले लड़ाई का मतलब होता था,
भाई–बहन को तंग करना।
अब लड़ना है खुद से,
लाखों में खुद को साबित करना।

चिंता भरी सुबह है अब,
रातें कटती, तारे गिन–गिन।
बेपरवाह दिन–रात वाले
जाने कहाँ गए वो दिन?

हँसी, अब पूछे मुझसे,
कहाँ भुला दिया मुझको।
वो नन्हीं गुड़िया सवाल करे,
कहाँ सुला दिया मुझको?

पर अभी भी जिन्दगी तो है बाकी,
बढ़ना होगा पीछे देखे बिन।
ये नम आँखें पूछें
जाने कहाँ गए वो दिन?
जाने कहाँ गए वो दिन?

मुस्कुराइए और तनाव मुक्त रहिए

नरेंद्र पाल

मुस्कान चेहरे का एक ऐसा भाव है जिसमें होठों के किनारे हल्के से ऊपर की तरफ उठ जाते हैं और इससे एक व्यक्ति का उत्साह, रजामंदी या खुशी जाहिर होती है। मुस्कान की खासियत यह है कि इससे बिना कुछ कहे आप अपनी भावना दूसरों पर जाहिर कर सकते हैं।

क्या मुस्कुराने से वाकई बहुत फर्क पड़ता है? जी हाँ, मुस्कुराहट से वास्तव में बहुत फर्क पड़ता है। इसका असर न केवल मुस्कुराने वाले पर होता है, बल्कि उस पर भी होता है जिसे देखकर आप मुस्कुराते हैं।

आज भी मुस्कुराहट का ऐसा ही अच्छा असर हम पर और दूसरों पर होता है। अगर हम काफी समय से तनाव महसूस कर रहे हैं तो एक अच्छी–सी मुस्कान से इसको दूर किया जा सकता है। अगर हम तनावग्रस्त हैं या स्वयं निराश महसूस कर रहे हैं तो एक मामूली मुस्कान से हमारे मन का बोझ हल्का हो सकता है जिससे हम आसानी से निराशा का सामना कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक लड़की को लगता था कि लोग उसे पसंद नहीं करते, इसीलिए उसे तीखी नजरों से देखते हैं। इससे वह एकदम निराश हो गई और स्वयं को अकेला समझने लगी तथा उसे कुछ अच्छा नहीं लगता था। जब उसने अपनी एक सहेली को यह सब बताया तो उसने सलाह दी कि अगर तुम्हारी नजर किसी पर पड़े जो तुम्हें देख रहा हो, तो तुम उसे देखकर मुस्कुरा देना। उस लड़की ने दो हफ्ते तक इस सलाह पर अमल किया और नतीजा देखकर हैरान रह गई। उसके मुस्कुराने पर दूसरे भी जवाब में मुस्कुराते थे। अब उसकी सारी परेशानी दूर हो गयी। वह कहती है, "जिंदगी अब कितनी हसीन लगने लगी है।" जी हाँ! एक मुस्कान से हम स्वयं भी राहत महसूस करेंगे साथ ही दूसरों के साथ हमारी दोस्ती बढ़ेगी।

लाभप्रद है मुस्कुराना

मुस्कुराने से इंसान का खराब मूड ठीक हो जाता है। इससे सेहत पर भी अच्छा असर होता है। कहावत है कि हँसना दवा के बराबर काम करता है। डॉक्टरों का कहना है कि इंसान के मन में जैसी भावनाएँ होंगी उसकी सेहत भी वैसी ही होगी। अगर किसी को बहुत टेन्शन हो या मन में बुरे–बुरे ख्याल आते हों तो ऐसे इंसान के बीमार होने का खतरा ज्यादा रहता है। दूसरी तरफ, जो लोग हमेशा मुस्कुराते हैं या फिर ठहाके मारकर हँसते हैं उनके शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। खुश रहने वाला व्यक्ति कम बीमार होता है।

हम अपनी मुस्कुराहट से दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं। अगर कोई हमें प्यारी–सी मुस्कान के साथ सलाह देता है तो हम खुशी–खुशी उसकी सलाह पर अमल करते हैं। तनाव भरे माहौल में भी मुस्कुराहट से बहुत–सी गलतफहमियाँ दूर हो जाती हैं।

अच्छी मुस्कान के लिए अच्छा इंसान होना जरूरी है

अच्छी मुस्कुराहट का हमारे विचारों और हमारी भावनाओं से गहरा नाता है। जो हमारे मन में होता है, वही हमारी जुबान से निकलता है। अच्छी बातें अच्छे इंसान के दिल से निकलती हैं। हमारे दिल में जो भी है वह देर–सवेर हमारी बातचीत, कामों से या फिर हमारे चेहरे के भाव से बाहर आ जाता है। अतः हमें कोशिश करते रहना चाहिए कि हम अपने मन को अच्छे विचारों से भरें। दूसरों के लिए हमारे दिल में कैसी भावना है यह हमारे चेहरे पर साफ नजर

आती है। इसलिए हमें अपने परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों और दोस्तों के अच्छे गुणों पर ध्यान देना चाहिए और उनके अच्छे गुणों को अपनाना भी चाहिए। हमे दूसरों के प्रति अच्छे विचार रखने चाहिएं, तब हमें उन्हें देखकर मुस्कुराने में कोई दिक्कत नहीं होगी। यह सच्ची मुस्कान होगी, क्योंकि ये ऐसे मन से निकलेगी जो अच्छाई, भलाई, दया और करुणा से भरी हुई है। हमारी आँखों में चमक होगी और दूसरे भी देख पाएँगे कि हमारी मुस्कान, सच्ची और दिल से है।

हम लोग पेशेवर एक्टरों की तरह नहीं हैं जो किसी भी वक्त एक बड़ी–सी दिलकश मुस्कान बिखेर सकते हैं और न ही हम उनकी तरह नकली हँसी हँसना चाहेंगे। हम चाहेंगे कि हमारी मुस्कान सच्ची और दिल से हो। स्कूल में टीचर बच्चों से कहते हैं कि – 'मुस्कुराने से पहले सहज होना चाहिए नहीं तो हमारी मुस्कान नकली जान पड़ती है। लेकिन दिल से तभी मुस्कुराया जा सकता है जब हमारा दिल अच्छी बातों से भरा हो।'

हमें यह भी समझना चाहिए कि कुछ लोगों के लिए मुस्कुराना आसान नहीं होता। हो सकता है वे ऐसे माहौल में या ऐसे परिवार में बड़े हुए हों, जहाँ आमतौर पर गंभीर रहने पर जोर दिया जाता है। इसलिए उनके दिल में अपने पड़ोसियों के लिए प्यार होने पर भी वे उनसे मुस्कुराकर बात नहीं करते। लेकिन हमारे देश में ज्यादातर लोग आपस में मुस्कुराकर ही एक दूसरे का स्वागत करते हैं जबकि विदेशों में ज्यादातर लोग गंभीर रहते हैं। कुछ लोग स्वभाव से शर्मीले होते हैं और किसी को देखकर मुस्कुराना उनके लिए आसान नहीं होता। फिर हर इंसान का स्वभाव अलग–अलग होता है कोई ज्यादा मुस्कुराता है तो कोई कम। इसलिए लोगों की अच्छाई को हम उनकी मुस्कुराहट से नहीं नाप सकते।

अगर आप भी मुस्कुराने में दिक्कत महसूस करते हैं तो क्यों न कोशिश करें? अगर आप दूसरों के साथ "भलाई" करना चाहते हैं तो मुस्कुराना इसका पहला कदम है, और ऐसा करना आपके बस के बाहर तो नहीं है! इसलिए दूसरों को मुस्कुराकर 'हेलो' कहने में और उनका हौंसला बढ़ाने में पहल कीजिए। यकीन करें, लोग आपको बहुत पसंद करेंगे। ऐसा करने की आदत डालिए, फिर मुस्कुराना आपके लिए आसान हो जाएगा।

दु:ख की बात यह है कि हर मुस्कान सच्ची नहीं होती। मतलबी, धोखेबाज, बेकार किस्म का सामान बेचनेवाले सेल्समैन और दूसरे इसी तरह के लोग ऐसी गजब की मुस्कान बिखेरते हैं कि देखनेवाला लट्टू हो जाता है। वे जानते हैं कि मुस्कुराने से उनका काम बन जाता है इसलिए उनकी मुस्कुराहटें खोखली होती हैं जो सिर्फ किसी को फँसाने के लिए होती है। हमें ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि आप हर मुस्कान को शक की निगाह से देखें क्योंकि सारी उंगलियां एक समान नहीं होती हैं।

जीवन–सूत्र

तूफान में ताश का घर नहीं बनता,
रोने से बिगड़ा मुकद्दर नहीं बनता,
दुनिया को जीतने का हौसला रखो,
एक हार से कोई फकीर
और एक जीत से कोई सिकंदर नहीं बनता।

भारत–भूमि एवं कृषि का संबंध

रमा देवी

भारत देश विश्व के सबसे पुराने देशों में से एक है। यहां पर अनेक सभ्यताओं का विकास हुआ और कुछ सभ्यताएं फिर यहां से पलायन करके विश्व के अन्य स्थानों पर बस गयीं। इस प्रकार भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब विश्व के कई स्थानों पर दिखाई देता है। भारत देश का प्राचीनतम एवं मुख्य व्यवसाय कृषि रहा है। श्रीकृष्ण भगवान ने 5000 साल पहले इसी भारत में एक ही जीवन में तीन रूप दिखाए। किसान एवं ग्वाला का रूप, एक सफल राजा तथा एक देव का रूप जो एक यादव कुल में ग्वाले के रूप में जन्म लेते हैं। गायों को चराते हैं। एक साधारण बालक की तरह नटखट शरारतें करते हैं। बाद में एक राजा तथा देव बनकर अधर्म का नाश तथा धर्म की स्थापना करते हैं। श्रीकृष्ण जैसा क्रांतिकारी रूप भारत के सिवाय अन्य कहीं देखने को नहीं मिलता। उन्होंने 100 वर्षों तक राज किया तथा लोगों को कर्मयोग का रास्ता दिखाया।

पहले हमारी शिक्षा पद्धति में एनसीआरटी, सीबीएसई, आईसीएसई जैसे कठोर पाठ्यक्रम नहीं थे। वो पाठ्यक्रम थे जो हमें मिट्टी से जोड़ते थे। मौलिक शिक्षा के साथ–साथ चरित्र–निर्माण संबंधित ज्ञान पर विशेष बल दिया जाता था। विशेष रूप से कृषि तथा उससे संबंधित पाठ्यक्रम होते थे। भारत वास्तव में कृषि प्रधान राज्य था यहां बिना कीटनाशकों एवं यूरिया के सात्विक फसलों का उत्पादन होता था। आज अगर मैं वर्तमान शिक्षा पद्धति को देखती हूँ तो सब पाठ्यक्रम पैसा अर्जित करने वाले व्यवसायों की शिक्षा देते हैं। कृषि तथा मिट्टी से जुड़े पाठ्यक्रम तो जैसे लुप्त होते जा रहे हैं। इस कारण समाज का हर वर्ग कृषि से दूर होकर शहरों की चकाचौंध की तरफ भागा जा रहा है। कृषि आज एक सेवा का नहीं, बल्कि व्यवसाय का माध्यम बन गया है जिस कारण इसके मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं। अन्न की सात्विकता एवं पौष्टिकता कीटनाशकों एवं यूरिया खाद के कारण समाप्त होती जा रही है।

वास्ताव में पर्यावरण क्या है? खेती क्या है? यह क्यों आवश्यक है? आज के बच्चों को इन प्रश्नों का पता ही नहीं है। इस सदी में कैंसर जैसी अनेक बीमारियां भी बड़ी तेजी से पनपती जा रही हैं। हर इंसान शारीरिक व मानसिक समस्याओं से घिरा हुआ है तथा उनके समाधान के लिए कहां–कहां नहीं जाता, कितने पैसे खर्च कर देता है। वास्तव में, इन सब समस्याओं का समाधान इस धरती माँ के हृदय में छिपा हुआ है। कहा भी गया है – जैसा अन्न, वैसा मन। सात्विक भोजन, सात्विक अन्न से प्राप्त होगा तथा सात्विक अन्न हमें हमारी पुरानी कृषि पद्धतियों से प्राप्त होगा जिसमें हानिकारक रसायन, कृत्रिम खाद का प्रयोग नहीं होता था, अपितु सब कुछ प्राकृतिक था। गाय का गोबर खाद के रूप में प्रयोग होता था। मिश्रित खेती होती थी। सभी समस्याओं का समाधान हमारे भोजन के साथ है।

जैसा आहार वैसे विचार, जैसे विचार वैसा व्यवहार।

जैसा व्यवहार, वैसे संस्कार।।

इस भारत भूमि पर जाने कितनी सभ्यताओं का विकास एवं पतन हुआ। उन सभ्यताओं तथा इस भारतखण्ड की अन्य किसी से भी तुलना नहीं की जा सकती। उन समस्त सभ्यताओं ने अपना विशेष संबंध इस मिट्टी से बनाए रखा, जिसका प्रमाण वहां पाए सिक्कों व निर्मित मूर्तियों पर हैं जिन पर फसलों व जानवरों के प्रतीक चिन्ह पाए गए हैं। द्वापर युग के राजा श्रीकृष्ण ने ग्वाला बनकर तथा उनके दाऊ भैया बलराम ने हल को साथ रखकर इसी संबंध का प्रमाण दिया। समस्त विश्व की स्त्रियों की शक्ति का प्रतीक माता सीता भी धरती के साथ हमारे रिश्ते को दिखाती हैं।

कर्मयोगी व विदेही कहलाने वाले राजा जनक जब खेत में हल जोत रहे थे तो उन्हें माता सीता धरती से प्राप्त हुईं जिसको उन्होंने अपनी पुत्री की तरह पाला। अंत में सीता माता अपने सभी कर्तव्यों का निर्वाह करके धरती की गोद में समा गईं।

एकादशी की कहानी में कामधेनु गाय का वर्णन है जिसमें विश्वामित्र को इन्द्र के द्वारा दिए गए स्वर्ग आदि प्रलोभनों के बावजूद उन्होंने कामधेनु माता को देने से मना कर दिया। यह भी भगवान विश्वामित्र का प्रकृति प्रेम ही दर्शाता है। पहले यह भूमि हरी–भरी प्रकृति से ओत–प्रोत थी तथा यहां दूध और दही की नदियां बहती थीं। सब कुछ शुद्ध रूप में तथा स्वयं ही प्राप्त था। हर किसी के लिए सात्विक भोजन की व्यवस्था थी। इसके विपरीत, अब इस समाज ने अपने मूल्यों को खो दिया है तथा यह समाज नरक समान बनता जा रहा है। इसलिए आज खाद्य सुरक्षा जैसे बिल की आवश्यकता पड़ी। आज हमें एक महत्वाकांक्षी कृषक के स्थान पर एक भावनात्मक रूप से धरती माँ से जुड़े हुए किसान की तरह बनने की आवश्यकता है जो इस धरती को अपनी जननी समझे।

आज समाज के नवयुवक व नवयुवतियां हमारे पैतृक व्यवसायों कृषि आदि से दूर होकर जुआ, शराब व अनेक प्रकार के नशों की तरफ बढ़ रहे हैं जो उनके आत्मिक ज्ञान के साथ–साथ उनके चरित्र को भी दूषित कर रहा है। मानव आज प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है। कृषि योग्य भूमि पर बड़ी–बड़ी इमारतें बन रही हैं। पेड़ काटे जा रहे हैं। नदियों के बहाव को रोककर बांध बनाए जा रहे हैं। प्रकृति त्राहि–त्राहि कर रही है तथा मानव को समय–समय पर अपनी प्राकृतिक आपदाओं के द्वारा चेतावनी भी दे रही है। चाहे वो भुज का भूकंप हो या उत्तराखण्ड की जल तबाही। कालिन्दी नदी को मैला करने वाले सर्प कालिया के ऊपर तांडव करके बाल–गोपाल रूप में भगवान श्रीकृष्ण ने प्रकृति को मैला करने वालों को चेतावनी ही दी थी। ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत का कम होना ये सब इसी का परिणाम हैं। हम चुप रहकर प्रकृति का शोषण करने वालों का ही साथ दे रहे हैं। अब हमें हर प्रकार से ऊर्जा को कृषि विकास कार्यों में लगाना होगा तथा आने वाली पीढ़ियों तथा स्वयं के लिए एक स्वच्छ व सेहतमंद वायुमंडल का निर्माण करना होगा। अंत में, मुझे कहीं पढ़ी हुईं निम्न पंक्तियां विस्मृत हो आई हैं –

"इंसान समझता है कि वह अन्न पैदा करता है तथा भोजन को झूठा छोड़ उसे वह व्यर्थ कर देता है, जबकि भोजन धरती मां अपना हृदय चीर कर हम बच्चों को देती है। इसलिए इसे व्यर्थ न करें।"

अपने आप को भारतभूमि के साथ जोड़ें तथा प्रत्येक व्यक्ति अपने घर के आसपास वृक्षारोपण करे तथा आंगन में तुलसी का पौधा अवश्य लगाए। जहां, तुलसी महालक्ष्मी का रूप होती है, वहीं वह वातावरण को शुद्ध रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हँसगुल्ला

एक मोटी औरत डॉक्टर के पास गई और बोली–डॉक्टर आपने तो कहा था कि खेलने से मोटापा कम होता है पर मेरा मोटापा तो बिल्कुल कम नहीं हुआ।

डॉक्टर–आप कौन सा खेल खेलती हो?
मोटी औरत–कैंडी क्रश

ज्ञान का प्रकाश

संकलनः उदित रत्न

पुराने समय की बात है चीन में ली ली नाम की एक लड़की थी। शादी होने के पश्चात वह अपने ससुराल में रहने लगी। उसके एवं उसकी सास के व्यवहार अलग थे। कुछ ही समय में उनके विचारों में भिन्नता दिखने लगी। सास की कई आदतों पर ली ली को क्रोध आता था। सास भी ली ली की अक्सर आलोचना करती थी। इस तरह दिन, महीने बीतते गए लेकिन ली ली और उसकी सास में तर्क और लड़ाई जारी रही। चीन के रिवाज़ के अनुसार ली ली को अपनी सास के सामने झुकना होता था और उसकी हर इच्छा एवं आदेश का पालन करना होता था, जो ली ली को पसन्द नहीं था। इन सबसे ली ली का बेचारा पति भी बहुत खिन्न था।

ली ली ने अंत में एक विकल्प ढूंढ लिया और वह अपने पिता के पुराने दोस्त हुआंग के पास गई जोकि जड़ी बूटी बेचते थे। पूरी स्थिति को समझाते हुए उसने अनुरोध किया कि सास को कोई जहर दें ताकि समस्या को हमेशा के लिए समाप्त किया जा सके। हुआंग ने थोड़ी देर तक सोचा फिर कहा, "ली ली मैं तुम्हारी समस्या को समाप्त करने में मदद करूंगा लेकिन तुम्हें मेरी बात को ध्यान से सुनना होगा और जैसा मैं कहता हूं उसका पालन करना होगा।"

ली ली ने कहा, ''हां! श्री हुआंग आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूंगी। हुआंग पिछवाड़े के कमरे में गये और कुछ ही क्षणों में जड़ी बूटी के एक पैकेट के साथ वापिस आ गए। उन्होंने कहा, ली ली तुम सास से छुटकारा पाने के लिए कोई तीव्र कार्य करने वाले जहर का प्रयोग नहीं कर सकती क्योंकि इससे लोगों को शंका हो जाएगी अतः मैंने तुम्हारे लिए कई जड़ी बूटियों को मिलाकर एक जड़ी बूटी तैयार की है ताकि सास के शरीर पर जहर का असर धीरे–धीरे हो। तुम हर दूसरे दिन स्वादिष्ट भोजन के साथ थोड़ी सी जड़ी बूटी को मिलाकर उन्हें खाना परोसना। उनके मरने के बाद किसी को शंका न हो इसलिए आज के बाद उसके साथ कोई तर्क नहीं करना, उसकी आज्ञा का पालन करना और उससे एक रानी की तरह बर्ताब करना। ली ली बहुत खुश थी। वह हुआंग का धन्यवाद करते हुए घर वापस आ गई। कई सप्ताह और महीने बीत गए। ली ली हर दूसरे दिन अपनी सास को जड़ी बूटी मिला हुआ स्वादिष्ट भोजन देती। उसने अपने क्रोध पर नियंत्रण रखा। सास की आज्ञा का पालन किया और उससे अपनी माँ जैसा बर्ताव किया।

छह महीने बीत गए। पूरे घर की तस्वीर ही बदल गयी। ली ली को अपने क्रोध पर नियंत्रण करने का अभ्यास हो गया। उसने महसूस किया कि इस दौरान वह कभी भी पागल या परेशान नहीं होती थी। पिछले छह महीनों में सास से कभी भी तर्क नहीं किया और वह पहले से ज्यादा दयालु और सहज दिखने लगी। सास का व्यवहार भी ली ली के प्रति परिवर्तित हो गया। वह ली ली के साथ अपनी ही बेटी जैसा व्यवहार करने लगी। वह अपने दोस्तों को कहने लगी, ली ली मेरी सबसे अच्छी बहू है। ली ली और उसकी सास एक–दूसरे के साथ माँ और बेटी जैसा व्यवहार करने लगे। ली ली का पति यह सब देखकर बहुत खुश रहने लगा।

एक दिन पुनः ली ली हुआंग से मिलने आयी और मदद मांगी, कृपया सास को दिए जाने वाले जहर से उसे बचा लें क्योंकि वह एक अच्छी सासू माँ बन गई है। मैं भी उसे अपनी माँ जैसा प्यार करती हूँ। मैं नहीं चाहती कि मेरे द्वारा दिए गए जहर से उसकी मृत्यु हो। हुआंग मुस्कुराए और सिर हिलाते हुए बोले, ली ली इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। मैंने तुम्हें कभी कोई जहर दिया ही नहीं था। मैंने तुम्हें जो जड़ी बूटी दी थी वो वस्तुतः विटामिन था जो स्वास्थ्य को सुधारता है। जहर तो सिर्फ तुम्हारे दिमाग और सास के प्रति तुम्हारे बर्ताव में था। इन छः महीनों में जो प्यार तुमने उसे दिया है, उससे अब सब कुछ धुल गया है।

चीन में एक कहावत है जो व्यक्ति दूसरों को प्यार करता है, उसके बदले में उसे भी प्यार ही मिलता है। हो सकता है कि ईश्वर तुम्हारे रूप में दूसरे व्यक्ति को जिंदगी देने का काम कर रहा हो। सत्य ही कहा गया है कि ज्ञान का प्रकाश एक दूसरे को दिया जाए तो वह समाप्त नहीं होता।

प्यारा भारत देश हमारा

डी. एम. नंदनवार

प्यारा भारत देश हमारा
सब देशों से यह है न्यारा।
यहाँ मनाते अनेक त्योहार
खुशियां मस्ती आती बार–बार।

एक के बाद एक त्योहार
मिलते रहते हमें उपहार।
हँसी खुशी की रहती बौछार
खाने पीने की आती बहार।

नए–नए कपड़ों का उपहार
धोती कुर्ता चोली सलवार।
रंग–बिरंगे सदा बहार
देखो कितने सुन्दर त्योहार।

नृत्य कला में प्रथम स्थान
है अपना यह देश महान।
सजी सुन्दरियाँ कितना सम्मान
नृत्यकला हमारी अपनी पहचान।

पश्चिमी महाराष्ट्र अपनी शान
सुनहरे किस्सों पर मिला सम्मान
गणेश चतुर्थी मनाएं जी जान
मीठा मोदक मन भाए प्राण।

बुराई से बढ़कर अच्छाई मान
त्योहार दीपावली अपनी पहचान।
अन्याय मिटाकर दिया सम्मान
जलाया रावण बुराई मान।

आई बुराई आए बेईमान
इनके लिए लड़े गांधीजी महान।
प्यारा भारत अपनी शान
सबसे प्यारा यह देश महान।

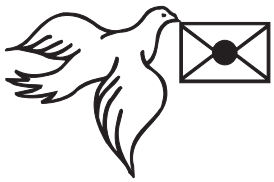

आपका पत्र मिला
आपका धन्यवाद

नियोजन संदेश का 18वां अंक उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों का एक अनुपम संग्रह है। उच्च अधिकारियों के ज्ञानवर्धक लेख उनके हिन्दी–प्रेम के द्योतक हैं। संपादकीय में हिन्दी को उत्तुंग शिखर पर विराजमान करने के लिए सुझाए गए कुछ ठोस कदम प्रशंसनीय हैं। संगठन के क्रियाकलापों से संबंधित लेख ''भारत–डच समझौता'' और ''शहरी विकास स्थायित्व'' उच्च श्रेणी के हैं। ''गृहस्थ जीवन, एक तपस्या'' और ''छोटी–छोटी मगर महत्वपूर्ण बातें'' जहां मनुष्य के लिए उपयोगी विषय हैं, वहीं ''सभ्य मानव'', ''सोच'' और ''नसीहत बाबुल की'' कविताएं आज के समाज का यथार्थ रूप चित्रित करती हैं। पत्रिका के व्यंग्य, कहानियां और संस्मरण भी सराहनीय हैं। राजभाषा संबंधी नीति–नियमों आदि की जानकारी महत्वपूर्ण है। इंद्रधनुषी रंगों से सजी पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

श्रीमती रेणु बाला मुद्गल, वरिष्ठ अनुवादक,
रक्षा संपदा महानिदेशालय
रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।

संगठन की गृहपत्रिका 'नियोजन संदेश' का 18वां अंक प्राप्त हुआ। मेरा सुझाव है कि पत्रिका के मुख पृष्ठ को अधिक आकर्षित बनाने के लिए कागज की क्वालिटी में सुधार के साथ चटक रंगों का प्रयोग किया जाए। प्रकाशित लेखों में चित्र, मैप तथा लेखकों के फोटोग्राफ को रंगीन किया जाए। मुझे श्री ललित मेहता द्वारा संकलित 'मेरी माउंट आबू यात्रा' सर्वश्रेष्ठ रचना लगी।

श्री आर. डी. मीना, अनुसंधान सहायक,
नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन, नई दिल्ली।

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका ''नियोजन संदेश'' के 18वें अंक में राजभाषा नियम, अधिनियम से संबंधित जानकारी के साथ अन्य विभिन्न विषयों पर बहुत ही उपयोगी सामग्री प्रकाशित की गई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी मनमोहक लगा। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई।

श्री महिमानन्द भट्ट, वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा),
केंद्रीय भंडारण निगम, हौजखास, नई दिल्ली।

'नियोजन संदेश' की अनुक्रमणिका में लेखक का छायाचित्र भी छापा जाना चाहिए। इसके साथ ही सहज विचारों को छोटे–छोटे ब्लाकों में डालकर पत्रिका को अधिक सुंदर बनाया जा सकता है। 18वें अंक में श्री आर. डी. मीना द्वारा 'विशेष आर्थिक क्षेत्र – एसईजेड का महत्व एवं उसका गठन' विषयक लेख सराहनीय लगा।

श्री तरसिसियुस टेटे, अनुसंधान सहायक,
नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन, नई दिल्ली

नियोजन संदेश पत्रिका का अठाहरवाँ अंक 2013 प्राप्त हुआ। इसमें अनेक विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई है, ''पवित्र नदियों में बढ़ता प्रदूषण'' में लेखक ने पवित्र नदियों में बढ़ते प्रदूषण के बारे में काफी सारगर्भित लेख लिखकर समाज को इससे होने वाले दुष्परिणामों के बारे में अवगत कराया है। ''लुप्त होती गौरया, गायब होता गरीब'' लेख में गरीब, गौरेया और गधे को एक साथ गरीबी का समायोजक बताया है। प्रस्तुत पत्रिका में नियोजन के संबंध में काफी कुछ लिखा गया है जो सराहनीय है।

डॉ. राजेन्द्र सिंह कठैत,
अनुसंधान अधिकारी,
दिल्ली विकास प्राधिकरण, विकास मीनार, नई दिल्ली–110002

जीवन–सूत्र

मोर नाचते हुए भी रोता है
और हंस मरते हुए भी गाता है
ये दुनिया का फंडा है कि
दुख वाली रात नहीं जाती
और खुशी वाली रात कौन सोता है।

****

अपने जीवन में चार चीजें कभी न तोड़ें, विश्वास, संबंध, वायदा और दिल क्योंकि जब ये टूटते है तो आवाज नहीं होती लेकिन दर्द बहुत होता है।

****

जिंदगी तस्वीर भी है और तकदीर भी,
फर्क सिर्फ रंगों का है।
मनचाहे रंगों से बनें तो तस्वीर,
और अनचाहे रंगों से बनें तो तकदीर।